

अरब की कथाएँ





अरब की कथाएँ

अरब की कथाएँ में लघु, मनोरंजक कहानियों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। ये कहानियाँ न सिर्फ बच्चों बल्कि बड़ों की कल्पनाशक्ति में भी वृद्धि करती है। प्रत्येक कहानी रहस्य-रोमांच से ओत प्रोत है। कहानियाँ शुरू से लेकर अंत तक पाठकों को बाँधे रखती हैं।

अलीबाबा और चालीस चोर, अलादीन का जादुई चिराग और छोटा कुबड़ा जैसी प्रचलित कहानियों को इसमें मनोरंजक व सरल ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

कहानियों की भाषा सरल है और रंगीन, आकर्षक चित्र कहानियों की सजीवता में वृद्धि करते हैं।



अरब की कथाएँ





टिनी टॉट पब्लिकेशन्स
भारत

अरब की कथाएँ

संस्करण : 2008

सम्पादन :

श्याम दुआ

ISBN : 81-304-0620-9

प्रकाशक

टिनी टॉट पब्लिकेशन्स

235, जागृति एन्कलेव

विकास मार्ग

दिल्ली : 110092 (भारत)

फोन : 22167314, 22163582

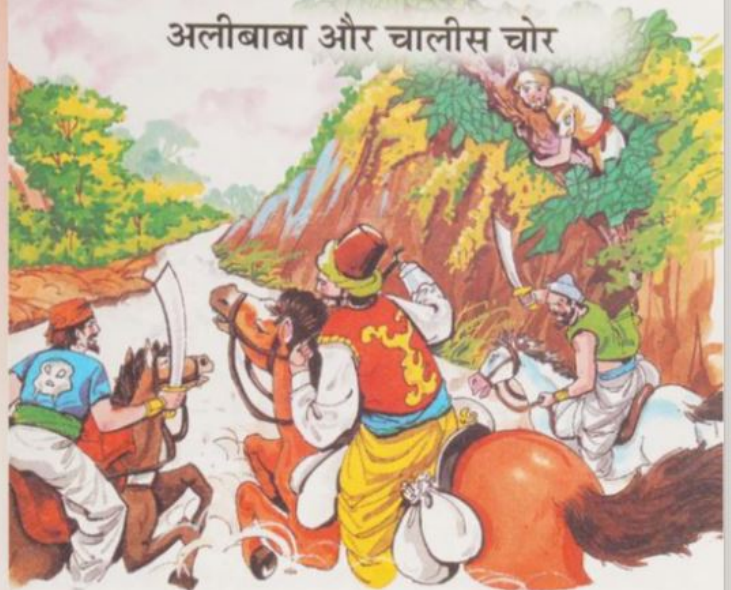
फैक्स : 91-11-22143023

चित्रांकन:

बुकमार्क

तालिका

अलीबाबा और चालीस चोर



बहुत समय पहले पर्शिया में अलीबाबा और कासिम नाम के दो भाई रहते थे। जहाँ कासिम अमीर था और उसका जीवन आराम और सुखपूर्वक बीत रहा था, वहीं अलीबाबा बहुत ही गरीब था और उसका जीवन कष्टमय था। रोज़ी-रोटी के लिए उसे अथक परिश्रम करना पड़ता था। अलीबाबा रोज जंगल जाकर लकड़ियाँ काटता और शहर ले जाकर उन्हें बेच आता। इसी तरह से उसकी आजीविका चल रही थी।

एक दिन रोज़ की तरह अलीबाबा जंगल में लकड़ियाँ काटने गया। उसने अभी लकड़ी काटना शुरू किया ही था कि तभी उसे दूर से आती घोड़ों के टापों की आवाज़ें सुनाई दीं। उसने नज़रें घुमाईं तो उसे घोड़ों पर सवार डाकुओं का एक काफिला आता हुआ दिखाई दिया। डर के मारे वह जल्दी से पेड़ की टहनियों की ओट में छिप गया।

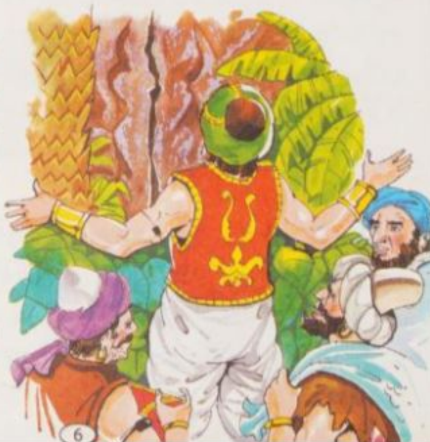
डाकू जल्दी ही अलीबाबा के समीप पहुँच गए। वे सभी अपने-अपने घोड़े से नीचे उतर आए। अलीबाबा ने पेड़ की टहनियों की ओट से झाँककर देखा कि चालीस डाकुओं में से एक डाकू आगे बढ़ा। वह डाकुओं का सरदार था। सरदार के पीछे-पीछे शेष डाकू भी आगे बढ़ चले। चार कदम की दूरी पर एक चट्टान के आगे डाकुओं का सरदार रुक गया। उसने चट्टान के आगे खड़े होकर जोर से कहा, ''खुल जा सिमसिम!'' सरदार के ऐसा कहते ही एक तेज़ गर्जना के साथ चट्टान एक ओर खिसक गई।

चट्टान के खिसकते ही सभी डाकू अंदर प्रवेश कर गए। अंदर एक गुफा थी। डाकुओं के अंदर जाते ही चट्टान पुन: बंद हो गई। कुद देर गुफा के अंदर रहने के बाद डाकू बाहर आ गए। अलीबाबा दम साधे पूरे घटनाक्रम पर नज़र गड़ाए हुए था। डाकुओं के सरदार ने बाहर आते ही कहा, ''बंद हो जा सिमसिम!'' ऐसा कहते ही गुफा का दरवाजा पुन: बंद हो गया।

उसके बाद सभी डाकू अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर वहाँ से चले गए।

डाकुओं के चले जाने के कुछ देर बाद अलीबाबा पेड़ से नीचे उतर आया। फिर साहस बटोरकर वह चट्टान के पास गया और जोर से बोला, ''खुल जा सिमसिम!''

अलीबाबा के ऐसा कहते ही चट्टान एक ओर खिसक गई और अलीबाबा ने अंदर प्रवेश किया। गुफा के अंदर जाकर अलीबाबा की आँखें फटी की फटी रह गईं। अंदर सोने-चाँदी, हीरे-जवाहरातों से भरे बड़े-बड़े संदूक रखे हुए थे। इतनी सारी दौलत अलीबाबा

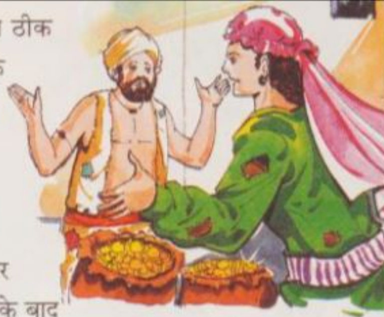




ने पहले कभी नहीं देखी थी। कुछ देर तो वह भौंचक्का-सा उन संदूकों को देखता रहा, फिर अपने आप को संभालते हुए उसने अपनी जेबों और एक थैले में सोने की अशर्फियां और हीरे-जवाहरात भर लिए। उसने हीरे-जवाहरातों से भरा वह थैला उठाया और तुरंत गुफा से बाहर निकल आया। बाहर निकलकर उसने 'बंद हो जा सिमसिम' कहा तो गुफा का दरवाजा बंद हो गया। उसने वह थैला अपने गधे की पीठ पर रखकर उसके ऊपर से लकड़ियों का एक गट्ठर रख दिया, जिससे किसी को किसी प्रकार का कोई शक न हो और सभी ये समझें कि वह अन्य दिनों की तरह आज भी लकड़ियाँ काटकर ला रहा है।

इसके बाद अलीबाबा तेजी से अपने घर की ओर चल पड़ा। घर पहुँचकर उसने पत्नी को पूरी घटना बताई। ये सुनकर उसकी पत्नी बहुत खुश हुई। वह बोली, ''लगता है अल्लाह को हमारे ऊपर तरस आ गया। अब हमारे दिन फिर जाएंगे और हम आराम व सुकून की जिदंगी बिता सकेंगे।'' फिर वह सोने की अशर्फियों से भरा थैला देखकर बोली, ''इन्हें गिनने में तो बहुत वक्त लग जाएगा, इसलिए हम इन्हें तौलकर इनका वज़न माप लेते हैं।''

ये सुनकर अलीबाबा बोला, "तुम ठीक कह रही हो। परंतु इन्हें तौलने के लिए हमारे पास तराज़ू कहाँ है? बिना तराज़ू हम इन्हें तौलेंगे कैसे?"



पत्नी बोली, "आप फिक्र न करो। मैं अभी आपके भाई कासिम के घर से तराज़ू माँगकर ले आती हूँ। उसके बाद इन अशर्फियों का वज़न कर लेंगे।"

यह कहकर वह तुरंत कासिम के घर जा पहुँची। वहाँ उसने कासिम की पत्नी से तराज़ू माँगा। कासिम की पत्नी ने सोचा, 'अरे! इन गरीबों के पास ऐसा क्या आ गया, जो इन्हें तौलने की आवश्यकता पड़ गई। जरूर कुछ-न-कुछ गड़बड़ है।' ये सोचकर उसने तराज़ू की तली पर गोंद लगाकर अलीबाबा की पत्नी को दे दिया, ताकि तौली गई वस्तु तराज़ू पर चिपक जाए और वह जान सके कि अलीबाबा ने क्या तौला है।

अलीबाबा और उसकी पत्नी इस बात से अंजान थे। उन्होंने तराज़ू से सभी सोने की अशर्फियाँ तौल लीं और तराज़ू लौटा दिया। एक अशर्फी तराज़ू पर ही चिपकी रह गई। जब कासिम की पत्नी ने तराज़ू पर सोने की अशर्फी चिपकी देखी तो वह चकित रह गई। वह सीधे कासिम के पास गई और बोली, "अरे! आपको कुछ पता भी है। आपका भाई सोने की अशर्फियाँ तौल-तौलकर अमीर हो रहा है और आप बेखबर बैठे हैं। जरा जाकर देखिए तो, अलीबाबा के हाथ इतनी दौलत कहाँ से लगी?"



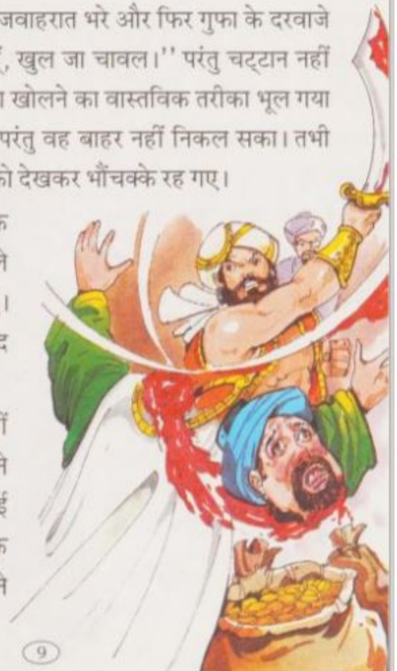
पत्नी की बात सुनकर कासिम तुरंत

अलीबाबा के घर गया और उसने सोने की अशर्फियों के बारे में पूछा। अलीबाबा ने भलमनसाहत से कासिम को पूरी बात बता दी।

अपार धन-दौलत की बात सुनकर कासिम के मन में लालच आ गया। वह अलीबाबा से उस स्थान का ठीक-ठीक पता और गुफा की चट्टान खुलने का तरीका पूछकर घर आ गया। उसने अगले दिन वहाँ जाने का निश्चय किया। अगले दिन सुबह तड़के ही वह बड़े-बड़े थैलों के साथ अपने घोड़े पर सवार होकर उस गुफा के बाहर जा पहुँचा। गुफा के बाहर खड़े होकर उसने जोर से चिल्लाकर कहा, "खुल जा सिमसिम!" और चट्टान खुल गई।

चट्टान के खुलते ही कासिम ने गुफा के अंदर प्रवेश किया। गुफा के अंदर अपार धन-दौलत देखकर वह चकित रह गया। उसने जल्दी-जल्दी अपने साथ लाए थैलों में सोने की अशर्फियाँ, हीरे-जवाहरात भरे और फिर गुफा के दरवाजे पर पहुँचकर कहा, "खुल जा गेहूँ, खुल जा चावल।" परंतु चट्टान नहीं खुली। वह अति उत्साह में दरवाजा खोलने का वास्तविक तरीका भूल गया था। उसने हजार नाम बोल डाले, परंतु वह बाहर नहीं निकल सका। तभी वहाँ पर डाकू आ गए। वे कासिम को देखकर भौंचक्के रह गए।

डाकुओं के सरदार ने कासिम के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डाले और गुफा की दीवारों पर टाँग दिए। फिर थोड़ी देर वहाँ रुकने के बाद डाकू गुफा से चले गए।



उधर जब कासिम शाम तक घर नहीं लौटा तो उसकी पत्नी को चिंता होने लगी। वह अलीबाबा के पास गई और बोली, "भाईजान! आपके भाई साहब सुबह ही खज़ाना लेने

गए थे। परंतु अभी तक लौटकर नहीं आए। मुझे उनकी बहुत चिंता हो रही है।''

अलीबाबा ने कहा, ''भाभीजान! आप चिंता न करें, मैं अभी कासिम की तलाश में जाता हूँ।''

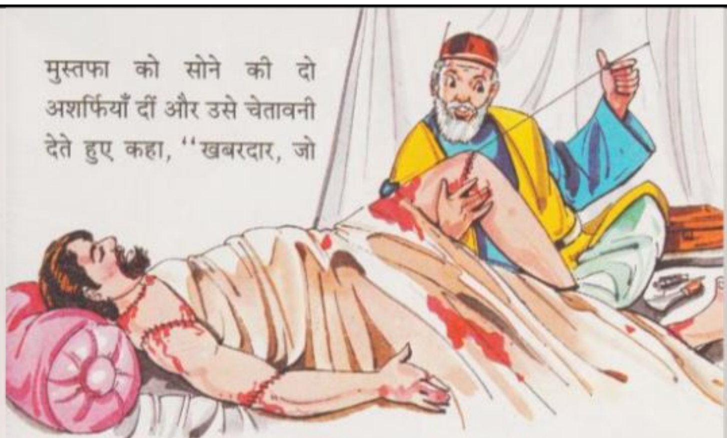
ये कहकर अलीबाबा जंगल की ओर चल दिया। गुफा के पास पहुँचकर उसने 'खुल जा सिमसिम' कहा। उसके ऐसा कहते ही दरवाजा खुल गया। उसने गुफा के अंदर प्रवेश किया। वहाँ दीवारों पर अपने भाई के शरीर के टुकड़े देखकर वह स्तब्ध रह गया। उसने अपने भाई के शरीर के टुकड़े समेटे और उन्हें लेकर सीधे कासिम के घर गया। उसे कासिम की नौकरानी मरजीना घर के बाहर ही मिल गई। उसने मरजीना को उसके मालिक की मौत का समाचार दिया और उससे कहा कि वह इस बारे में किसी को न बताए।

मरजीना चालाक थी। अगले दिन सुबह उसने अपने मालिक के बीमार होने की अफवाह फैला दी और उसके लिए दवा लाने के बहाने मुस्तफा नाम के एक कुशल मोची के पास गई। उसने मुस्तफा को अपने मालिक के शरीर के टुकड़े सिलने के लिए तैयार कर लिया। वह मुस्तफा की आँखों पर पट्टी बाँधकर उसे अपने घर ले आई। मुस्तफा ने बहुत ही कुशलता से कासिम के शरीर के टुकड़ों को सिल दिया। अब कासिम के शरीर को देखकर कोई ये नहीं कह सकता था कि उसके शरीर को जोड़ा गया है।



मरजीना ने इस काम के लिए

मुस्तफा को सोने की दो अशर्फियाँ दीं और उसे चेतावनी देते हुए कहा, ''खबरदार, जो



तुमने यह बात किसी से कही।'' मुस्तफा ने मरजीना से वादा किया कि वह इस बारे में किसी से कुछ नहीं कहेगा। उसके बाद मरजीना मुस्तफा की आँखों पर पट्टी बाँधकर उसे जहाँ से लाई थी वहीं वापस छोड़ आई।

अगले दिन मरजीना ने सबको ये बताया कि उसके मालिक की बीमारी से मौत हो गई है। उसके बाद कासिम को दफना दिया गया। कासिम की मृत्यु के बाद कासिम की पत्नी और मरजीना अलीबाबा के घर पर ही रहने लगीं।

एक दिन जब डाकू लूटपाट की गई धन-दौलत रखने के लिए गुफा में आए तो कासिम का शरीर वहाँ न पाकर परेशान हो गए। डाकुओं का सरदार गुस्से से तमतमा उठा। वह क्रोध से चिल्लाते हुए बोला, ''हमारा राज उस मृत व्यक्ति के अलावा कोई और भी जानता है। वही व्यक्ति उसकी लाश को लेकर गया है। मुझे उस व्यक्ति का पता चाहिए।''

उसने यह जिम्मेदारी अपने दल के एक डाकू को सौंप दी। सरदार का आदेश पाकर वह डाकू एक व्यापारी का वेश बनाकर शहर जा पहुँचा। शहर में घुसते ही उसे सबसे पहले मुस्तफा मोची मिला। मुस्तफा सड़क के किनारे बैठकर चप्पलें सिल रहा था। डाकू मुस्तफा के पास गया और उससे पूछा, ''अरे बाबा! तुम इतने



बूढ़े होकर भी इतना बारीक काम कैसे कर लेते हो? इससे तुम्हारी आँखें तो बड़ी दुखती होंगी?''

मुस्तफा ने धीरे से जवाब दिया, ''अभी मेरी आँखें एकदम ठीक हैं। मुझे एकदम साफ-साफ दिखाई देता है। तुम्हें एक राज की बात बताऊँ, परंतु इस बारे में किसी से कहना मत।''

डाकू ने उत्सुकतापूर्वक कहा, ''हाँ-हाँ बाबा, बताओ। मैं भला किसी को क्यों बताऊँगा?''

मुस्तफा ने कहा, ''अभी कुछ दिन पहले ही मैंने एक शरीर को सिला है। इस कार्य के लिए मुझे सोने की दो अशर्फियाँ मिली थीं।''

डाकू तुरंत समझ गया कि मोची उसी व्यक्ति के शरीर को सिलने की बात कर रहा है, जिसे उसके सरदार ने मारा था। इसलिए वह बोला, ''बाबा! क्या तुम उस घर का पता जानते हो? मुझे उस घर तक ले चलो। इसके बदले में मैं तुम्हें सोने की दो अशर्फियाँ दूँगा।''

ये सुनकर मुस्तफा खुश हो गया। वह बोला, ''मैं तुम्हें वहाँ ले जा सकता हूँ, परंतु

मुझे वह घर ढूँढ़ने में थोड़ा समय लग सकता है। क्योंकि मुझे उस घर तक आँखों पर पट्टी बाँधकर ले जाया गया था।''

''ठीक है। पहले चलो तो।'' डाकू ने कहा।

मुस्तफा डाकू को अपने साथ लेकर चल पड़ा। थोड़ी देर तक इधर-उधर भटकने के बाद मुस्तफा ने सही घर पहचान लिया। डाकू ने मुस्तफा को दो अशर्फियाँ देकर विदा किया और घर पर सफेद खड़िया से निशान बना दिया। निशान बनाने के बाद वह तुरंत अपने सरदार के पास लौट गया।

तभी मरजीना किसी काम से घर से बाहर आई। उसने अपने घर पर खड़िया से निशान बना देखा तो उसे कुछ संदेह हुआ। उसने तुरंत वैसे ही निशान आसपास के सारे घरों पर भी बना दिए। उधर डाकू ने अपने सरदार को प्रसन्नतापूर्वक बताते हुए कहा, ''सरदार! मैंने उस आदमी के घर का पता लगा लिया है और उसकी पहचान करने के लिए मैं उस पर सफेद खड़िया से निशान भी बना आया हूँ। अब हम उस आदमी को जरूर पकड़ लेंगे।''

सरदार ने कहा, ''ठीक है। हम आज रात को वहाँ चलेंगे।'' रात के समय दोनों वहाँ पहुँचे। लेकिन जब वे वहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि सभी दरवाजों पर सफेद खड़िया के एक जैसे निशान बने हुए हैं। ये देखकर सरदार को बहुत गुस्सा आया।



और वह वापस चला आया। उसने उस डाकू का सिर काट दिया। फिर उसने दूसरे डाकू को भेजा। दूसरा डाकू भी मुस्तफा की सहायता से उस घर तक पहुँच गया और घर पर लाल रंग से निशान लगाकर वापस चला आया। सौभाग्यवश उस दिन भी मरजीना ने वह निशान देख लिया और आसपास के सभी घरों पर वैसे ही निशान बना दिए। जब सरदार उस डाकू के साथ पहुँचा तो सभी घरों पर एक जैसे निशान देखकर अपना आपा खो बैठा और उसने डाकू को भी मौत के घाट उतार दिया। अब सरदार ने स्वयं उस घर का पता लगाने का निर्णय लिया। सरदार भी मुस्तफा मोची की सहायता से उस घर तक पहुँच गया। उसने उस घर को अच्छी तरह से पहचान लिया।

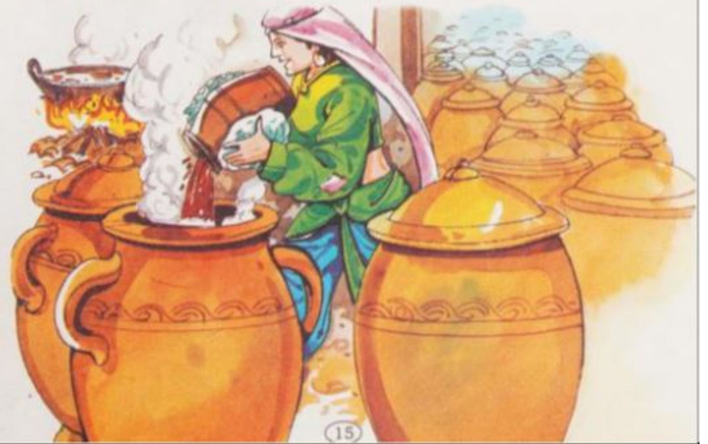
वह वहाँ से सीधे बाज़ार गया। उसने बाज़ार से उन्नीस गधे और अड़तीस बड़े-बड़े पीपे खरीदे और पीपों में अपने साथियों को बैठा दिया। एक पीपे में उसने तेल भरा और फिर उन्हें गधों पर लादकर शहर की ओर चल दिया। वह तेल का सौदागर बनकर अलीबाबा के घर पहुँचा। अलीबाबा उसे घर के बाहर ही मिल गया। उसने अलीबाबा से कहा, ''मैं एक तेल का सौदागर हूँ। मुझे दूसरे शहर जाना है, परंतु अभी बहुत देर हो गई है। यदि आज रात आप मुझे अपने घर में ठहरने की इजाज़त दे दें तो मैं आपका एहसानमंद रहूँगा।''



अलीबाबा ने उसे अपने घर में ठहरने की इजाज़त दे दी। रात को खाना खाने के बाद जब सभी सोने चले गए तो डाकुओं का सरदार एक-एक पीपे के पास गया और बोला, ''आधी रात को जब सब गहरी नींद में सो रहे होंगे, तब हम उन पर हमला कर देंगे। हमला करने का उचित अवसर जानकर मैं तुम लोगों को पत्थर फेंककर इशारा करूँगा, तुम लोग समझ जाना।'' ये कहकर वह सोने चला गया।

रात में मरजीना को तेल की आवश्यकता पड़ी। उसने सोचा, 'इतनी रात को तेल कहाँ से लाऊँ। चलो तेल के सौदागर के पीपों से ही थोड़ा तेल ले लेती हूँ।' ये सोचकर उसने जैसे ही एक पीपे का ढक्कन खोला तो अंदर से आवाज आई, ''सरदार! क्या हम बाहर निकल आएं?''

ये सुनकर मरजीना हतप्रभ रह गई। उसने 'नहीं' कह दिया। एक-एक कर उसने सभी पीपों के ढक्कन हटाए। सभी ने उससे एक ही सवाल पूछा। उसने सभी को 'न' में जवाब दिया। आखिरी पीपे में तेल था। मरजीना की समझ में पूरी बात आ गई। उसने आखिरी पीपे से कड़ाही भर तेल लिया और उसे खूब गर्म किया। फिर गर्म तेल को उसने एक-एक कर सभी पीपों में डाल दिया। गर्म तेल से जलकर सभी चोर मर गए।



उसके बाद मरजीना सोने चली गई। आधी रात को डाकुओं का सरदार उठा और उसने सभी पीपों पर पत्थर मारा। परंतु पीपों में से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह बारी-बारी सभी पीपों के पास गया। फिर जब उसने एक-एक पीपे का ढक्कन खोलकर देखा तो अपने सभी साथियों को मृत देखकर दंग रह गया। वह तुरंत वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

अगले दिन सुबह तेल के सौदागर को घर में न देखकर अलीबाबा परेशान हो गया। तब मरजीना ने उसे रात की पूरी घटना कह सुनाई। मरजीना ने अलीबाबा को पीपों में मृत चोर भी दिखाए। अलीबाबा मरजीना की बुद्धिमानी देखकर बहुत खुश हुआ। उसने मरजीना का शुक्रिया अदा किया। फिर उसने और मरजीना ने मिलकर चोरों के मृत शरीरों को अपने घर के पीछे स्थित बगीचे में दफना दिया।

उधर डाकुओं का सरदार अपनी हार को बर्दाश्त नहीं कर पार रहा था। उसने सोचा, ''मैं एक शक्तिशाली डाकू होकर कैसे हार सकता हूँ। मुझे अलीबाबा को सबक सिखाना ही पड़ेगा। मैं जब तक अलीबाबा को मार नहीं दूँगा, तब तक मुझे चैन नहीं मिलेगा। इस बार मैं उसे नहीं छोड़ूँगा।''

ये सोचकर डाकुओं का सरदार इस बार एक कपड़े का व्यापारी बनकर अलीबाबा के घर के सामने रहने लगा। उसने अलीबाबा के बेटे से दोस्ती कर ली। शीघ्र ही वे दोनों अच्छे दोस्त बन गए।



एक दिन अलीबाबा के बेटे ने उसे अपने घर भोजन पर बुलाया। इस पर डाकुओं का सरदार बोला, ''दोस्त! मैं तुम्हारे घर खाने पर तो आ जाऊँगा, परंतु मैं नमक नहीं खाऊँगा। तुम्हें

बिना नमक का भोजन बनाने में कष्ट होगा।''

अलीबाबा के बेटे ने कहा,''नहीं दोस्त! इसमें कष्ट कैसा? तुम्हारे लिए मीठे व्यंजन बन जाएंगे।''

घर आकर अलीबाबा के बेटे ने मरजीना को मेहमान के लिए बिना नमक का भोजन बनाने को कहा। ये सुनकर मरजीना को हैरानी हुई कि आखिर मेहमान नमक क्यों नहीं खाना चाहता। परंतु वह बिना कुछ पूछे ही व्यंजन बनाने में व्यस्त हो गई। रात के समय डाकुओं का सरदार अलीबाबा के घर भोजन पर आया।

मरजीना ने उसे भोजन परोसा। भोजन परोसते समय उसकी नज़र डाकुओं के सरदार द्वारा कपड़ों के अंदर छुपाए गए खंजर पर पड़ी। उसने कुछ सोचकर अलीबाबा से कहा, ''मालिक! मैं मेहमान के मनोरंजन के लिए नृत्य करना चाहती हूँ। यदि आप आज्ञा दें तो मैं नृत्य की पोशाक में तैयार होकर आऊँ।''

अलीबाबा ने सहमति जता दी। थोड़ी ही देर में मरजीना तैयार होकर आ गई। उसने अपने हाथ में एक खंजर लिया हुआ था। वह बहुत देर तक नृत्य करती रही। फिर उचित अवसर मिलते ही





उसने डाकुओं के सरदार के सीने में खंजर भोंक दिया। सरदार की तुरंत मृत्यु हो गई।

ये देखकर अलीबाबा ने गुस्से से कहा, ''मरजीना! ये तुमने क्या किया? तुमने घर आए मेहमान को मार डाला!''

मरजीना ने वेश बदलकर आए डाकुओं के सरदार की नकली लंबी दाढ़ी को हटाते हुए कहा, ''मालिक! ये हमारा दोस्त नहीं, बल्कि दुश्मन था। ये वेश बदलकर आपको और छोटे मालिक को मारने आया था। ये चालीस चोरों का सरदार था। इसने अपने कपड़ों के अंदर खंजर छुपाया हुआ था, जिसे मैंने देख लिया।'' यह कहकर उसने डाकुओं के सरदार द्वारा छुपाया गया खंजर अलीबाबा को दिखाया। अलीबाबा ने अपनी और अपने पुत्र की जान बचाने के लिए एक बार फिर मरजीना को धन्यवाद दिया। उसने मरजीना की बुद्धिमानी की प्रशंसा करते हुए कहा, ''मरजीना आज से तुम हमारी सेवक नहीं हो। मैं तुम्हें सेवक के कार्य से मुक्त कर, अपनी बहू बनाना चाहता हूँ।''

मरजीना अलीबाबा के बेटे से शादी करने के लिए राजी हो गई। फिर जल्दी ही मरजीना और अलीबाबा के बेटे की शादी हो गई। अलीबाबा और उसका बेटा धीरे-धीरे गुफा से सारी धन-दौलत घर ले आए। अब वे शहर के सबसे अमीर व्यक्ति हो गए थे। ये धन उनकी कई पीढ़ियों के लिए पर्याप्त था।

अलादीन और जादुई चिराग

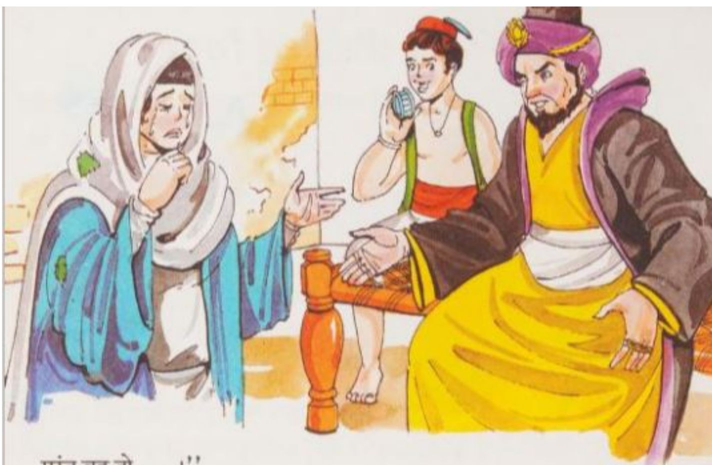


बहुत समय पहले की बात है। पर्शिया में मुस्तफा नाम का एक गरीब व्यक्ति रहता था। उसके बेटे का नाम अलादीन था। अलादीन बहुत ही लापरवाह, मनमौजी एवं आलसी लड़का था। वह दिनभर शहर की गलियों में खेलता रहता और अपनी माँ की एक नहीं सुनता था। उसके पिता उससे बहुत परेशान थे और एक दिन इसी सदमे से उनकी मौत हो गई। अलादीन की माँ ने सोचा कि अब अलादीन सुधर जाएगा, परंतु वह नहीं सुधरा और पहले की तरह ही आलसी बना रहा। एक दिन वह अपने घर से थोड़ी दूर एक गली में खेल रहा था। तभी एक अनजान व्यक्ति ने उससे मुस्तफा के घर का पता पूछा। अलादीन ने कहा, ''मैं ही मुस्तफा का बेटा हूँ। परंतु उनका तो कुछ वर्ष पहले ही इंतकाल हो गया। आपको उनसे क्या काम है?''

वह अनजान व्यक्ति अफ्रीका का मशहूर जादूगर था। उसने अलादीन का माथा चूमते हुए कहा, ''बेटा! मैं तुम्हारा चाचा हूँ। तुम्हारे पिता का भाई। जाओ, जाकर अपनी अम्मी को मेरे आने की खबर दो। मैं अभी थोड़ी देर में आता हूँ।''



ये सुनकर अलादीन दौड़ता हुआ अपने घर गया और अपनी माँ को चाचा के बारे में बताया। उसकी माँ चकित होकर बोली, ''बेटा! तुम्हारे अब्बा का एक भाई तो था, परंतु मैं सोचती थी कि उसका इंतकाल हो चुका है।



परंतु वह तो......।"

उसने अलादीन को अपने चाचा को बुला लाने के लिए कहा। अलादीन भागकर गया और अपने चाचा को बुला लाया। वह जादूगर उनके लिए बहुत सारे कीमती उपहार लेकर आया था। अलादीन उपहार पाकर बहुत खुश हुआ। जादूगर अलादीन की अम्मी से बोला, "भाभीजान! आप मुझे देखकर सोच रही होंगी कि मैं अचानक कहाँ से आ गया। दरअसल मैं कई साल पहले ही ये देश छोड़कर चला गया था। फिर मुझे भाईजान के इंतकाल की बात पता चली। भाईजान के इंतकाल की बात सुनकर मुझे भारी दुख हुआ।"

अलादीन की अम्मी बोली, "अलादीन के अब्बा के जाने के बाद अब अलादीन ही मेरा सहारा है। परंतु ये लड़का निकम्मा, निठल्ला-सा सारा दिन खेलता रहता है।" ये कहकर वह रोने लगी।

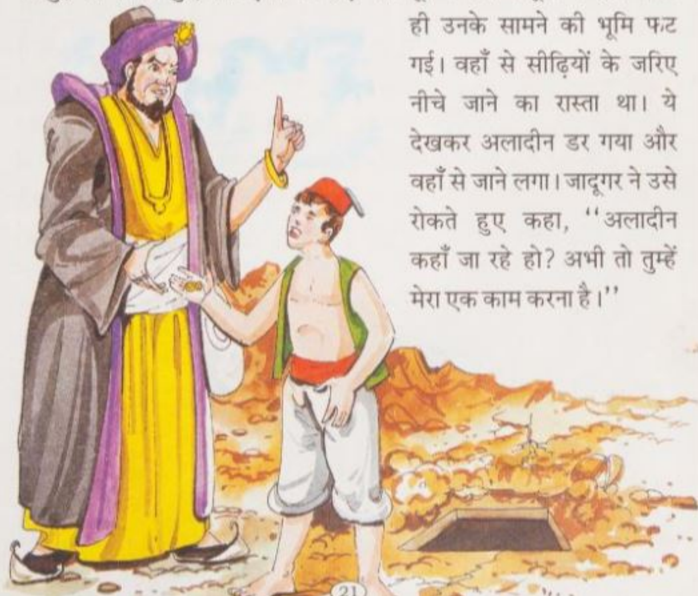
जादूगर ने उसे समझाते हुए कहा, "अब मैं आ गया हूँ। आपको इसकी चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अलादीन को अवश्य ही किसी न किसी काम-धंधे में लगा दूँगा।"

अगले दिन जादूगर अलादीन को अपने साथ शहर से दूर घुमाने ले गया। उसने

अलादीन को सुंदर-सुंदर बगीचे, स्थान आदि दिखाए। उन्होंने एक खूबसूरत फव्वारे के नीचे बैठकर अच्छे-अच्छे व्यंजन खाए। खाकर थोड़ी देर आराम करने के बाद वे पुनः घूमने निकल गए। वे दोनों घूमते-घूमते एक पहाड़ी पर पहुँच गए। अलादीन बहुत थक गया था, इसलिए वह जादूगर से बोला, "चचाजान! मैं बहुत थक गया हूँ। अब एक कदम भी आगे चलना मेरे लिए मुश्किल है। चलिए, वापस घर चलते हैं।"

जादूगर मुस्कुराते हुए बोला, "बेटा! हम थोड़ी देर यहीं पर रुकते हैं। मैं तुम्हें एक जादू दिखाता हूँ। लेकिन पहले तुम जलाने के लिए कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी कर लो।"

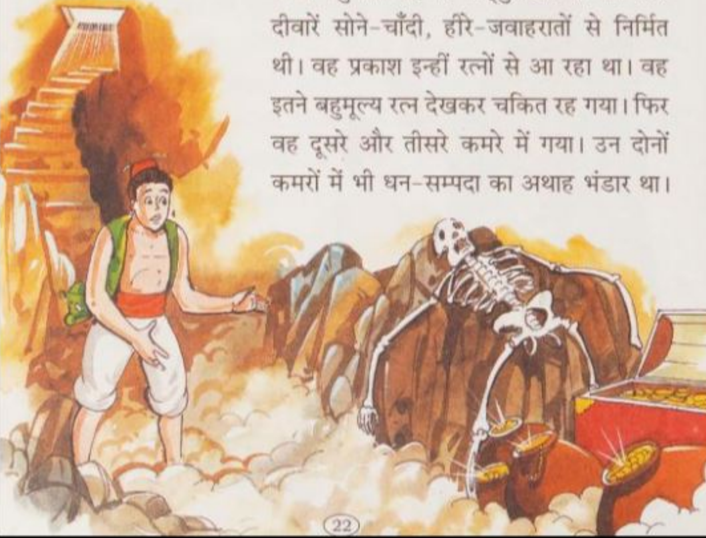
अलादीन ने आस-पास पड़ी सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लीं। फिर जादूगर ने जादुई मंत्र बोलते हुए लकड़ियों पर थोड़ा-सा चूर्ण फेंका। जादूगर के ऐसा करते ही उनके सामने की भूमि फट गई। वहाँ से सीढ़ियों के जरिए नीचे जाने का रास्ता था। ये देखकर अलादीन डर गया और वहाँ से जाने लगा। जादूगर ने उसे रोकते हुए कहा, "अलादीन कहाँ जा रहे हो? अभी तो तुम्हें मेरा एक काम करना है।"



अलादीन ने डरते हुए पूछा, ''कौन-सा काम?''

जादूगर बोला, ''अलादीन! इन सीढ़ियों के नीचे खजाना छुपा हुआ है। वह सारा खजाना तुम्हारा है। इसलिए तुम डरो नहीं। तुम इन सीढ़ियों से नीचे जाओगे तो तुम्हें विशाल कमरे दिखाई देंगे। उन कमरों तक पहुँचने से पहले तुम रास्ते की किसी वस्तु को छूना मत, वरना तुरंत तुम्हारी मौत हो जाएगी। उन कमरों में बहुमूल्य रत्न हैं। कमरों के बाद एक बगीचा आएगा। वहीं कहीं पर एक चिराग रखा होगा। तुम्हें वह चिराग ढूँढ़कर लाना होगा।'' ये कहकर उसने अपनी अँगुली से अँगूठी उतारकर अलादीन को देते हुए कहा, ''ये अँगूठी पहन लो। ये तुम्हारी रक्षा करेगी।''

अलादीन ने जादूगर से अँगूठी लेकर अपनी अँगुली में पहन ली और वह सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा। वहाँ पर घुप्प अंधेरा था। वह जैसे-जैसे नीचे उतरता गया उसे हल्का-हल्का प्रकाश दिखाई देने लगा। वह सीढ़ियों से उतरकर पहले कमरे में जा पहुँचा। वहाँ पर अद्‌भुत प्रकाश था। सारी दीवारें सोने-चाँदी, हीरे-जवाहरातों से निर्मित थी। वह प्रकाश इन्हीं रत्नों से आ रहा था। वह इतने बहुमूल्य रत्न देखकर चकित रह गया। फिर वह दूसरे और तीसरे कमरे में गया। उन दोनों कमरों में भी धन-सम्पदा का अथाह भंडार था।





अलादीन को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था।

तीनों कमरों से होता हुआ वह बगीचे में जा पहुँचा। बगीचे में पेड़ों पर फलों के रूप में रत्न-जवाहरात आदि लगे हुए थे।

अलादीन ने जादूगर के निर्देशानुसार वहाँ से कुछ फल तोड़े और उन्हें अपनी जेबों में रख लिया। तभी उसकी नज़र पीतल के चिराग पर पड़ी। उसने वह चिराग उठा लिया और मन ही मन सोचा, 'यहाँ पर इतनी अथाह धन-सम्पदा है। चचाजान ने धन-सम्पदा को छोड़कर पुराने घिसे-पिटे चिराग को लाने के लिए कहा। मुझे तो चचाजान बेवकूफ जान पड़ते हैं।'

ये सोचकर वह चिराग हाथ में थामे सीढ़ियाँ चढ़कर बाहर आने लगा। वह बाहर आने ही वाला था कि जादूगर ने सीढ़ियों से झाँककर कहा, ''अलादीन! जादुई चिराग मुझे दे दो।''



अलादीन ने कहा, ''मैं बाहर आकर ही आपको जादुई चिराग दूँगा।''

अलादीन का इंकार सुनकर जादूगर को गुस्सा आ गया। वह चिल्लाकर बोला, ''अलादीन, मैं तुमसे आखिरी बार कह रहा हूँ कि ये चिराग मुझे दे दो, वरना तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा।'' अलादीन ने अपनी बात दोहरा दी, ''पहले मुझे बाहर निकालो।''

जादूगर गुस्से से अपना आपा खो बैठा और उसने पास पड़ी लकड़ियों पर एक बार फिर चूर्ण डाला। ऐसा करते ही भूमि बंद हो गई और

अलादीन अंदर ही बंद हो गया। वह चिल्लाते हुए बोला, ''चचाजान! मुझे बाहर निकालो। मुझे डर लग रहा है। मुझे बाहर निकालो।''

परंतु उसकी आवाज अंदर ही दबकर रह गई। जादूगर अलादीन को वहीं पर छोड़कर चला गया। अलादीन को समझ आ गया कि वह व्यक्ति उसका कोई चाचा-वाचा नहीं था, बल्कि वह तो कोई जादूगर था। उसने अपने काम के लिए उसका इस्तेमाल किया। परंतु अलादीन ये नहीं समझ पाया कि जादूगर पुराने पीतल का चिराग क्यों पाना चाहता था। अलादीन लगभग दो दिन तक वहीं पर पड़ा रहा। वह डर के मारे जोर-जोर से रोता रहा। परंतु उसकी आवाज़ सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था। लगातार रोते-रोते उसकी आँखें सूज गई थीं। उसने अपनी आँखें मलीं तो उसकी अँगूली की अँगूठी रगड़ खा गई। अँगूठी के रगड़ खाते ही धुएं के साथ एक विशालकाय जिन्न प्रकट हुआ। जिन्न अलादीन के आगे अपने दोनों हाथ जोड़कर बोला, ''मेरे लिए क्या हुक्म है मेरे आका?''

जिन्न को देखकर अलादीन डर गया। अलादीन को डरा हुआ देखकर जिन्न बोला, ''मेरे आका! आज से आप मेरे मालिक हैं और मैं आपका गुलाम। मैं इस अँगूठी का जिन्न हूँ और आपका आदेश मानना मेरा कर्त्तव्य है।''

जिन्न की बात सुनकर अलादीन का डर कुछ कम हुआ। वह बोला, ''मुझे मेरे घर पहुँचा दो।''

''जो हुक्म मेरे आका।'' जिन्न ने कहा। अगले ही पल अलादीन अपनी माँ के सामने खड़ा था। अलादीन को देखकर उसकी माँ ने खुशी से उसे गले लगा लिया। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। वह बोली, ''मेरे बच्चे! तू कहाँ चला गया था। मैं तेरे लिए बहुत परेशान हो गई थी।''

अलादीन ने अपनी माँ को पूरी कहानी सुना दी। जादूगर की सच्चाई जानकर उसकी माँ स्तब्ध रह गई। अलादीन ने अपनी माँ को साथ लाए हुए कीमती फल रूपी रत्न देते हुए कहा, ''माँ! मुझे बहुत जोर से भूख लगी है। मैंने दो दिन से कुछ भी नहीं खाया। जल्दी से खाना दे दो।''



इस पर उसकी माँ मायूसी से बोली, "अलादीन! घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं है। मैं तुम्हें खाने के लिए क्या दूँ?"



यह सुनकर अलादीन ने कहा, "माँ! तुम दुखी मत हो। मैं इस पुराने पीतल के चिराग को साफ करके चमका देता हूँ और फिर इसे बेच दूँगा। इसे बेचकर जो भी पैसे मिलेंगे, उससे खाने-पीने का सामान ले आऊँगा।"

यह कहकर अलादीन पीतल के चिराग को साफ करने बैठ गया। उसने जैसे ही साफ करने के लिए चिराग को रगड़ा तो उससे धुएं के साथ एक विशाल जिन्न प्रकट हुआ और बोला, "कहिए मेरे आका! मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ।"

अलादीन ने कहा, "हमें भूख लगी है। हमारे लिए भोजन की व्यवस्था करो।"

अलादीन के आदेश देते ही उनके सामने दो चाँदी की थालियों में



स्वादिष्ट भोजन आ गया। भोजन करने के बाद अलादीन ने वे थालियाँ बेच दीं। अब अलादीन को जब भी जरूरत होती, वह जिन्न को भोजन की व्यवस्था करने को कहता और भोजन करने के बाद थालियाँ बेच देता। उसे थालियाँ बेचकर पैसा मिल जाता। कुछ सालों तक यही क्रम चलता रहा।

एक दिन अलादीन ने सुना कि सुल्तान ने ऐलान किया है कि शहज़ादी शहर भ्रमण पर हैं, इसलिए कोई भी व्यक्ति अपने घर से बाहर न निकले। ये सुनकर अलादीन ने सोचा, 'सुल्तान ने ऐसी घोषणा क्यों की? क्या शहज़ादी बहुत खूबसूरत है। मुझे उसे देखना चाहिए।'

ये सोचकर वह एक सुरक्षित स्थान पर छुप गया। जब वहाँ से होकर शहज़ादी की सवारी गुज़री तो वह उसे देखकर उस पर मुग्ध हो गया। शहज़ादी बहुत खूबसूरत थी। अलादीन मन ही मन शहज़ादी से प्रेम करने लगा था। घर आकर अलादीन ने अपनी माँ से कहा, "अम्मी! मैं शहज़ादी से निकाह कर उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ। मैं उससे प्रेम करने लगा हूँ।"

ये सुनकर उसकी माँ हक्की-बक्की रह गई। उसने अलादीन को समझाते हुए कहा, "बेटा! तू ये क्या कह रहा है। तेरा दिमाग तो ठीक है न! हमारा उनसे कोई मुकाबला नहीं है। वह इस देश की शहज़ादी है और हम प्रजा। हमारा और उनका कोई मेल नहीं है।"



परंतु अलादीन अपनी जिद पर अड़ा रहा। अंततः उसकी जिद के आगे झुकते

हुए उसकी माँ सुल्तान के पास जाने के लिए तैयार हो गई। वह अलादीन के लाए हुए कीमती फल लेकर सुल्तान के पास पहुँची। उसने सुल्तान को वे फल भेंट करते हुए कहा, ''सुल्तान! मेरा बेटा अलादीन शहज़ादी से निकाह करना चाहता है। वह उससे बहुत प्रेम करता है।''

सुल्तान कीमती व अद्‌भुत फल देखकर बहुत प्रभावित हुआ। उसने सोचा, 'शहज़ादी का विवाह इस औरत के बेटे के साथ करने में कोई हर्ज नहीं है। इसके पास तो बहुमूल्य खजाना जान पड़ता है। परंतु, इसे हाँ कहने से पहले मुझे अपने वज़ीर से सलाह ले लेनी चाहिए।'

ये सोचकर सुल्तान ने शहज़ादी और अलादीन की शादी के बारे में वज़ीर से सलाह माँगी। वज़ीर शहज़ादी से अपने पुत्र का विवाह करवाना चाहता था, ताकि भविष्य में उसका पुत्र सुल्तान बन सके। इसलिए वह ईर्ष्यावश बोला, ''सुल्तान! आप एक ऐसे व्यक्ति से शहज़ादी की शादी करने जा रहे हैं, जिसे आप ठीक से जानते भी नहीं। आप उस औरत से तीन महीने बाद आने को कह दीजिए, तब तक हम अलादीन के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर लेंगे।''

सुल्तान वज़ीर की बात से सहमत था। उसने अलादीन की माँ को तीन महीने बाद आने के लिए कह दिया। वापस लौटकर उसने अलादीन को पूरी बात बता दी कि सुल्तान ने उसे तीन महीने बाद आने के लिए कहा है। [illegible] खुश था। उसे





उम्मीद थी कि उसकी शादी शहज़ादी से अवश्य हो जाएगी।

इस घटना के लगभग एक महीने बाद अलादीन ने सुना कि सुल्तान ने शहज़ादी की शादी वज़ीर के बेटे से कर दी है। ये सुनकर अलादीन को बहुत गुस्सा आया। उसने चिराग को रगड़ा और चिराग से उत्पन्न जिन्न से कहा, ''जिनी! सुल्तान ने अम्मी से किया हुआ अपना वादा तोड़ दिया है। उन्होंने तीन महीने पूरे होने से पहले ही शहज़ादी की शादी वज़ीर के बेटे से कर दी है। तुम रात के समय शहज़ादी और उसके पति को उठाकर यहाँ ले आओ।''

जिन्न अलादीन की आज्ञा का पालन करते हुए शहज़ादी और उसके पति को आधी रात में बिस्तर सहित उठा लाया। फिर अलादीन ने जिन्न से कहा, ''जिनी! शहज़ादी घर के अंदर और उसका पति घर के बाहर कँपकँपाती सर्दी में रहेगा।''

जिन्न ने ऐसा ही किया। अगले दिन अलादीन के कहे अनुसार सुबह होने पर वह उन दोनों को वापस महल में छोड़ आया। शहज़ादी के पति ने सोचा कि उसने रात



में सपना देखा था। परंतु अब रोज रात में ऐसा ही होने लगा। इससे शहज़ादी का पति डर गया। वह सुल्तान के पास जाकर बोला, ''सुल्तान! जब से मेरी शादी शहज़ादी से हुई है, तब से मेरे साथ एक अजीबो-गरीब घटना हो रही है। मैं अब शहज़ादी के साथ नहीं रहना चाहता। मुझे उससे तलाक चाहिए।''

सुल्तान उसकी बात मान गया और शहज़ादी व वज़ीर के पुत्र का तलाक हो गया। तीन महीने बीतने पर अलादीन ने अपनी माँ को एक बार फिर सुल्तान के पास भेजा। वह सुल्तान के पास गई और उन्हें उनका वादा याद दिलाया। सुल्तान ने कहा, ''ठीक है, मैं शहज़ादी की शादी तुम्हारे बेटे से करने के लिए तैयार हूँ, परंतु उससे पहले उसे मेरी एक शर्त माननी होगी।'' ''कैसी शर्त?'' अलादीन की माँ ने पूछा।

सुल्तान ने कहा, ''तुम्हारे बेटे को हीरे-जवाहारातों से भरे हुए चालीस थाल मेरी सेवा में भेजने होंगे। इन चालीस थालों को सुंदर वस्त्रों से सुसज्जित चालीस सेवक लेकर आएंगे।''

ये शर्त सुनकर अलादीन की माँ निराश हो गई। उसे लगा कि इस शर्त को पूरा कर पाना उसके बेटे के वश में नहीं है। वह भारी मन से घर लौट आई और अलादीन को सुल्तान की शर्त बता दी।

अलादीन चहकते हुए बोला, ''अम्मी! तुम फिक्र मत करो। सुल्तान की शर्त मैं चुटकी बजाते ही पूरी कर सकता हूँ।'' ये कहकर उसने चिराग रगड़कर जिन्न को बुलाया और उसे सुल्तान की शर्त पूरी करने को कहा। अगले ही पल चालीस सेवक हीरे-जवाहरातों से भरे हुए चालीस थाल लेकर अलादीन के सामने खड़े हो गए।



अलादीन की माँ उन चालीस सेवकों को लेकर सुल्तान के पास गई। सुल्तान उन्हें देखकर चकित रह गया। उसने अलादीन और शहज़ादी की शादी के लिए तुरंत हामी भर दी।

अलादीन ने जिन्न को आदेश देते हुए कहा, ''मुझे सुंदर एवं कीमती वस्त्राभूषण चाहिए। इसके साथ ही मेरे लिए बीस सेवक एवं मेरी अम्मी के लिए छह सेविकाओं की व्यवस्था करो। और हाँ, मुझे दस हजार सोने की अशर्फियाँ भी चाहिए। मेरे जाने के लिए एक सुंदर घोड़ा भी तैयार करो।''

पलक झपकते ही जिन्न ने अलादीन द्वारा ज़ाहिर की गई सारी इच्छाएँ पूरी कर दीं। इसके बाद अलादीन घोड़ पर सवार होकर निकल पड़ा। दस सेवक उसके आगे और दस सेवक उसके पीछे चल रहे थे। वे रास्ते भर सोने की अशर्फियाँ बिखेरते हुए जा रहे थे। अलादीन वस्त्राभूषणों से सुसज्जित होकर बहुत ही सुंदर एवं आकर्षक लग रहा था। अलादीन की माँ के साथ-साथ छह सेविकाएं चल रही थीं। अलादीन की माँ किसी सुल्ताना से कम नहीं लग रही थी। वहाँ के लोग इस प्रकार की बारात पहली बार देख रहे थे।

जब बारात महल पहुँची तो सुल्तान ने बारात का भव्य स्वागत किया। अलादीन



और शहज़ादी की शादी बड़ी धूमधाम से हुई। इसी बीच अलादीन ने जिनी से उसके और शहज़ादी के लिए एक भव्य महल बनाने को कहा। जिनी ने तुरंत महल बना दिया। शादी के बाद अलादीन शहज़ादी को लेकर उसी महल में आ गया।

अगले दिन सुल्तान अलादीन और शहज़ादी से मिलने आया। सुल्तान अलादीन का महल देखकर चकित रह गया। महल कीमती रत्नों से बना था। सभी दीवारों पर रत्न-आभूषण जड़े हुए थे। सिर्फ एक दीवार आधी थी। आधी दीवार देखकर सुल्तान ने अलादीन से उसका कारण पूछा। अलादीन ने मुस्कुराते हुए कहा, ''सुल्तान! मैं चाहता हूँ कि इसे आप पूरा करवाएँ। इस आधी दीवार को आप पूरा करवाएंगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।''

इस पर सुल्तान ने कहा, ''हाँ, हाँ! क्यों नहीं?'' सुल्तान ने कारीगरों से अधूरी दीवार को पूरा करने के लिए कहा। सुल्तान के कोष का सारा धन खत्म हो गया, परंतु दीवार पूरी नहीं हुई।

ये देखकर सुल्तान को भारी शर्मिंदगी महसूस हुई। अलादीन ने कहा, ''सुल्तान!

आपको शर्मिंदा होने की कोई जरूरत नहीं है। इस दीवार को मेरे कारीगर पूरा कर देंगे।'' ये कहकर अलादीन ने जिनी को सुल्तान की सारी संपत्ति लौटाने को कहा। सुल्तान का शाही खजाना फिर से भर गया। सुल्तान ने प्रसन्न होकर अलादीन को अपनी फौज का सेनानायक बना दिया। अलादीन के नेतृत्व में सेना ने कई लड़ाईयाँ जीतीं। अलादीन के कार्य एवं व्यवहार से न सिर्फ सुल्तान बल्कि प्रजा भी खुश थी।

उधर दूसरी तरफ अफ्रीका में जब जादूगर को अलादीन के बच निकलने और शहज़ादी से शादी करने की बात पता चली तो उसने सोचा,'निश्चय ही यह सब उस जादुई चिराग के कारण ही संभव हुआ है। मुझे उस अलादीन को सबक सिखाकर जादुई चिराग हासिल करना ही होगा।' ये सोचकर जादूगर चिराग विक्रेता बनकर पर्शिया आया। वह चिराग लेकर अलादीन के महल के सामने से होकर गुज़रा। वह आवाज़ लगाता हुआ जा रहा था, ''चिराग ले लो। पुराने चिराग के बदले नए चिराग ले लो। चिराग ले लो, चिराग।''

जब शहज़ादी ने यह आवाज सुनी तो उसे अपने घर में रखे पुराने पीतल के चिराग की याद हो आई। उसे नहीं पता था कि वह चिराग जादुई है। उसने जल्दी से वह चिराग उठाया और उसे बदलवाने के लिए महल से नीचे उतर आई। उसने चिराग विक्रेता को आवाज देते हुए कहा, ''हमें इस पुराने चिराग के बदले नया चिराग दे दो।''



ये सुनकर चिराग विक्रेता रुक गया। शहज़ादी के हाथ में पुराना पीतल का चिराग देखकर वह

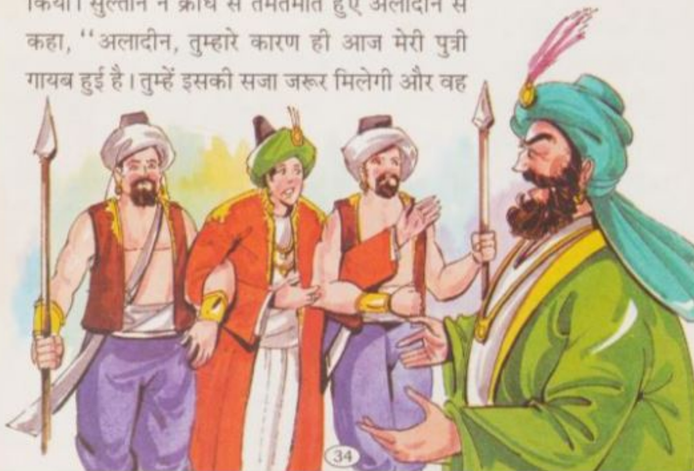
उसे तुरंत पहचान गया। उसने शहज़ादी के हाथ से वह चिराग ले लिया और उसे रगड़ा।

चिराग से जिन्न के प्रकट होते ही जादूगर ने उसे आदेश दिया, ''मुझे और राजकुमारी को महल सहित अफ्रीका ले चलो।''

अगले ही पल जादूगर शहज़ादी और महल सहित अफ्रीका में था। जब अलादीन शाम को घर लौटकर आया तो महल व शहज़ादी को न पाकर अत्यधिक परेशान हो गया। वह शहज़ादी को तलाशने लगा। उसने आस-पास के सभी लोगों से शहज़ादी के बारे में पूछा, परंतु उसे किसी से भी सही जवाब नहीं मिला।

उधर महल में वज़ीर ने सुल्तान को भड़काते हुए कहा, ''सुल्तान! ये सब अलादीन के कारण ही हुआ है। उसके जादू के कारण ही आज शहज़ादी गायब है। शहज़ादी के गायब होने का दोषी सिर्फ और सिर्फ अलादीन है।''

ये सुनकर सुल्तान को बहुत क्रोध आया और उन्होंने अपने सिपाहियों को अलादीन को पकड़कर लाने का आदेश दिया। सिपाहियों ने तुरंत सुल्तान के आदेश का पालन करते हुए अलादीन को पकड़कर सुल्तान के सम्मुख पेश किया। सुल्तान ने क्रोध से तमतमाते हुए अलादीन से कहा, ''अलादीन, तुम्हारे कारण ही आज मेरी पुत्री गायब हुई है। तुम्हें इसकी सजा जरूर मिलेगी और वह





है मौत।''

अलादीन ने कहा, ''सुल्तान! यदि शहज़ादी आपकी पुत्री है तो वह मेरी पत्नी भी है। मुझे भी उसके गायब होने का दुख है। आप मुझे एक मौका दीजिए। मैं उसे अवश्य ढूँढ़ निकालूँगा।''

सुल्तान ने कहा, ''ठीक है। मैं तुम्हें तीस दिन का वक्त देता हूँ। यदि तुम तीस दिनों में शहज़ादी को नहीं ढूँढ़ सके तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।''

अलादीन ने 'हाँ' में सिर हिलाया और महल से बाहर आ गया। अलादीन शहज़ादी की तलाश में कुछ दिन इधर-उधर भटकता रहा, परंतु उसे कोई सुराग नहीं मिला। एक दिन अलादीन को अचानक अँगूठी वाले जिन्न की याद हो आई। उसने तुरंत अँगूठी को रगड़ा। अगले ही पल अँगूठी का जिन्न उसके सामने खड़ा था। वह जिन्न से बोला, ''मैं एक बड़ी मुसीबत में फँस गया हूँ। मुझे इस मुसीबत से निकालो। शहज़ादी महल सहित गायब हो गई है। तुम उसे वापस ले आओ।''

जिन्न बोला, ''मेरे आका! ये काम मेरे वश से बाहर है। मैं आपको सिर्फ ये बता सकता हूँ कि इस समय शहज़ादी कहाँ है?''

अलादीन ने पूछा, ''जल्दी बताओ कहाँ है?'' जिन्न ने जवाब दिया, ''अफ्रीका में। शहज़ादी इस समय अपने महल में अफ्रीका में है।''

ये सुनकर अलादीन बोला, ''मुझे वहाँ ले चलो।''

अगले ही पल अलादीन अपने महल के सामने खड़ा था। उस समय शहज़ादी महल की खिड़की पर खड़ी थी। जब शहज़ादी ने अलादीन को देखा तो वह खुशी से फूली नहीं समाई। उसने इशारे से अलादीन को महल में बुला लिया। अलादीन महल के अंदर गया और उसने शहज़ादी से जादुई चिराग के बारे में पूछा।



उसने उसे पूरी घटना बताते हुए कहा, ''जादुई चिराग को जादूगर हमेशा अपने पास रखता है। रोज शाम को वह मुझसे मिलने आता है और मुझ पर शादी करने के लिए दबाव डालता है। परंतु उसके प्रति मेरे बुरे व्यवहार के कारण वह अभी तक अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सका है।''

यह सुनकर अलादीन ने कहा, ''अब तुम्हें डरने की ज़रुरत नहीं है। अब मैं आ गया हूँ। सब ठीक कर दूँगा।''

फिर वह महल से निकलकर सीधे बाज़ार गया और ज़हर खरीद लाया। उसने शहज़ादी को पुड़िया देते हुए कहा, ''तुम किसी तरह ये ज़हर जादूगर की मदिरा में मिला देना। बाकी सब मैं संभाल लूँगा।'' इतना कहकर वह वहाँ से चला गया।

शाम को जब जादूगर आया तो शहज़ादी को वस्त्राभूषणों से सुसज्जित देखकर चकित रह गया। शहज़ादी बोली, ''मैंने सोच लिया है कि अब मैं अलादीन को



भूल जाऊँगी। मैं तुमसे शादी करने के लिए तैयार हूँ।'' ये कहकर शहज़ादी ने ज़हरयुक्त मदिरा का प्याला जादूगर को थमा दिया। जादूगर शहज़ादी के शादी के लिए सहमत हो जाने पर बहुत खुश था। इसलिए वह मदिरा का प्याला एक ही साँस में पी गया। मदिरा पीते ही उसकी मृत्यु हो गई। जादूगर के मरते ही शहज़ादी ने अलादीन को बुला लिया। अलादीन ने जादूगर की जेब से चिराग निकाला और उसे रगड़ा। ऐसा करते ही धुएं के साथ जिन्न प्रकट हुआ।

अलादीन ने जिन्न को आदेश दिया, ''जिनी! मुझे और राजकुमारी को तुरंत महल सहित पर्शिया ले चलो।''

अगले ही पल अलादीन और शहज़ादी पर्शिया में थे। जब सुल्तान ने शहज़ादी के लौट आने की खबर सुनी तो वह तुरंत उससे मिलने गया। सुल्तान ने शहज़ादी को वापस लाने के लिए अलादीन को धन्यवाद दिया। जादूगर की मृत्यु के बाद अलादीन और उसकी पत्नी दोनों खुशीपूर्वक रहने लगे। बाद में, सुल्तान की मृत्यु के बाद अलादीन नया सुल्तान बना।

छोटा कुबड़ा



बहुत समय पहले काशनगर में एक दर्जी अपनी पत्नी के साथ रहता था। दर्जी की दुकान अच्छी चलती थी। इसलिए उनके पास पैसे की कोई कमी नहीं थी।

एक दिन दर्जी अपनी दुकान पर काम करने में व्यस्त था। वह किसी की शादी की पोशाक तैयार कर रहा था। शाम के समय एक कुबड़ा उसकी दुकान पर आया और दुकान के बाहर बैठकर गाना गाने लगा। उसकी आवाज़ बहुत मीठी थी। वह बड़े सुर, लय और ताल के साथ गा रहा था। दर्जी उसका गाना सुनकर बहुत प्रभावित हुआ।

दर्जी ने सोचा, 'मेरी पत्नी दिन भर घर पर अकेले रहती है। मैं इस कुबड़े को अपने घर लेकर जाता हूँ। ये वहाँ पर मेरी पत्नी का मनोरंजन किया करेगा।'

यह सोचकर दर्जी ने कुबड़े को अंदर बुलाया और उसे अपने साथ अपने घर ले गया। घर पर दर्जी की पत्नी अपने पति के साथ कुबड़े को देखकर चौंक गई। तब दर्जी ने कुबड़े और अपनी पत्नी दोनों का एक दूसरे से परिचय करवाया। इसके बाद दर्जी की पत्नी ने खाना परोसा और तीनों बैठकर खाना खाने लगे। दर्जी की पत्नी ने खाने में मछली बनाई हुई थी। कुबड़ा मछली बहुत ही स्वाद ले-लेकर खा



रहा था। तभी मछली खाते हुए उसके गले में मछली का काँटा फँस गया। उसे जोर-जोर से हिचकियाँ आने लगीं। कुबड़े को हिचकियाँ आते देख दर्जी ने उसकी पीठ थपथपाई और उसे पानी भी पिलाया। परंतु कुबड़े की हिचकियाँ नहीं रुकीं और उसके गले में फँसा मछली का काँटा भी नहीं निकला। फिर जल्दी ही कुबड़े की मौत हो गई।

कुबड़े को मृत देखकर दर्जी और उसकी पत्नी घबरा गए। दर्जी की पत्नी बोली, ''अब क्या होगा? यदि शाही सैनिकों को कुबड़े की मौत के बारे में पता लग गया तो वे हमें कुबड़े को मारने के जुर्म में पकड़ लेंगे।''

दर्जी बोला, ''तुम डरो नहीं। थोड़ा धीरज रखो। मेरे पास एक तरकीब है। ध्यान से सुनो। हम कुबड़े को वैद्य के यहाँ ले जाते हैं। हम वैद्य से कहेंगे कि कुबड़ा बीमार है। और फिर मौका देखकर कुबड़े को वहीं पर छोड़ आएंगे।''

दर्जी की पत्नी उसकी बात से सहमत हो गई। वे दोनों तुरंत कुबड़े के मृत शरीर को लेकर वैद्य के घर पहुँचे। उन्होंने वैद्य के घर पहुँचकर उसके घर की घंटी बजाई। नौकरानी ने सीढ़ियों से नीचे उतरकर दरवाजा खोला। दर्जी बोला, ''हम एक बीमार व्यक्ति को लेकर आए हैं। उसकी हालत बहुत खराब है। आप वैद्य को खबर कर दीजिए।'' साथ ही, दर्जी ने नौकरानी को पैसे देते हुए कहा, ''ये वैद्य का शुल्क है। ये उन्हें दे देना।''



नौकरानी ने पैसे लिए और वैद्य को

बुलाने चली गई। नौकरानी के जाते ही दर्जी और उसकी पत्नी ने कुबड़े को सीढ़ियों के सहारे दरवाजे के पास बैठा दिया और वहाँ से भाग निकले।

नौकरानी से बीमार व्यक्ति के आने की खबर पाकर वैद्य दौड़ता हुआ सीढ़ियों से नीचे आया। सीढ़ियों पर अंधेरा था। वैद्य के पैर से कुबड़े को धक्का लगा और वह लुढ़कता हुआ नीचे जमीन पर जा गिरा। ये देखकर वैद्य ने दौड़कर उसे उठाया। परंतु कुबड़े को मृत देखकर उसके होश उड़ गए। उसने सोचा कि उसके पैर से ठोकर लगकर गिरने से कुबड़े की मौत हो गई है। वह डर गया। उसने तुरंत कुबड़े का मृत शरीर उठाया और उसे घर के अंदर ले आया।

उसकी पत्नी ने उसे परेशान देखकर इसका कारण पूछा। वैद्य ने उसे पूरी बात बता दी।





पूरी बात जानकर वह डर के मारे रुआँसी हो उठी। वैद्य ने उसे समझाते हुए कहा, ''तुम फिक्र मत करो। मैं इस समस्या का कोई न कोई हल अवश्य ढूँढ़ लूँगा।''

कुछ देर सोचने के बाद वैद्य ने अपनी पत्नी से कहा, ''हम इस कुबड़े को अपने पड़ोसियों के घर में फेंक देते हैं। तुम्हें तो पता ही है कि वे लोग आज घर पर नहीं हैं। चलो, इसे ले चलें।''

उसकी पत्नी बोली, ''ये सब तो ठीक है, परंतु इसे पडौसी के घर के अंदर फेकेंगे कैसे? इस पर वैद्य बोला, ''उसकी छत पर जो चिमनी है न, उसके रास्ते। चलो अब जल्दी करो। इससे पहले कि किसी को ये बात पता चले, हम इसे फेंक आते हैं।''

वे दोनों कुबड़े को पड़ोसी के घर में बनी चिमनी के रास्ते उसके घर में फेंक आए। कुबड़ा पड़ोसी के घर के भंडारगृह में गिरा। उसी भंडारगृह में वह घी, दूध, मक्खन आदि एकत्र करके रखता था। वहाँ पर चूहे, बिल्ली अक्सर आँख-मिचौली खेला करते थे।

आधी रात को जब पड़ोसी लौटकर घर आया तो वह लालटेन लेकर भंडारगृह में



गया। उसने देखा कि एक चोर दीवार के सहारे खड़ा है। उसने सोचा, 'ओह! मैं तो बेकार ही अपने सामान की चोरी के लिए चूहे-बिल्लियों को दोषी ठहरा रहा था। असली चोर तो ये व्यक्ति है। आज पकड़ में आया है।' ये सोचकर उसने एक मोटा-सा डंडा उठाया और चिल्लाते हुए बोला, ''ओ चोर! आज मैं तुझे छोड़ूँगा नहीं। तू मेरे यहाँ घी, मक्खन चुराने आया था।'' ये कहकर उसने कुबड़े को मारना शुरू कर दिया। दो-चार डंडे बरसाने के बाद भी जब कुबड़े ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो पड़ोसी हैरानी से उसके पास गया। चोर को मृत देखकर वह चकित रह गया। उसने सोचा कि उसके बुरी तरह मारने के कारण चोर की मृत्यु हो गई है। उसे अपने किए पर भारी पछतावा हुआ। पकड़े जाने के डर से वह काँपने लगा। लेकिन फिर उसने साहस बटोरकर कुबड़े के मृत शरीर को उठाया और उसे बाज़ार ले गया। रात के समय बाज़ार में एकदम सन्नाटा था। उसने कुबड़े को एक दुकान की दीवार के सहारे खड़ा किया और वापस अपने घर चला आया।

उसी समय एक व्यापारी शराब के नशे में चूर अपने घर लौट रहा था। वह तेज़ी से चल रहा था, क्योंकि उस नगर में शराब पीना निषेध था। वह सजा के डर से जल्दी से जल्दी घर पहुँच जाना चाहता था। जब उसने कुबड़े को दीवार के सहारे



चुपचाप खड़े देखा तो उसने सोचा, 'ये व्यक्ति अवश्य ही हमला करके मुझे मारना चाहता है।' ये सोचकर उसने कुबड़े को एक जोरदार घूँसा मारा। उसके घूँसा मारते ही कुबड़ा जमीन पर आ गिरा। कुबड़े को जमीन पर अचेत गिरा देखकर व्यापारी सहायता के लिए चिल्लाने लगा। उसकी आवाज़ सुनकर गश्त पर तैनात एक सिपाही उसके पास आया। उसे चुप कराते हुए सिपाही बोला, ''तुम चिल्ला क्यों रहे हो?'' व्यापारी कुछ नहीं बोला। बस उसने हाथ से कुबड़े की ओर इशारा कर दिया। सिपाही ने कुबड़े को उठाने का प्रयास किया। परंतु बहुत प्रयास के बाद भी जब कुबड़े ने कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की तो सिपाही ने गुस्से में व्यापारी से कहा, ''तुमने इसे मार डाला। तुम्हें सजा अवश्य मिलेगी। सुल्तान तुम्हें इसकी सजा देंगे।'' ये कहकर उसने कुबड़े का मृत शरीर उठाया और व्यापारी को ले जाकर कारागार में डाल दिया।

खोजबीन के बाद सिपाही को पता चला कि वह कुबड़ा शाही विदुषक था। सुल्तान उसे बहुत पसंद करते थे। अगले दिन सिपाही ने व्यापारी को सुल्तान के सम्मुख पेश किया। सुल्तान ने व्यापारी को कुबड़े की हत्या के आरोप में सरेआम मौत की सजा सुनाई।

सजा वाले दिन व्यापारी को फाँसी पर लटकते हुए देखने के लिए लोगों की भारी भीड़ जमा थी। जल्लाद व्यापारी को फाँसी पर चढ़ाने ही वाला था कि भीड़ के बीच में से आवाज आई, ''रुको! रुको! कुबड़े की मौत का दोषी ये व्यक्ति नहीं, बल्कि मैं हूँ। ये निर्दोष है।'' ये शाही महल में दूध, घी भेजने वाले व्यक्ति की

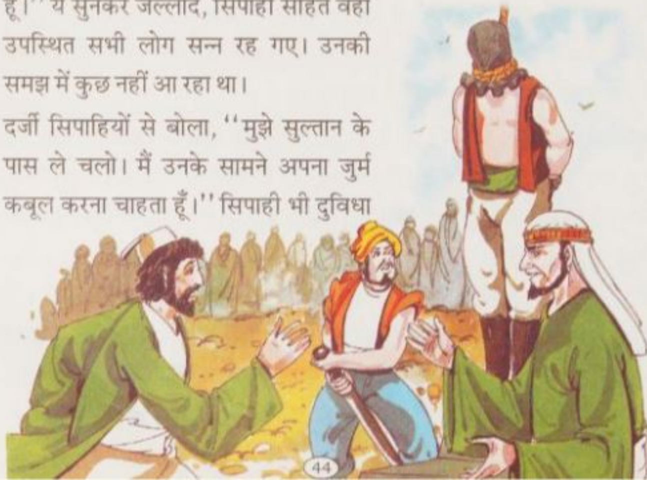
आवाज़ थी।

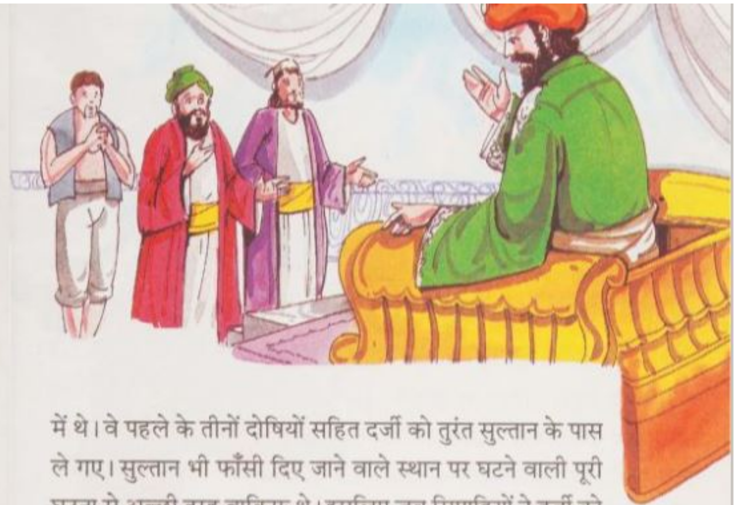
उसने शाही सिपाहियों को पूरी घटना सुना दी। उसकी बात सुनने के बाद शाही सैनिकों ने उसे सुल्तान के सम्मुख पेश किया। उसने अपना गुनाह कबूल कर लिया। सुल्तान ने उसे फाँसी पर चढ़ाने और व्यापारी को छोड़ देने का आदेश दिया।

सैनिक इस व्यक्ति को फाँसी पर चढ़ाने के लिए ले गए। वे उसे फाँसी पर चढ़ाने ही वाले थे कि भीड़ के बीच से एक आवाज आई, ''रुक जाओ! ये व्यक्ति दोषी नहीं है। कुबड़े की मौत का जिम्मेदार मैं हूँ।'' ये आवाज वैद्य की थी। वैद्य ने शाही सिपाहियों को पूरी बात बता दी। तब राजा ने वैद्य को फाँसी पर चढ़ाने का हुक्म दिया और महल में दूध, घी भेजने वाले व्यक्ति को छोड़ दिया।

इस घटना से सिपाही ही नहीं बल्कि सभी लोग चकित थे। कुबड़े की मौत की कहानी की एक के बाद एक परत खुलती जा रही थी। वैद्य को फाँसी लगने ही वाली थी कि तभी दर्जी ने जल्लाद से कहा, ''इसे फाँसी पर मत चढ़ाओ। इसने किसी को नहीं मारा। फाँसी पर तो मुझे चढ़ना चाहिए, क्योंकि असली दोषी मैं हूँ।'' ये सुनकर जल्लाद, सिपाही सहित वहाँ उपस्थित सभी लोग सन्न रह गए। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

दर्जी सिपाहियों से बोला, ''मुझे सुल्तान के पास ले चलो। मैं उनके सामने अपना जुर्म कबूल करना चाहता हूँ।'' सिपाही भी दुविधा





में थे। वे पहले के तीनों दोषियों सहित दर्जी को तुरंत सुल्तान के पास ले गए। सुल्तान भी फाँसी दिए जाने वाले स्थान पर घटने वाली पूरी घटना से अच्छी तरह वाकिफ थे। इसलिए जब सिपाहियों ने दर्जी को सुल्तान के सम्मुख पेश किया तो वे बोले, ''मैं सच्चाई जानना चाहता हूँ। एक के बाद एक तीन लोग कुबड़े की मौत की जिम्मेदारी ले चुके हैं। अब तुम भी ये जिम्मेदारी ले रहे हो। आखिर माजरा क्या है? मुझे सही बात बताओ।''

दर्जी ने कहा, ''सुल्तान! दरअसल इन तीनों में से कोई भी दोषी नहीं है। इसकी मौत के लिए मैं जिम्मेदार हूँ इसलिए सजा मुझे मिलनी चाहिए।'' ये कहकर उसने सुल्तान को पूरी घटना बता दी।

सुल्तान ने पूरी घटना सुनने के बाद मुस्कुराते हुए कहा, ''तुम चारों में से कोई भी कुबड़े की मौत का दोषी नहीं है। कुबड़े की मौत गले में मछली का काँटा फँसने के कारण स्वाभाविक रूप से हुई है। तुम बेकार में ही स्वयं को दोषी ठहरा रहे थे। मैं तुम चारों को निर्दोष मानकर मुक्त करता हूँ।'' ये कहकर सुल्तान ने उन चारों को मुक्त कर दिया। सुल्तान को धन्यवाद देकर वे चारों खुशी-खुशी अपने घर लौट आए। सभी ने सुल्तान के न्याय की प्रशंसा की।

अबुल हसन



बहुत समय पहले बगदाद पर हारून-उल-रशीद नाम के एक खलीफा शासन करते थे। उनके शासन काल में एक धनी व्यापारी था, जिसका व्यापार बगदाद ही नहीं वरन दूसरे देशों में भी फैला हुआ था। व्यापारी ने कठिन परिश्रम से धन-संपत्ति इकट्ठी की थी। उसका एक ही पुत्र था। उसका नाम अबुल हसन था। व्यापारी की मृत्यु के बाद उसके द्वारा जोड़ी गई संपत्ति उसके बेटे के लिए पर्याप्त थी। वह आराम से गुज़र-बसर कर सकता था। परंतु अबुल हसन ने अपने पिता की धन-संपत्ति को दुर्व्यसनों में उड़ाना शुरू कर दिया। वह अपने घर पर प्रतिदिन नाच-गाने की महफिलें सजाता और अपने दोस्तों के साथ जमकर मदिरा पीता। वह पैसों को न सिर्फ अपने ऊपर बल्कि अपने दोस्तों के ऊपर भी उड़ाता। उसके यहाँ रोज दावतें होतीं। वह अपना जीवन भोग-विलास में बिताने लगा। वह अपने व्यापार से विमुख होकर अपने कर्त्तव्यों को भूल गया था। इस कारण उसे व्यापार में भारी नुकसान होने लगा।

उसकी माँ ने उसे बहुत समझाया, परंतु उस पर कोई असर नहीं हुआ। उसे दुर्व्यसनों की लत लग चुकी थी। धीरे-धीरे उसके पिता द्वारा संचित सारी धन-संपत्ति नष्ट हो गई। वह दाने-दाने के लिए मोहताज हो गया। अब उसके दोस्त

उससे कतराने लगे थे। बुरे वक्त में उसके सभी दोस्तों ने उसका साथ छोड़ दिया। अबुल हसन को अब एहसास हुआ कि वह जिन्हें अपना दोस्त मानता था, वे सब तो पैसे के दोस्त थे। जब तक उसके पास पैसे थे, सभी ने उसका साथ दिया, परंतु आज बुरा वक्त आने पर सबने उसे छोड़ दिया। उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू आ गए। उसने सोचा, 'अब मैं अपनी गलतियों से सबक लेकर स्वार्थी दोस्तों से दूर रहूँगा और बुद्धिमत्तापूर्वक अपना जीवन बिताऊँगा।'

जब उसकी माँ को पता चला कि उसका बेटा अपनी गलतियों पर पछता रहा है तो वह उसके पास जाकर बोली, ''बेटे! तुम अपने दुर्भाग्य के लिए स्वयं जिम्मेदार हो। परंतु अब जब तुम्हें अपनी गलती का एहसास है तो तुम अवश्य ही तरक्की करोगे।''

''अम्मी! सब कुछ खत्म हो गया। मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ? सब मेरी वजह से हुआ।'' ये कहकर अबुल हसन फूट-फूटकर रोने लगा।

उसकी माँ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, ''बेटे! फिक्र मत करो। सब ठीक हो जाएगा। मैंने बुरे वक्त के लिए पाँच हजार दीनारें बचाकर रखी थीं। तू उनसे व्यापार शुरू कर। अल्लाह की रहमत हुई तो व्यापार पहले की तरह ही चल निकलेगा।''



अबुल हसन ने पाँच हजार दीनारों से व्यापार शुरू किया। वह अपने व्यापार की तरक्की के लिए दिन-रात कड़ी मेहनत करने लगा। शीघ्र ही अपनी मेहनत के बल पर वह पहले की तरह ही सम्पन्न हो गया। उसकी



गिनती समृद्ध व्यापारियों में होने लगी। अबुल हसन पहले हर समय अपने दोस्तों से घिरा रहता था, इसलिए अब उसे अकेलेपन का एहसास होने लगा। उसे अकेले खाना तो बिल्कुल पसंद नहीं था।

उसने इस समस्या का एक नायाब समाधान ढूँढ़ निकाला। वह रोज शाम को शहर की सीमा पर बने पुल पर जाकर खड़ा हो जाता और वहाँ से गुज़रने वाले दो अनजान व्यक्तियों को मेहमान बनाकर अपने घर ले आता। वह उन्हें स्वादिष्ट खाना खिलाता और उनके मनोरंजन के लिए नाच-गाने का भी आयोजन करवाता। रात को उन्हें अपने घर पर ही रखता और सुबह उन्हें सम्मानपूर्वक विदा कर देता।

इस प्रकार वहअपने स्वार्थी दोस्तों से दूर रहने में सफल रहा। एक शाम रोज की तरह ही वह अजनबी मेहमानों की प्रतीक्षा में पुल पर खड़ा था। तभी उसे तीन व्यक्ति आते हुए दिखाई दिए। उन तीनों के पास आने पर उसने उनके बारे में पूछा।

अजनबियों ने उसे बताया कि वे मोसुल के रहने वाले हैं और व्यापार के सिलसिले में यहाँ आए हुए हैं। जबकि वास्तव में वे खलीफा हारून-उल-रशीद,वज़ीर ज़फर और सेवक मसरूर थे। खलीफा रोज शाम को अपने वज़ीर और एक सेवक

के साथ वेश बदलकर शहर का हालचाल जानने के लिए निकलते थे।

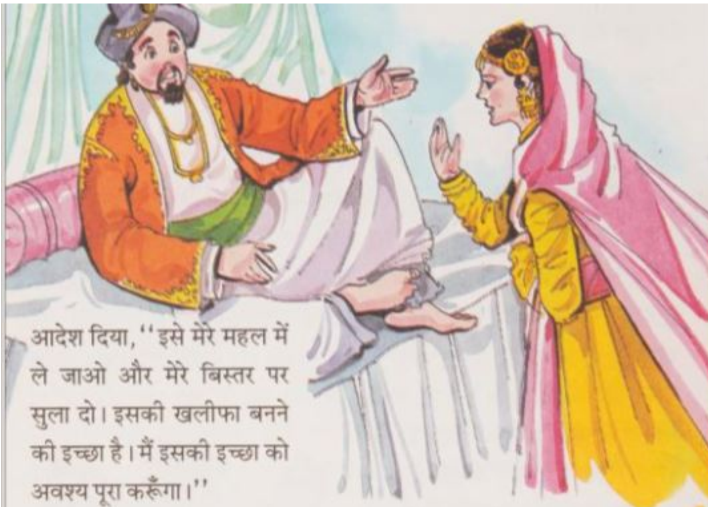
अबुल हसन सच्चाई से अनभिज्ञ उन तीनों को व्यापारी समझकर अपने घर ले आया। उसने उन तीनों को स्वादिष्ट भोजन कराया और पीने के लिए मदिरा दी। उनके मनोरंजन के लिए नाच-गाने की व्यवस्था भी की।

खलीफा उसकी मेहमाननवाज़ी देखकर बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने कहा, ''मैंने तुम्हारी तरह का मेहमाननवाज़ व्यक्ति पहली बार देखा है, जो स्वयं अजनबियों को बुला-बुलाकर अपने घर लाता है और फिर उनकी आवभगत करता है। मैं तुम्हारी इस मेहमाननवाज़ी का कारण जानना चाहता हूँ।''

खलीफा के पूछने पर अबुल हसन ने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुना दी। अबुल हसन बातें करते हुए मदिरा भी पी रहा था। वह एक के बाद एक कई गिलास मदिरा पी गया। फिर वह नशे की हालत में बोला, ''यदि मैं एक दिन के लिए खलीफा बन जाऊँ तो मैं अपने स्वार्थी दोस्तों को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि वे हमेशा याद रखेंगे। वे सजा के हकदार हैं। उन्होंने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।'' ये कहते कहते वह नशे में धुत होकर गिर पड़ा।

खलीफा ने अपने सेवक को





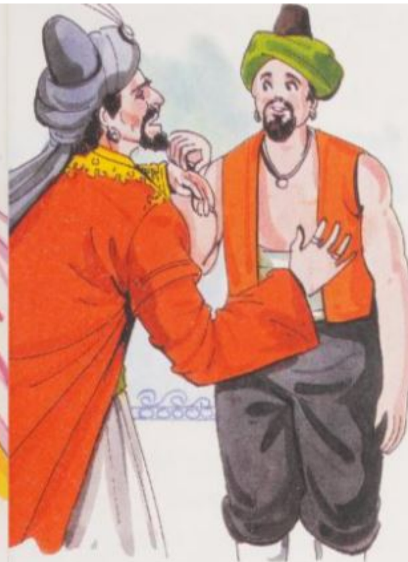
आदेश दिया, "इसे मेरे महल में ले जाओ और मेरे बिस्तर पर सुला दो। इसकी खलीफा बनने की इच्छा है। मैं इसकी इच्छा को अवश्य पूरा करूँगा।"

खलीफा का सेवक अबुल हसन को लेकर तुरंत महल आ गया। महल लाकर उसने अबुल हसन के कपड़े बदले और उसे खलीफा के कपड़े पहनाए। दो सेविकाएं उस पर पंखा झलने लगीं। अबुल हसन इस सबसे बेखबर आराम से सो रहा था। खलीफा ने अपने सभी दरबारियों, सेवक-सेविकाओं को निर्देश दिया कि वे सभी अबुल हसन के साथ खलीफा की तरह व्यवहार करें।

सुबह अबुल हसन को जगाने के लिए एक सुंदर युवती आई। वह उसे जगाते हुए बोली, "खलीफा! आपके जागने का समय हो गया है।"

ये शब्द मिश्री की तरह अबुल हसन के कानों में घुल गए। जब उसने आँखें खोलीं तो सामने एक रूपसी को देखकर चकित रह गया। उसने सोचा कि वह नींद में है और कोई सपना देख रहा है। उसने अपनी आँखें फिर से बंद कर लीं। युवती ने उसे खलीफा कहकर एक बार फिर जगाया। इस बार वह बोला, "क्या कहा तुमने?"

वह बोली, "खलीफा!"



"कौन खलीफा? मैं खलीफा नहीं हूँ। मैं एक व्यापारी हूँ और मेरा नाम अबुल हसन है।" अबुल हसन ने कहा।

वह बोली, "आप तो खलीफा हैं। लगता है, आपकी सेहत कुछ ठीक नहीं है।"

"खलीफा", अबुल हसन ने दोहराया। उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। तभी मसरूर ने कक्ष में प्रवेश किया और अबुल हसन को सलाम करते हुए कहा, "हे खलीफा! मेरे मालिक! दरबार में सब आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आज आप देर तक सोते रह गए। आपका स्वास्थ्य तो ठीक है न!"

मसरूर की बात सुनकर अबुल हसन और भी अधिक चकरा गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि आखिर ये सब हो क्या रहा है? वह बोला, "मुझे समझ नहीं आ रहा है कि मैं सो रहा हूँ या जाग रहा हूँ। कृपया तुम मुझे चिकोटी काटो।"

मसरूर ने अबुल हसन को जोर से चिकोटी काटी। वह दर्द के मारे चीख पड़ा। वह समझ गया कि वह जाग रहा है। वह तुरंत बिस्तर से उठा। सेवक-सेविका उसकी सेवा में उसके आगे-पीछे घूम रहे थे। स्नानादि के बाद उसने खलीफा के सुंदर-सुंदर वस्त्राभूषण पहने। खलीफा के कपड़े पहनकर उसे बहुत खुशी हो रही थी।

इधर खलीफा हारून-उल-रशीद अपनी पत्नी ज़ुबैदा के साथ उसकी गतिविधियों पर नज़र रखे हुए थे। वे अबुल हसन की गतिविधियाँ देखकर हंस रहे थे।

मसरूर अबुल हसन को दरबार में लेकर गया। वह शाही सिंहासन देखकर फौरन

उस पर बैठ गया। उसके सम्मान में सभी दरबारी उठ खड़े हुए और झुककर उसका अभिवादन किया। उसने मुख्य कोतवाल को आदेश देते हुए कहा,''शहर के सभी दुष्ट व्यक्तियों को पकड़ लो और उन्हें पीट-पीटकर शहर से बाहर निकाल दो।'' उसके बाद उसने ज़फर से कहा, ''अबुल हसन के घर जाओ और उसकी माँ को एक हजार सोने की मोहरें देकर आओ।''

इसके बाद उसने दरबार में आए हुए कुछ मामलों का निपटारा किया और वापस अपने कक्ष में लौट आया। उसे भूख लग आई थी। उसने एक सेविका को तुरंत भोजन की व्यवस्था करने का आदेश दिया।

थोड़ी ही देर में कई सेवक-सेविकाएँ स्वादिष्ट व्यंजनों के थाल लेकर उसकी सेवा में उपस्थित हो गए। भोजन के उपरांत उसके मनोरंजन के लिए संगीत-नृत्य का कार्यक्रम शुरू हुआ। वह खूबसूरत नृत्यांगनाओं को देखकर उन पर मुग्ध हुआ जा रहा था। उसने मदिरा का भी सेवन किया। उसने मदिरा कुछ ज्यादा ही पी ली थी। इससे उसे नशा हो गया और अत्यधिक नशा होने के कारण वह बेहोश हो गया। अबुल हसन को बेहोश देखकर खलीफा हारून-उल-रशीद आए और अपने सेवकों से उसे वापस उसके घर छोड़ आने को कहा। उन्होंने सेवकों को निर्देश देते हुए कहा, ''इसे इसके कपड़े पहना दो और इसे इसके बिस्तर पर ही सुलाकर आना।''

सेवक खलीफा के निर्देशानुसार अबुल हसन को उसके घर छोड़ आए। अगले दिन सुबह अबुल हसन ने आँखें बंद किए हुए ही चिल्लाकर कहा, ''हे सुंदर-सुंदर स्त्रियों! क्या आज तुम अपने खलीफा को नहीं जगाओगी? आओ और आकर मुझे जगाओ।''

उसकी माँ के कानों में जब उसके ये शब्द पड़े तो उसने सोचा कि अबुल हसन नींद में बड़बड़ा रहा है। वह उसके कमरे में गई और बोली, ''अरे अबुल! तू अभी तक सो रहा है। देख दिन चढ़ आया है।''

अबुल ने अपनी आँखें खोलीं और सामने अपनी वृद्ध माँ को देखकर बोला, ''हे वृद्धा! तुम कौन हो? तुम्हारी यहाँ आने की हिम्मत कैसे हुई?''



उसकी माँ बोली, "बेटा! तू कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहा है?"

अबुल हसन चिल्लाकर बोला, "चुप हो जा बुढ़िया। खलीफा को बेटा कहती है। जा, चली जा यहाँ से।"

उसकी बात सुनकर उसकी माँ अपने बाल नोंचने लगी और छाती पीट-पीटकर रोते हुए बोली, "ऐ अल्लाह! ये कैसी बातें कर रहा है। खुदा खलीफा को लंबी उम्र दे। वे बहुत ही नेक इंसान हैं। उन्होंने मेरे लिए कल एक हजार सोने की मुहरें भेजी थीं।"

हसन बीच में ही टोकते हुए बोला, "कल मैंने ही तेरे लिए एक हजार सोने की मुहरें भेजी थी। खलीफा और कोई नहीं, मैं हूँ।"

उसकी माँ ने उसे समझाने की बहुत कोशिश की। परंतु अबुल हसन ये मानने को तैयार ही नहीं था कि वह खलीफा नहीं है। उसकी माँ ने सोचा, 'यदि खलीफा को मेरे बेटे की इस मूर्खतापूर्ण गतिविधि के बारे में पता लग गया तो घोर अनर्थ हो जाएगा।'

ये सोचकर वह ज़ोर-ज़ोर से चीखने-चिल्लाने लगी। उसकी आवाज़ सुनकर सभी पड़ोसी वहाँ एकत्र हो गए। उन्होंने जब वृद्धा से चिल्लाने का कारण पूछा तो उसने उन्हें पूरी बात बता दी। उसकी बात सुनने के बाद लोगों ने उसे सलाह देते हुए कहा, "लगता है, तुम्हारा बेटा अपना मानसिक संतुलन खो बैठा है।





तुम उसे पागलखाने भेज दो। उसकी भलाई के लिए यही ठीक होगा।"

अबुल हसन की माँ उसे पागलखाने में छोड़ आई। अबुल हसन पागलखाने में भी सोचता रहा कि वह अबुल हसन है या खलीफा। उसने सोचा, 'यदि वह खलीफा नहीं है तो वह किस प्रकार दुष्टों को सजा दे पाया और कैसे वह अपनी माँ को एक हजार सोने की मुहरें भेज सका था?'

कुछ दिन बाद उसकी माँ उससे मिलने आई। उसने अपनी माँ को 'अम्मी' कहकर पुकारा। अपने बेटे के मुँह से अम्मी शब्द सुनकर उसकी माँ की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा, 'अब मेरा बेटा ठीक हो गया है। वह स्वयं को खलीफा न मानकर अबुल हसन मानने लगा है।' ये सोचकर वह उसे घर ले आई।

अबुल हसन सब कुछ भूलकर फिर से अपने काम में लग गया। परंतु अभी भी उसकी अजनबियों को खाने पर बुलाने की आदत नहीं गई थी।

एक शाम वह शहर की सीमा पर बने पुल पर खड़े होकर मेहमान अजनबियों की प्रतीक्षा कर रहा था कि तभी उसे खलीफा हारून-उल-रशीद, ज़फर और मसरूर आते हुए दिखाई दिए। उसने उन्हें देखकर मुँह फेर लिया। वे तीनों उसके पास आए और अभिवादन करते हुए बोले, "क्या आज आप हमें अपने घर नहीं ले जाओगे?"

अबुल हसन ने कहा, "तुम्हें अपने घर ले जाकर, मैं फिर किसी मुसीबत में नहीं फँसना चाहता। पिछली बार जब मैं तुम लोगों को अपने घर ले गया था तो मुझे बहुत तकलीफ उठानी पड़ी थी। इस बार मैं कोई गलती नहीं करना चाहता।"

खलीफा ने उससे माफी माँगते हुए कहा, "हमारे कारण तुम्हें जो तकलीफ उठानी पड़ी, हम उसके लिए माफी माँगते हैं। इस शहर में हमें तुम्हारा ही आसरा है।"

अबुल हसन ने उन्हें माफ कर दिया। वह उन्हें अपने घर ले आया। रात को जब वे खाना खा रहे थे, तब खलीफा ने कहा, "हसन! हमारे कारण तुम्हें कौन-सी तकलीफ झेलनी पड़ी?"

"मुझे पागलखाने जाना पड़ा।" ये कहकर अबुल हसन ने उन्हें पूरी कहानी सुना दी। उसकी बात सुनकर वे तीनों हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

अबुल हसन बोला, "तुम लोगों को हंसी आ रही है। मुझे ही पता है कि मैंने क्या-क्या झेला है।"

तभी खलीफा ने ज़फर के कान में कुछ कहा। ज़फर के चेहरे पर मुस्कुराहट तैर आई। फिर उसने अपनी जेब से एक चूर्ण निकाला और अबुल हसन की नज़र बचाकर उसके खाने में डाल दिया। वह बेहोशी का चूर्ण था। खाना खाते ही अबुल





हसन बेहोश हो गया। जैसे ही अबुल हसन बेहोश हुआ खलीफा ने मसरूर से कहा, "इसे महल ले चलो और इसे मेरे कपड़े पहनाकर मेरे बिस्तर पर सुला दो। देखें, इस बार क्या होता है?"

मसरूर तुरंत अबुल हसन को लेकर महल गया। अबुल हसन सारी रात गहरी नींद में सोता रहा। अगले दिन सुबह एक सुंदर युवती उसे अपनी मधुर आवाज में जगाते हुए बोली, "खलीफा! आपके उठने का समय हो गया है।" यह सुनते ही वह तुरंत उठकर बैठ गया। वह बोला, "मैं खलीफा नहीं, बल्कि अबुल हसन हूँ। मैं एक व्यापारी हूँ। पिछली बार मैं तुम लोगों के जाल में फँस गया था, परंतु इस बार मैं तुम्हारी बातों में नहीं आऊँगा। मैं जानता हूँ कि ये उन व्यापारियों की चाल है, जो मेरे घर पर रहने आए थे। वे अवश्य ही कोई जादूगर हैं और मेरे साथ कोई खेल खेल रहे हैं। मुझे समझ नहीं आ रहा कि वे ये सब क्यों कर रहे हैं? पता नहीं वे मुझसे कब की दुश्मनी निकाल रहे हैं।"

ये कहकर वह दुखी व परेशान हो गया। उसे परेशान देखकर उसे छिपकर देख रहे खलीफा और उनकी पत्नी ज़ुबैदा उसके सामने आ गए।

अबुल हसन चकित होकर उन्हें देखता ही रह गया। फिर बोला, "खलीफा! मेरे मालिक आप! मैं आपका दास हूँ। आपने मेरे साथ ये सब क्यों किया?"

खलीफा और उसकी पत्नी मुस्कुराने लगे। खलीफा बोले, "अबुल हसन! तुम्हें



हमारे कारण बहुत परेशानी उठानी पड़ी है। तुम्हें बिना गलती के कष्ट भोगना पड़ा। परंतु मैं तुम्हें पुरस्कार देना चाहता हूँ। बताओ तुम पुरस्कार-स्वरूप क्या लेना पसंद करोगे?''

अबुल हसन ने अपने दोनों हाथ जोड़कर कहा, ''मेरी इच्छा है कि मैं अपने खलीफा की सेवा के लिए हर वक्त उनके साथ रहूँ। मेरे मालिक, मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ।''

खलीफा ने अबुल हसन की इच्छा का मान रखते हुए उसे अपने दरबारियों में शामिल कर लिया। अबुल हसन की जिंदगी आराम से चलने लगी। खलीफा ने अबुल हसन की शादी अपनी पत्नी की प्रमुख सेविका नुज़हत से करवा दी। खलीफा और उसकी पत्नी को अबुल हसन और नुज़हत से बेहद लगाव हो गया था। वे उन्हें अपने बच्चों के समान मानते थे। इसलिए उनकी शादी का समारोह एक उत्सव की तरह मनाया गया। खलीफा और उनकी पत्नी ने अबुल हसन और नुज़हत को भेंटस्वरूप कीमती उपहार एवं ढ़ेर सारा धन दिया। फिर अबुल हसन और नुज़हत को आशीर्वाद देते हुए बोले, ''तुम लोग जिंदगी का भरपूर आनंद लो। कभी भी किसी चीज़ की जरूरत हो तो हमसे बेझिझक कहना। अल्लाह तुम लोगों को सदा सुखी एवं प्रसन्न रखे!''



बस, फिर क्या था। अबुल हसन और उसकी पत्नी नुज़हत ने दोनों हाथों से धन लुटाना शुरू कर दिया। उन्हें इस बात का गुमान हो गया था कि उनके सिर पर खलीफा का हाथ है। लापरवाही से पैसा खर्च करने के कारण उनकी सारी धन-दौलत शीघ्र ही समाप्त हो गई। वे खलीफा से भी पैसे नहीं माँग सकते थे, क्योंकि वे खलीफा से पहले ही बहुत कुछ ले चुके थे। अब क्या किया जाए, ये उनकी समझ में नहीं आ रहा था। अचानक अबुल हसन उछल पड़ा। उसके दिमाग में एक योजना उभर आयी। उसने जब नुज़हत को अपनी योजना बताई तो वह भी उछल पड़ी।

योजनानुसार अबुल हसन तुरंत खलीफा के पास पहुँचा और बोला, ''मेरे दाता रहम! मेरी पत्नी नुज़हत का इंतकाल हो गया है।'' ये कहकर वह रोने लगा।

ये दुखद समाचार सुनकर खलीफा ने अबुल हसन को उसकी पत्नी के अंतिम संस्कार के लिए काफी धन दिया।

उधर नुज़हत खलीफा की पत्नी ज़ुबैदा के पास पहुँची और दुखी स्वर में बोली, ''बेगम साहिबा रहम! मेरे ऊपर दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। मेरे पति का इंतकाल हो गया है।'' ये कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी। ज़ुबैदा ने शोक प्रकट करते हुए नुज़हत को उसके पति के अंतिम संस्कार के लिए काफी धन दिया और धैर्य बंधाया।



इस प्रकार अबुल हसन और नुज़हत ने



खलीफा और उसकी पत्नी से बहुत सारा धन प्राप्त कर लिया। शाम के समय खलीफा और उनकी पत्नी ज़ुबैदा बगीचे में टहल रहे थे। खलीफा ने दुख भरे स्वर में कहा, "बेगम! आपको ये जानकर बहुत दुख होगा कि अबुल हसन की पत्नी नुज़हत अब इस दुनिया में नहीं रही।"

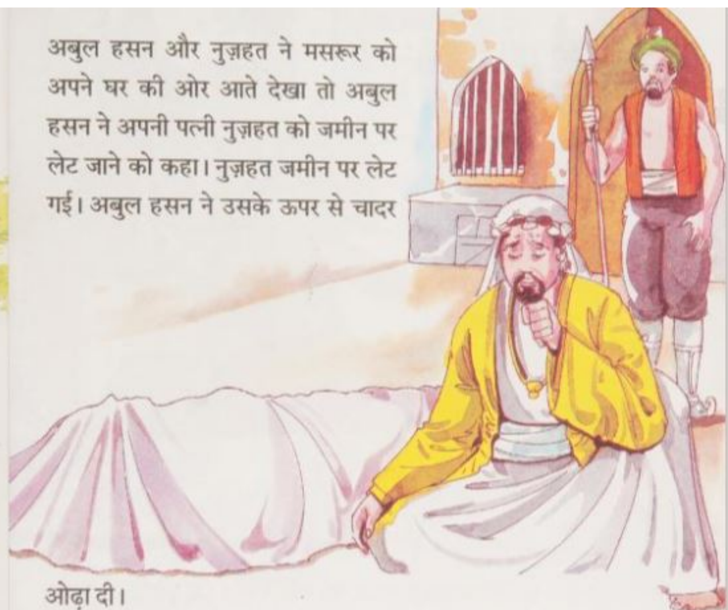
ये सुनकर उनकी पत्नी ज़ुबैदा चौंककर बोली, "ये आप क्या कह रहे हैं? अवश्य ही आपको किसी ने गलत खबर दी है। नुज़हत का नहीं, बल्कि उसके पति अबुल हसन का इंतकाल हुआ है। मेरे पास खुद नुज़हत आई थी। उसी ने मुझे बताया कि अबुल हसन का इंतकाल हो गया है।"

"मुझे भी अबुल हसन ने बताया कि नुज़हत का इंतकाल हो गया है!" खलीफा ने विस्मयपूर्वक कहा।

उन दोनों के बीच थोड़ी देर तक इसी तरह वाद-विवाद होता रहा। वाद-विवाद थमता न देख खलीफा ने अपने सेवक मसरूर को अबुल हसन के घर भेजने का निर्णय लिया, जिससे पता चल सके कि वाकई में किसकी मृत्यु हुई है।

खलीफा का आदेश पाते ही मसरूर अबुल हसन के घर की ओर चल पड़ा। जब

अबुल हसन और नुज़हत ने मसरूर को अपने घर की ओर आते देखा तो अबुल हसन ने अपनी पत्नी नुज़हत को जमीन पर लेट जाने को कहा। नुज़हत जमीन पर लेट गई। अबुल हसन ने उसके ऊपर से चादर



ओढ़ा दी।

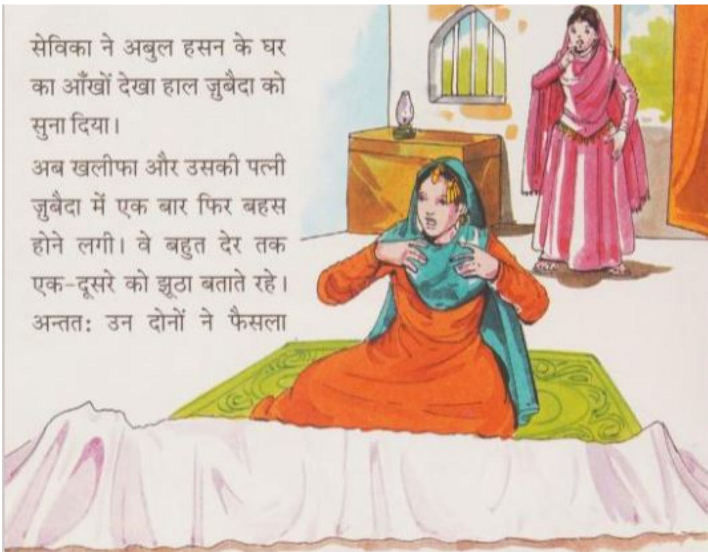
मसरूर ने अबुल हसन के घर के अंदर प्रवेश किया तो उसने देखा कि नुज़हत मृत पड़ी हुई है और अबुल हसन उसके शव के पास बैठकर आँसू बहा रहा है।

वह तुरंत वापस लौट आया और खलीफा को आँखों देखा हाल कह सुनाया। खलीफा ने ज़ुबैदा से कहा, "देखा, मैंने कहा था न कि नुज़हत की मौत हुई है, परंतु आप मेरी सुनती कहाँ हैं?"

ज़ुबैदा को बहुत बुरा लगा। लेकिन साथ ही वह हैरान भी थी कि नुज़हत ने तो स्वयं उसे आकर बताया था कि अबुल हसन की मृत्यु हो गई है। परंतु ये मसरूर तो कुछ और ही कह रहा है। मुझे सच्चाई का पता लगाना ही होगा। ये सोचकर ज़ुबैदा ने अपनी एक सेविका को अबुल हसन के घर भेजा। जब अबुल हसन और नुज़हत ने ज़ुबैदा की सेविका को आते देखा तो अबुल हसन चादर ओढ़कर तुरंत जमीन पर लेट गया। नुज़हत उसके पास बैठकर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।

सेविका ने अबुल हसन के घर का आँखों देखा हाल ज़ुबैदा को सुना दिया।

अब खलीफा और उसकी पत्नी ज़ुबैदा में एक बार फिर बहस होने लगी। वे बहुत देर तक एक-दूसरे को झूठा बताते रहे। अन्ततः उन दोनों ने फैसला किया कि वे दोनों इकट्ठे अबुल हसन के घर जाएंगे और इस पहेली का रहस्य सुलझाएंगे।

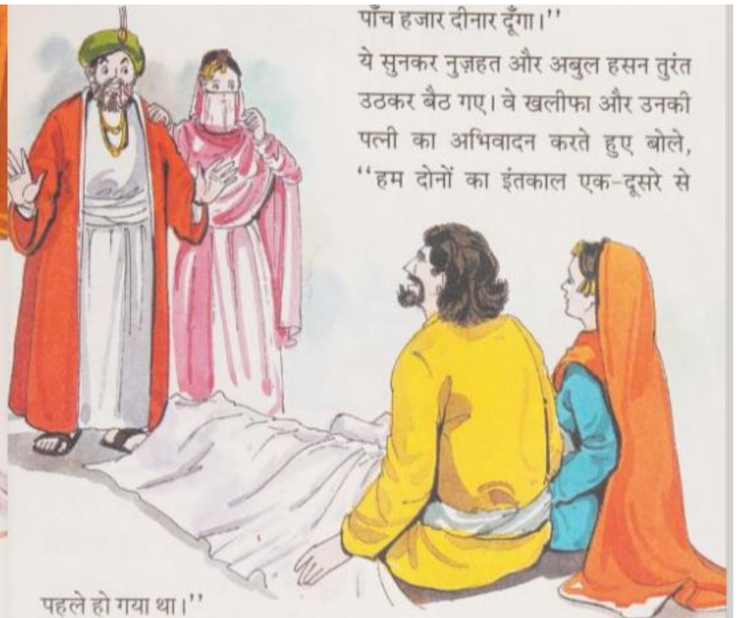


ये निर्णय कर खलीफा और उनकी पत्नी शीघ्र ही अबुल हसन के घर जा पहुँचे। खलीफा और उनकी पत्नी को घर आते देखकर अबुल हसन और नुज़हत दोनों ही चादर ओढ़कर जमीन पर लेट गए। जब खलीफा और उनकी पत्नी ने अबुल हसन और नुज़हत दोनों को मृत देखा तो वे स्तब्ध रह गए।

खलीफा ने कहा, ''ऐ अल्लाह ! यहाँ तो ये दोनों ही मृत पड़े हैं। परंतु मैं जानता हूँ कि अबुल हसन से पहले नुज़हत का इंतकाल हुआ होगा।''

उनकी पत्नी बोली, ''मुझे पक्का यकीन है कि अबुल हसन का इंतकाल पहले हुआ होगा।''

खलीफा ने असमंजस की स्थिति में कहा, ''कोई तो बताए कि इन दोनों में से पहले किसका इंतकाल हुआ था। यदि कोई मुझे ये सच्चाई बता देगा तो मैं उसे पाँच हजार दीनार दूँगा।''



ये सुनकर नुज़हत और अबुल हसन तुरंत उठकर बैठ गए। वे खलीफा और उनकी पत्नी का अभिवादन करते हुए बोले, ''हम दोनों का इंतकाल एक-दूसरे से पहले हो गया था।''

उन दोनों को जीवित देखकर खलीफा और उनकी पत्नी क्रोध में भरकर एक साथ चिल्लाते हुए बोले, ''ये क्या मज़ाक है? तुम लोगों की हमें बेवकूफ बनाने की हिम्मत कैसे हुई?'' अबुल हसन और नुज़हत दोनों खलीफा और उनकी पत्नी के पैरों पर गिर पड़े। दोनों ने माफी माँगते हुए उन्हें पूरी कहानी सुना दी। उनकी बात सुनकर खलीफा और उनकी पत्नी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए। खलीफा ने कहा, ''तुमने सच में बहुत अच्छी योजना बनाई थी। तुम्हारी इस योजना ने हम दोनों को गहरे संकट में डाल दिया। तुम्हारी योजना की दाद देनी पड़ेगी। मैं तुम्हें तुम्हारी चतुराई के लिए पुरस्कारस्वरूप दस हजार दीनार देता हूँ।''

इस प्रकार अबुल हसन ने अपनी चतुराई से खलीफा से बिना माँगे ही बहुत सारी दौलत हासिल कर ली और वह फिर से पहले जैसा धनी हो गया।

राजा और हकीम



बहुत समय पहले यूनान में एक शक्तिशाली राजा राज्य करता था। उसने अपनी शक्ति एवं कुशलता के बल पर कई युद्ध जीते थे। राजा के पास सब कुछ था। फिर भी वह उदास एवं दुखी रहता था। राजा को कोढ़ था। उसने इस बीमारी का बहुत इलाज करवाया, परंतु वह ठीक नहीं हुआ। वह हर वक्त अपनी इस बीमारी के बारे में सोच-सोचकर दुख में घुलता रहता। अन्ततः थक-हारकर उसने अपनी बीमारी को लाइलाज मान लिया।

एक दिन उनके शहर में एक वृद्ध विद्वान हकीम आया। वह चिकित्सा के साथ-साथ ज्योतिष एवं खगोल-शास्त्र का भी अच्छा जानकार था। जब उसे पता चला कि राजा को कोढ़ है और बहुत इलाज करवाने पर भी ठीक नहीं हो रहा तो वह राजा के पास पहुँचा। उसने कहा, ''महाराज! जब मुझे पता चला कि किसी भी हकीम की दवाई आपकी बीमारी को ठीक नहीं कर सकी तो मैं स्वयं को नहीं रोक सका। मैं आपकी बीमारी के उपचार के लिए आपके पास आया हूँ।''

''महाराज! जड़ी-बूटियों में बहुत शक्ति होती है। वे किसी भी बीमारी का उपचार कर सकने में सक्षम होती हैं। यदि आप मुझे अपनी सेवा का एक मौका दें



तो मैं आपकी बीमारी को ठीक कर सकता हूँ।''

हकीम की बात सुनकर राजा के मन में उम्मीद की एक किरण जागी। उसने सोचा, 'शायद इस हकीम की औषधि काम कर जाए। इसे एक मौका देने में क्या हर्ज है?'

यह सोचकर राजा बोला, ''ठीक है। मैं तुम्हें एक मौका देता हूँ। यदि तुमने मुझे इस बीमारी से मुक्ति दिला दी तो मैं तुम्हें बहुत सारा धन एवं कीमती रत्न-जवाहरात दूँगा।''

राजा से आज्ञा प्राप्त कर हकीम औषधि बनाने के कार्य में जुट गया। हकीम ने ढेरों उपयोगी जड़ी-बूटियाँ एकत्र कीं और उन्हें पीसकर एक लेप बना लिया। तत्पश्चात् हकीम राजा के पास गया और बोला, ''महाराज! मैंने आपके लिए उपयोगी जड़ी-बूटियों को पीसकर एक लेप तैयार किया है। आप इस लेप को अपने पूरे शरीर पर लगाकर पूरे शरीर को कपड़े से ढक लें। लगभग दो घंटे तक इसी दशा में रहने के बाद फिर गुलाब जल से स्नान कर लें। स्नान करने के बाद सो जाएं। ऊपर वाले ने चाहा तो आप बिल्कुल ठीक हो जाएंगे।''

राजा ने हकीम के निर्देशों का पालन किया। अगले दिन जब राजा सोकर उठा तो वह बिल्कुल ठीक हो गया था। उसकी लाइलाज बीमारी ठीक हो गई थी। राजा खुशी के मारे उछल पड़ा। अगले दिन जब हकीम राजा से मिलने गया तो राजा ने उसे अपने गले से लगा लिया और उसे सम्मान देते हुए अपने बगल में





बैठाया। राजा ने कहा, ''हे वृद्ध हकीम! मैं तुम्हारा बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। तुम्हारी औषधि ने चमत्कार कर दिया। तुम्हारे कारण आज मैं स्वस्थ हो सका हूँ। मुझे लंबी बीमारी से मुक्ति मिल गई है।'' ये कहकर राजा ने हकीम को फिर गले लगा लिया। स्वस्थ होने की खुशी राजा के चेहरे पर साफ झलक रही थी।

राजा ने हकीम को पुरस्कारस्वरूप दस हजार सोने की मोहरें और कीमती रत्न-जवहारात भेंट किए। राजा ने हकीम के सम्मान में महाभोज दिया, जिसमें सभी नगरवासियों ने भाग लिया। सभी ने राजा को पुन: स्वस्थ करने के लिए हकीम को बधाइयाँ दीं। सभी लोग बहुत खुश थे।

परंतु एक व्यक्ति ऐसा भी था, जो हकीम से चिढ़ा हुआ था। उसने हकीम को न तो बधाई दी और न ही वह राजा के स्वस्थ होने से प्रसन्न था। वह व्यक्ति और कोई नहीं बल्कि राजा का वज़ीर था। उसे ये कतई पसंद नहीं था कि एक विदेशी व्यक्ति की राजा से घनिष्ठता हो। उसे हकीम से ईर्ष्या हो रही थी। वह हर हाल में हकीम को राजा से दूर करना चाहता था। अंतत: उसने हकीम को राजा से दूर करने की एक योजना बनाई।

महाभोज के अगले दिन वज़ीर राजा के पास गया और बोला, ''महाराज! मैं आपसे एक बात कहने की इजाज़त चाहता हूँ। यदि आप मेरी जान की सलामती

का वादा करें तो मैं कुछ कहूँ।''

राजा ने कहा, ''कहो, तुम कौन-सी आवश्यक बात करना चाहते हो?''

वज़ीर बोला, ''महाराज! मैं आपका सेवक हूँ। मेरा कर्तव्य है कि मैं आपको आने वाले खतरे से आगाह करूँ। आपकी रक्षा करना मेरा धर्म है।''

वज़ीर को चापलूसी करता देखकर राजा ने कड़े स्वर में कहा, ''तुम्हें जो कहना है, स्पष्ट शब्दों में कहो। पहेलियाँ मत बुझाओ।''

वज़ीर बोला, ''महाराज! पड़ोसी राज्य का एक जासूस हमारे राज्य में घुस आया है। वह न सिर्फ आपको, बल्कि हमारे राज्य को भी भारी क्षति पहुँचाने की मंशा रखता है।''

राजा ने चौंकते हुए पूछा, ''कौन है वह? क्या तुम उस व्यक्ति के बारे में जानते हो?''

वज़ीर बोला, ''महाराज! गुस्ताख़ी माफ हो। पड़ोसी राज्य का वह जासूस और कोई नहीं, बल्कि हकीम है।''

वज़ीर की बात सुनकर राजा को क्रोध आ गया। वह क्रोध से चिल्लाते हुए बोला, ''तुम ये क्या अनाप-शनाप बक रहे हो। तुम उस व्यक्ति पर आरोप लगा रहे हो,



जिसने हमें नया जीवन दिया है। हम अच्छी तरह जानते हैं कि तुम ऐसा क्यों कह रहे हो। तुम ईर्ष्यावश हकीम पर पड़ोसी राज्य का जासूस होने का आरोप लगा रहे हो। तुमसे हकीम का सम्मान व उसकी हमसे घनिष्ठता देखी नहीं जा रही है। तुम उसे अपने रास्ते से हटाना चाहते हो।''



वज़ीर बोला, ''महाराज! मैं जानता था कि आप मेरी बातों पर विश्वास नहीं करेंगे। मैं हकीम को कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता। परंतु आपके जीवन की रक्षा करना मेरा धर्म है। मुझे मालूम था कि आप मेरी बात पर विश्वास नहीं करेंगे। वैसे इस बात पर विश्वास करना है भी कुछ मुश्किल। परंतु महाराज....।''

''परंतु-वरंतु कुछ नहीं। अरे! हकीम तो बहुत ही नेकदिल इंसान है। उसने मुझे स्वस्थ किया है। तुम्हें एक भले मानुस पर ऐसा घटिया आरोप लगाते हुए शर्म नहीं आ रही!'' राजा ने कहा।

''वह सब दिखावे के लिए है महाराज। वह आपका विश्वास जीतकर आपको और राज्य को क्षति पहुँचाना चाहता है। वह इसी उद्देश्य से यहाँ आया है।'' वज़ीर ने राजा को विश्वास में लेते हुए कहा।

वज़ीर के तर्क सुनकर राजा के मन में संदेह का बीज पड़ गया। उसने सोचा, 'हो सकता है, वज़ीर सत्य कह रहा हो। आखिर मैं हकीम के बारे में जानता ही कितना हूँ। हकीम मेरा विश्वास जीतकर अपनी योजना को क्रियान्वित करना चाहता हो।' ये सोचकर राजा ने वज़ीर से पूछा, ''तो तुम ही बताओ कि मुझे क्या

करना चाहिए?''

वज़ीर के चेहरे पर कुटिल मुस्कान तैर आई। वह अपने उद्देश्य में सफल जो हो गया था। अपने मनोभावों को छुपाते हुए वज़ीर ने कहा, ''महाराज! इससे पहले कि हकीम को ये आभास हो कि हमें उसकी सच्चाई पता लग गई है और वह भाग निकले, हमें उसका सिर काट कर धड़ से अलग कर देना चाहिए।''

राजा को वजीर की बातों पर पूर्ण विश्वास हो गया था। वे वज़ीर की बात से पूरी तरह सहमत थे।

उधर हकीम इन सबसे बेखबर राजा द्वारा दिए गए सम्मान से भाव-विभोर था। अगले दिन राजा ने हकीम को दरबार में बुला भेजा। हकीम के आने पर राजा ने कहा, ''आओ हकीम, आओ। मैंने तुम्हें तुम्हारे काम का उचित पुरस्कार देने के लिए बुलाया है।''

हकीम बोला, ''महाराज! आप मुझे पहले ही बहुत सम्मान और पुरस्कार दे चुके हैं। मैं आपका ये एहसान कभी नहीं भूलूँगा।''

''आज तो मैं तुम्हें वो सम्मान दूँगा, जिसके तुम सच में हकदार हो। और वह सम्मान है, मृत्युदंड।'' राजा ने कहा।



''मृत्युदंड! महाराज, ये आप क्या कह रहे हैं?'' हकीम ने चौंकते हुए कहा।

राजा ने क्रोधित होकर कहा, ''मृत्युदंड! यही सजा है तुम्हारी। तुम पड़ोसी देश के जासूस हो और मेरा विश्वास जीतकर तुम मुझे क्षति पहुँचाना चाहते थे। परंतु मुझे सब



मालूम हो गया। मैं तुम्हें मृत्युदंड की सजा सुनाता हूँ।'' ये कहकर राजा ने अपने सिपाहियों से कहा, ''इसका सिर काटकर इसे हमेशा-हमेशा के लिए मौत की गोद में सुला दो।''

ये सुनकर हकीम ने कहा, ''महाराज! यदि मेरा उद्देश्य आपको क्षति पहुँचाना होता तो मैं कभी आपको स्वस्थ नहीं करता। परंतु मैं अपनी सफाई में कुछ नहीं कहना चाहता। आपको मेरी बातों पर विश्वास भी नहीं होगा। लेकिन हाँ, आपने जो पुरस्कार मुझे दिया है, मैं वह आपको अवश्य लौटाना चाहूँगा। कृपा करके मुझे एक दिन का समय दे दीजिए।''

राजा हकीम की बात मान गया। अगले दिन हकीम राजा के लिए एक मोटी-सी किताब लेकर आया और बोला, ''महाराज! यह जादू की किताब है। मैं आपके उपहार के बदले आपको ये किताब भेंट कर रहा हूँ। आप मेरा सिर काटने के बाद उसे एक थाली में रखकर किताब के पहले पृष्ठ से एक-एक करके इक्कीसवें तक पलटना। इक्कीसवाँ पृष्ठ चौथे अध्याय में है। आपको ये जानकर आश्चर्य होगा कि तब यदि आप मेरे सिर से कोई भी प्रश्न पूछेंगे तो वह आपके

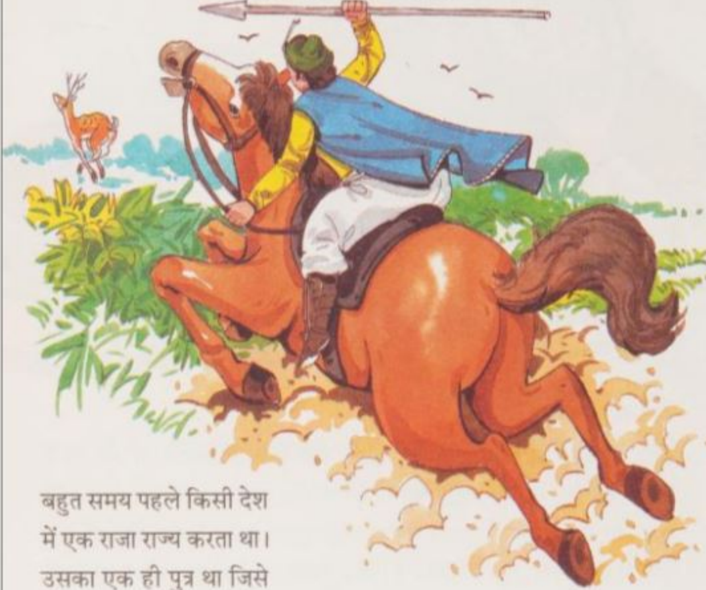


प्रश्न का उत्तर देगा।''

राजा ने हकीम से किताब ले ली। उसके बाद राजा के आदेश पर जल्लाद ने हकीम का सिर धड़ से अलग कर दिया। राजा ने हकीम का सिर एक थाली में रखा और उस थाली को सामने रखकर हकीम द्वारा दी गई किताब के एक-एक पृष्ठ पलटने लगा। उसने हकीम ने निर्देशानुसार इक्कीस पृष्ठ पलटे। वह पृष्ठ पलटते हुए अगुँली को बार-बार अपने मुँह में ले जा रहा था। अचानक उसे चक्कर आने लगा। राजा इस बात से अनभिज्ञ था कि हकीम ने किताब के पृष्ठों पर विष लगा दिया था, जो कि पृष्ठ पलटने के साथ ही राजा के शरीर में प्रवेश कर गया था। राजा ने हकीम के सिर से पूछा, ''ये मुझे क्या हो रहा है?''

हकीम के मृत सिर से आवाज आई, ''तुम मेरे पास आ रहे हो। तुम एक कृतघ्न राजा हो। तुम्हारी कृतघ्नता की यही सजा है। तुमने जो मुझे दिया है, मैंने तुम्हें वही वापस कर दिया।'' ये कहकर हकीम का सिर हमेशा-हमेशा के लिए खामोश हो गया। राजा को अपने किए की सजा मिल गई थी। उसने बिना सच्चाई जाने एक निर्दोष व्यक्ति को सजा दी थी।

लापरवाह वज़ीर



बहुत समय पहले किसी देश में एक राजा राज्य करता था। उसका एक ही पुत्र था जिसे वह अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता था। उसके पुत्र को शिकार करने का बहुत शौक था। शिकार की तलाश में वह कई-कई दिनों तक वन में भटकता रहता। राजा को हर समय उसकी चिंता लगी रहती। इसलिए राजा ने अपने विश्वसनीय वज़ीर को हर वक्त अपने बेटे के साथ रहने का आदेश दिया। एक दिन राजकुमार काफी दिनों बाद वन में शिकार करने गया। उसके साथ वज़ीर और कुछ सैनिक भी थे। वन में राजकुमार को एक हिरन दिखाई दिया। राजकुमार हिरन का शिकार करने के लिए उसके पीछे हो लिया। वह हिरन का पीछा करते-करते दूर निकल गया और अपने साथियों से बिछुड़ गया। जब उसे जंगल में भटकते हुए शाम हो गई तो वह जंगल से बाहर निकलने का रास्ता तलाशने लगा, परंतु उसे कहीं कोई रास्ता दिखाई नहीं

दिया।



तभी उसे सामने से एक सुंदर युवती आती हुई दिखाई दी। वह युवती बहुत परेशान लग रही थी। राजकुमार उसके पास जाकर बोला, "हे सुंदरी! तुम कौन हो और इस घने वन में अकेली क्या कर रही हो?"

युवती ने कहा, "मैं हिन्द की राजकुमारी हूँ। मैं अपने काफिले के साथ यहाँ से होकर गुज़र रही थी कि तभी मेरे घोड़े को ठोकर लगी और मैं घोड़े से नीचे गिरकर बेहोश हो गई। मेरा काफिला आगे बढ़ गया। फिर जब मुझे होश आया तो मैंने खुद को इस भयानक बियाबान वन में पाया। अब मैं बाहर निकलने का रास्ता तलाश रही हूँ।"

राजकुमार ने कहा, "मैं भी वन से बाहर निकलने का रास्ता तलाश रहा हूँ। आओ, मैं तुम्हें वन से बाहर तक छोड़ दूँ।"

यह कहकर राजकुमार ने उस युवती को अपने साथ घोड़े पर बैठा लिया। वन का आधा रास्ता तय करने के बाद उस युवती ने राजकुमार से एक खंडहरनुमा घर के पास घोड़ा रोकने को कहा। राजकुमार ने घोड़ा रोक लिया। वह युवती घोड़े से उतर गई और बोली, "राजकुमार! तुम कहीं जाना मत। मैं अभी आती हूँ।"

यह कहकर वह खंडहरनुमा घर के अंदर चली गई। काफी समय बीत जाने पर भी जब वह युवती वापस नहीं आई तो राजकुमार को उसकी चिंता होने लगी। वह युवती की तलाश में खंडहरनुमा घर की ओर बढ़ चला। खंडहर के दरवाजे पर

पहुँचकर उसके कानों में एक आवाज़ पड़ी। यह आवाज़ उस युवती की थी। वह किसी से कह रही थी, ''बेटा! आज मैं तुम्हारे लिए एक सुंदर और स्वस्थ नवयुवक को लेकर आई हूँ। उसको खाने में निश्चित ही तुम्हें आनंद प्राप्त होगा।''

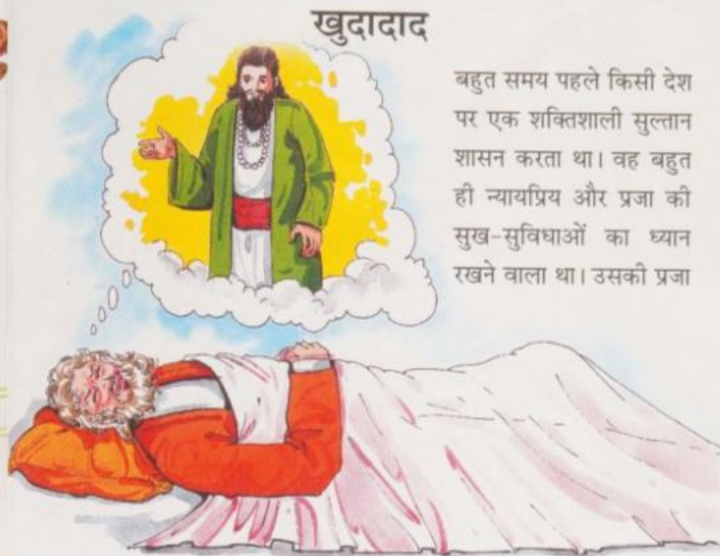


दूसरी ओर से एक बच्चे की आवाज़ आई। वह बोला, ''माँ! मुझे मानव का माँस खाना बहुत पसंद है। आज मुझे स्वादिष्ट भोजन खाने को मिलेगा।''

ये सुनकर राजकुमार के पैरों तले जमीन खिसक गई। वह जिसे राजकुमारी समझ रहा था, वह नरभक्षिणी निकली। राजकुमार डर के मारे थर-थर काँपने लगा। उसे अपनी जीवन-लीला समाप्त होती दिखाई दी। लेकिन उसने तुरंत ही स्वयं को संभाल लिया। वह तेज़ी से दौड़कर अपने घोड़े पर चढ़ा और उसको सरपट दौड़ाता हुआ शहर की ओर चल पड़ा। वह रास्ते में कहीं नहीं रुका, और उसने महल पहुँचकर ही दम लिया। महल पहुँचकर उसने अपने पिता को अपनी पूरी यात्रा के बारे में बताया। उसके पिता को ये सुनकर भारी क्रोध आया कि वज़ीर ने राजकुमार को वन में अकेले छोड़ दिया और राजकुमार की सुरक्षा का ध्यान भी नहीं रखा।

राजा ने लापरवाह वज़ीर को फाँसी की सजा सुनाई। बेचारा वज़ीर अपनी छोटी-सी लापरवाही के कारण अपनी जान से हाथ धो बैठा।

खुदादाद



बहुत समय पहले किसी देश पर एक शक्तिशाली सुल्तान शासन करता था। वह बहुत ही न्यायप्रिय और प्रजा की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने वाला था। उसकी प्रजा भी उससे बहुत स्नेह करती थी। सुल्तान के पास धन-दौलत की कोई कमी नहीं थी, फिर भी वह हमेशा दुखी रहता था। और इस दुख का कारण था-उसके कोई संतान न होना।

उसने संतान की चाह में कई शादियाँ कीं, परंतु वह फिर भी संतान सुख से वंचित रहा। वह हर वक्त अल्लाह से एक ही दुआ माँगता कि उसे उसका वारिस मिल जाए। एक रात सुल्तान के स्वप्न में एक फकीर आया और सुल्तान से कहा, ''ऐ सुल्तान! सुबह उठकर तुम अपने बगीचे में जाना और बगीचे से लाल अनार तोड़कर उसके दाने खाना। उसके बाद अल्लाह की इबादत करना। वह तुझ पर अवश्य ही अपनी मेहर करेंगे।''

अगले दिन सुबह जब सुल्तान जागा तो उसके दिमाग में रात का स्वप्न कौंध रहा था। सुल्तान ने स्वयं से कहा, 'मैंने रात को जो स्वप्न देखा, उसका क्या अर्थ हो सकता है? क्या वो स्वप्न सच होगा? सच हो, या न हो परंतु स्वप्न वाले फकीर



की बात मानने में हर्ज ही क्या है।'

सुल्तान तुरंत बगीचे में गया। उसने लाल अनार तोड़कर उसके दाने खाए और उसके बाद अल्लाह की इबादत की।

अनार के दाने खाने के बाद सुल्तान को अधिक इंतजार नहीं करना पड़ा। अगले नौ महीनों बाद उसकी सभी पत्नियों ने एक-एक बच्चे को जन्म दिया। सिर्फ एक पत्नी संतान सुख से वंचित रही। उसका नाम फिरोज़ा था। यूं तो सुल्तान बच्चों के जन्म से बहुत खुश था लेकिन वह सुल्ताना फिरोज़ा से भारी नाराज़ था। उसने सोचा, 'अल्लाह ने मेरी सभी बेगमों की सूनी कोख भर दी, सिर्फ फिरोज़ा ही संतान सुख से वंचित रह गई। ये अवश्य ही दुष्टा व पापिन है, तभी तो अल्लाह ने इस पर अपना करम नहीं किया। फिरोज़ा जैसी दुष्ट औरत को जीने का कोई अधिकार नहीं है।'

ये सोचकर सुल्तान ने अपने वज़ीर को फिरोज़ा को जान से मारने का आदेश दिया। वज़ीर ने सुल्तान से इसका कारण पूछा तो सुल्तान ने अपने विचार उसके सामने रख दिए। वज़ीर एक नेकदिल इंसान था। वह बोला, ''सुल्तान! बेगम फिरोज़ा को क्यों मरवाते हैं? यदि वह बुरी हैं तो अल्लाह ही उन्हें सजा देगा। हो सकता है कि बेगम फिरोज़ा गर्भवती हों, लेकिन हमें इसका अनुमान न हो। यदि दुविधा की स्थिति में उन्हें मार दिया गया तो हमें दो जीवन समाप्त करने का पाप लगेगा।''



सुल्तान ने वज़ीर द्वारा कही गई बात पर कुछ देर सोचा फिर वज़ीर से



बोला, ''ठीक है। परंतु मैं अब फिरोज़ा की शक्ल भी नहीं देखना चाहता। तुम उसे मेरे भतीजे समीर के पास समारिया छोड़ आओ और उसे कहना कि यदि फिरोज़ा बच्चे को जन्म दे तो वह तुरंत मुझे इसकी सूचना दे।''

वज़ीर सुल्तान के आदेशानुसार फिरोज़ा को सुल्तान के भतीजे समीर के पास छोड़ आया। कुछ महीनों बाद फिरोज़ा ने एक बेटे को जन्म दिया। समीर ने तुरंत ये खबर सुल्तान को भेजी। सुल्तान ने समीर के पास संदेश भिजवाया कि वह अपनी चाची और नवजात शिशु की देखभाल करे और बच्चे का नाम 'खुदादाद' रखे। खुदादाद का अर्थ है-अल्लाह का दिया तोहफा। समीर ने राजकुमार की जिम्मेदारी उठाते हुए उसे उचित शिक्षा दी। अत: राजकुमार सभी कलाओं में पारंगत हो गया। युद्ध-कौशल में तो उसका कोई सानी नहीं था। पूरे समारिया में सभी उसकी योग्यता का लोहा मानते थे।

एक दिन खुदादाद ने अपनी माँ से कहा, ''माँ! मैं यहाँ रहकर अपनी योग्यता का सही उपयोग नहीं कर पा रहा हूँ। मैं सुल्तान की सेवा करना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि सुल्तान का अक्सर अपने शत्रुओं से युद्ध होता रहता है। सुल्तान मेरे पिता भी हैं। मैं युद्ध में सुल्तान का दायाँ हाथ बनकर उनकी सहायता करना चाहता हूँ।

इस बारे में आप क्या कहती हैं?''

उसकी माँ बोली, ''बेटा! मुझे ये सुनकर बहुत खुशी हो रही है कि तुम अपनी योग्यता का उपयोग अपने पिता के लिए करना चाहते हो। परंतु बेटा, सुल्तान को अभी ये मत बताना कि तुम उनके पुत्र हो। जब उन्हें तुम्हारी काबिलियत देखकर तुम पर गर्व महसूस होगा, तब वे ये जानकर अति प्रसन्न होंगे कि तुम और कोई नहीं बल्कि स्वयं उनके बेटे हो। मेरे बेटे! तुम नहीं, तुम्हारी काबिलियत बोलेगी। अल्लाह तुम्हें तुम्हारे मकसद में कामयाब करे!''

खुदादाद ने अपनी माँ से आशीर्वाद लिया और उनसे वादा किया कि वह उनके निर्देशों का पालन करेगा और अपनी काबिलियत के दम पर सुल्तान का प्रेम और विश्वास जीतकर रहेगा।

खुदादाद ने अपनी माँ से आज्ञा ली और सुल्तान के पास जा पहुँचा। सुल्तान ने जब उसे देखा तो उसका व्यक्तित्व देखकर वह उससे प्रभावित हो गया। सुल्तान ने खुदादाद से पूछा, ''तुम कौन हो और यहाँ क्यों आए हो?''

खुदादाद ने कहा, ''मेरे पिता काहिरा के अमीर हैं। मुझे घूमने का शौक है। इसलिए मैं अक्सर देश-विदेश घूमता रहता हूँ। बस घूमते-घूमते यहाँ आ पहुँचा। मैंने आपकी दयालुता के बारे में सुना तो आपसे मिलने चला आया। मेरी इच्छा है कि मैं आपकी सेवा करूँ।''

सुल्तान ने उसकी बातों से प्रभावित होकर उसे अपनी सेना का सेनानायक बना दिया।



खुदादाद के नेतृत्व में सेना ने कई युद्ध जीते। उसने सेना को युद्ध के नए-नए तरीके सिखाए और युद्ध-कौशल में उन्हें निपुण बनाया। फलस्वरूप सुल्तान की सेना पहले से अधिक अनुशासित और सुगठित हो गई। सुल्तान की सेना देखकर शत्रु खौफ खाने लगे। सुल्तान खुदादाद की योग्यता से बहुत प्रसन्न था। सुल्तान की नज़रों में उसकी इज्ज़त बढ़ गई थी और वे उस पर बहुत ज्यादा विश्वास करने लगे थे। सुल्तान का खुदादाद के प्रति प्रेम व विश्वास देखकर दूसरे राजकुमार उससे ईर्ष्या करने लके थे।

सुल्तान ने खुदादाद की बुद्धिमानी एवं योग्यता देखकर उसे दूसरे राजकुमारो को शिक्षा देने के लिए कहा। अब तो राजकुमार खुदादाद से और नफरत करने लगे। वे आपस में बोले, ''पता नहीं सुल्तान इस विदेशी के ऊपर इतने मेहरबान क्यों हैं? ये हमारा हमउम्र ही तो है, परंतु सुल्तान ने इसे हमारा गुरु बना दिया है। ये तो हम लोगों की सरासर बेइज़्ज़ती है।''

राजकुमार खुदादाद को अपने रास्ते से हटाने के बारे में सोचने लगे। उनमें से एक राजकुमार बोला, ''मेरे पास एक योजना है। ध्यान से सुनो।''



ये कहकर उसने धीरे से कुछ कहा। उसकी बात सुनकर सभी राजकुमारों के चेहरों पर खुशी झलक आई। योजनानुसार, सभी राजकुमार सुल्तान से आज्ञा लेकर खुदादाद के नेतृत्व में जंगल में शिकार करने गए। अचानक सभी राजकुमार गायब हो गए। खुदादाद राजकुमारों को गायब देखकर परेशान हो गया। उसे सभी सुल्तान की बात याद हो आई कि सुल्तान ने उसे राजकुमारों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सौंपी थी और सूर्यास्त से पहले महल लौट आने को कहा था।



अत: वह राजकुमारों की तलाश में जोर-शोर से जुट गया। वह दो दिन तक पागलों की तरह राजकुमारों को खोजता रहा, परंतु उनका कुछ अता-पता नहीं चला। इसलिए थक-हारकर वह तीसरे दिन अकेला ही महल लौट आया।

सुल्तान ने उसे अकेला आया देखकर राजकुमारों के विषय में पूछा। खुदादाद ने पूरी बात विस्तारपूर्वक बता दी।

सुल्तान ने क्रोधित होकर कहा, ''दुष्ट! मेरे बेटों को छुपाकर कह रहा है कि वे गायब हो गए। ऐ दुष्ट, पापी! यदि मेरे बेटों का बाल भी बाँका हुआ तो मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगा। जाओ और जाकर उन्हें ढूँढ़कर लाओ। वरना तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।''

खुदादाद सुल्तान के व्यवहार से बहुत दुखी हुआ और बिना कुछ कहे अपने घोड़े पर सवार होकर राजकुमारों को खोजने के लिए निकल पड़ा।

उसने राजकुमारों को रेगिस्तान, शहर, नगर आदि सब जगह ढूँढ़ा, परंतु उनका



कोई पता नहीं लगा। वह कई दिनों तक उन्हें ढूँढ़ता रहा, परंतु उसके हाथ असफलता ही लगी। वह कई दिनों तक इधर से उधर भटकता रहा। अंत में वह राजकुमारों को ढूँढ़ता-ढूँढ़ता एक घने जंगल में पहुँचा। जंगल के बीच में एक सुंदर महल देखकर वह चकित रह गया। वह महल के पास गया और घोड़ा रोककर महल की ओर देखने लगा। तभी उसे महल की खिड़की से एक युवती बाहर झाँकती हुई दिखाई दी। वह युवती बहुत सुंदर थी। परंतु देखने से वह बहुत गरीब लग रही थी। वह बहुत भयभीत थी और भय के कारण उसका चेहरा पीला पड़ गया था।

उस युवती की नज़र खुदादाद पर पड़ी। वह चिल्लाते हुए बोली, 'हे युवक! यहाँ से तुरंत भाग जाओ। ये महल एक नरभक्षी दानव का है। वह लोगों को पकड़कर इस महल में रखता है और फिर उन्हें अपना शिकार बनाता है। अभी वह बाहर गया हुआ है। तुम उसके आने से पहले यहाँ से चले जाओ।''

खुदादाद बोला, ''पहले ये तो बताओ कि तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रही हो?'' वह बोली, ''मैं एक राजकुमारी हूँ। एक बार मैं अपने कारवाँ के साथ इस

जंगल से होकर गुज़र रही थी। तभी नरभक्षी दानव एक मानव के वेश में हमारे सामने प्रकट हुआ और उसने अपनी तलवार से सभी को मार डाला। उसने बस मुझे छोड़ दिया। वह मुझसे शादी करना चाहता है। परंतु मैं उससे शादी करने से बेहतर मरना पसंद करूँगी।''

खुदादाद बोला, ''तुम फिक्र मत करो। मैं तुम्हें नरभक्षी दानव से मुक्ति दिलवाऊँगा।'' खुदादाद अभी अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि तभी नरभक्षी दानव वहाँ आ गया। नरभक्षी दानव विशालकाय और बहुत भयानक था। वह गरजते हुए बोला, ''तुम इसे मुक्ति दिलाओगे। मेरी कैद से आज़ाद कराओगे। ये काम तो तुम तब करोगे, जब तुम जीवित बचोगे।''

ये कहकर नरभक्षी दानव ने खुदादाद पर अपनी तलवार से ज़ोरदार प्रहार किया। परंतु खुदादाद ने बचते हुए तेजी से उल्टा प्रहार कर दिया। खुदादाद ने उस पर एक के बाद एक लगातार कई प्रहार किए। उसने दानव को संभलने का मौका ही नहीं दिया और फिर एक झटके में दानव का सिर धड़ से अलग कर दिया। दानव के मरते ही राजकुमारी खुशी से चिल्लाते हुए बोली, ''हे युवक! तुम बहुत ही वीर एवं बुद्धिमान हो। तुमने बल व चातुर्य की बदौलत नरभक्षी दानव को मार गिराया। महल की चाबी नरभक्षी की जेब में होगी। तुम वह चाबी लेकर महल के अंदर आ जाओ।''

खुदादाद ने नरभक्षी दानव की जेब से चाबी निकाली और महल का ताला खोलकर अंदर गया। अंदर जाकर उसने देखा कि नरभक्षी दानव ने बहुत सारे लोगों को बंदी बनाया हुआ है। उन लोगों में उसके भाई भी थे। वह अपने भाइयों से मिलने पर बहुत खुश हुआ। उसने अपने भाई सहित सभी लोगों को नरभक्षी दानव की कैद से आजाद करवाया। सभी लोग उसका धन्यवाद अदा कर अपने-अपने घर की ओर चल पड़े।

खुदादाद ने राजकुमारी से कहा, ''चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे पिताजी के पास छोड़ आता हूँ।'' राजकुमारी बोली, ''मेरे पिता मिस्र के राजा थे। शत्रु ने उन्हें युद्ध में पराजित कर दिया था। युद्ध में उनकी मौत हो गई थी। मैं अपनी जान बचाकर



अपने कारवाँ के साथ जंगल से जा रही थी। तभी ये नरभक्षी दानव मिला।''



खुदादाद बोला, ''हे राजकुमारी! यदि तुम्हें ऐतराज न हो तो मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।''

राजकुमारी ने खुशी-खुशी उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। दोनों ने शादी कर ली। सभी राजकुमार उनकी शादी के साक्षी बने। खुदादाद अपनी पत्नी को लेकर राजकुमारों के साथ महल की ओर लौट चले। वे लोग चलते-चलते थक गए थे। इसलिए वे रात्रि में विश्राम करने के लिए एक जगह रुक गए। रात को खुदादाद और राजकुमारों ने मिलकर मदिरा पान किया। वह बातों ही बातों में बोला, ''तुम्हें पता है कि मैं किसका पुत्र हूँ। मैं तुम्हारा ही भाई हूँ। मैं सुल्तान का पुत्र हूँ। मेरी माँ नाम फिरोज़ा है। मेरा जन्म और पालन-पोषण समारिया में हुआ।''

राजकुमारी ये सुनकर बहुत खुश हुई और बोली, ''मैं बहुत ही खुशनसीब हूँ कि मुझे आप जैसा वीर, साहसी और बुद्धिमान पति मिला। आप में राजकुमारों के सारे गुण मौजूद हैं।''

परंतु राजकुमार खुदादाद की सच्चाई जानकर बिल्कुल भी खुश नहीं हुए और राजकुमारी के शब्दों ने तो आग में घी का काम किया। राजकुमारों ने सोचा, 'सुल्तान वैसे ही खुदादाद से बहुत प्रभावित हैं और उस पर बहुत विश्वास करते हैं। जब उन्हें पता चलेगा कि खुदादाद उनका बेटा है तो वे उसे ही सुल्तान बनाएंगे और हम सब उसके सेवक बनकर रह जाएंगे।' ये सोचकर उन्होंने खुदादाद को



अपने रास्ते से हटाने का निर्णय किया।

रात को जब खाने-पीने के बाद खुदादाद और उसकी पत्नी सो गए तो राजकुमार धीरे से उठे और उन्होंने खुदादाद का मुँह बंद कर उसे तलवारों से गोदना शुरू कर दिया। जब उन्हें लगा कि अब खुदादाद जीवित नहीं होगा तो वे उसे लहूलुहान छोड़कर वापस महल चले आए। खुदादाद की पत्नी उस समय उसके पास ही सो रही थी। परंतु उसे कुछ भी पता नहीं चला।

इधर राजकुमारों को सही-सलामत वापस आया देखकर सुल्तान बहुत खुश हुआ। उसने एक-एक कर सभी राजकुमारों को गले लगाया। सुल्तान ने कहा, ''मेरे बच्चो! तुम कहाँ चले गए थे? मुझे तुम्हारी बहुत चिंता हो रही थी।''

राजकुमारों ने सुल्तान को सच बताने की बजाए झूठ कह दिया कि वे पड़ोसी राज्य का भ्रमण कर रहे थे। सुल्तान को उनकी बातों पर तनिक भी संदेह नहीं हुआ। उधर जब अगले दिन सुबह राजकुमारी उठी तो खुदादाद को लहूलुहान देखकर उसकी चीख निकल गई। उसकी छाती पर सिर रखकर वह जोर-जोर से विलाप करने लगी। तभी उसे एहसास हुआ कि खुदादाद की साँसें बहुत धीमे चल रही हैं। वह बड़बड़ाते हुए बोली, ''खुदादाद अभी जिंदा है। मुझे तुरंत किसी वैद्य को

बुलाना चाहिए। हो सकता है भगवान की कृपा से वह बच जाएं।''

वह तुरंत शहर की ओर दौड़ पड़ी और वहाँ से वैद्य को बुलाकर ले आई। वापस आकर उसने देखा कि खुदादाद उस स्थान पर नहीं है। खुदादाद को वहाँ पर न पाकर वह परेशान हो गई और फूट-फूटकर रोने लगी।

उसने सोचा, 'खुदादाद का कहीं भी अता-पता नहीं है। शायद उसे वन के हिंसक पशु उठाकर ले गए। अब मैं कहाँ जाऊँगी? मैं भी जीवित रहकर क्या करूँगी?'

वैद्य को राजकुमारी की दशा देखकर उस पर दया आ गई। वह उसे अपने साथ अपने घर ले गया। राजकुमारी हर समय दुखी एवं उदास रहती। उसे किसी चीज की कोई सुध नहीं रहती थी।



एक दिन वैद्य ने उससे पूछा, ''बेटी! यूँ तो तुम कई दिनों से मेरे घर पर रह रही हो, परंतु मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानता। तुम कौन हो बेटी और कहाँ से आई हो?'' राजकुमारी ने उसे अपनी पूरी कहानी सुना दी। राजकुमारी की कहानी जानने के बाद वैद्य ने उसे आश्वस्त किया कि वह उसे न्याय अवश्य दिलाएगा।

इधर शहर में सभी लोग खुदादाद के अचानक गायब होने से परेशान थे। वे इस बारे में तरह-तरह की बातें कर रहे थे। लोगों को संदेह था कि खुदादाद के गायब होने में राजकुमारों का हाथ है। खुदादाद के गायब होने की खबर चारों तरफ जंगल में आग की तरह फैल गई। ये खबर जब फिरोज़ा के कानों तक पहुँची तो

उसने स्वयं ही खुदादाद को ढूँढ़ने का निश्चय किया। उसने सोचा, 'वह वापस सुल्तान के पास जाएगी और उनसे अपने बेटे के बारे में पूछेगी।'

ये सोचकर वह समीर से विदा लेकर तुरंत सुल्तान से मिलने के लिए चल पड़ी। जब वह शहर की सीमा पर पहुँची तो वैद्य को अपने गुप्त सूत्रों से फिरोज़ा के आने का समाचार मिला। वैद्य राजकुमारी को साथ लेकर फिरोज़ा के पास पहुँचा। राजकुमारी फिरोज़ा के पास जाकर बोली, ''सुल्ताना! मैं आपसे अकेले में कुछ बात करना चाहती हूँ।''

फिरोज़ा ने कहा, ''हम बहुत परेशान हैं। तुम्हें अधिक समय नहीं दे पाएंगे। इसलिए तुम्हें जो भी कहना है, जल्दी कहो।''

राजकुमारी ने फिरोज़ा को खुदादाद और अपनी शादी के बारे में बताया। साथ ही उसने खुदादाद के रहस्यमय तरीके से गायब होने की जानकारी भी दी। वैद्य बोला, ''ये सारी चाल उन दुष्ट राजकुमारों की है। वे खुदादाद से ईर्ष्या रखते थे, इसलिए उन्होंने खुदादाद को मार दिया।''

अपने बेटे के बारे में ये दुखद समाचार सुनकर फिरोज़ा बेहोश हो गई। सौभाग्यवश, उस समय वहाँ से सुल्तान की सवारी गुज़र रही थी। सुल्तान ने



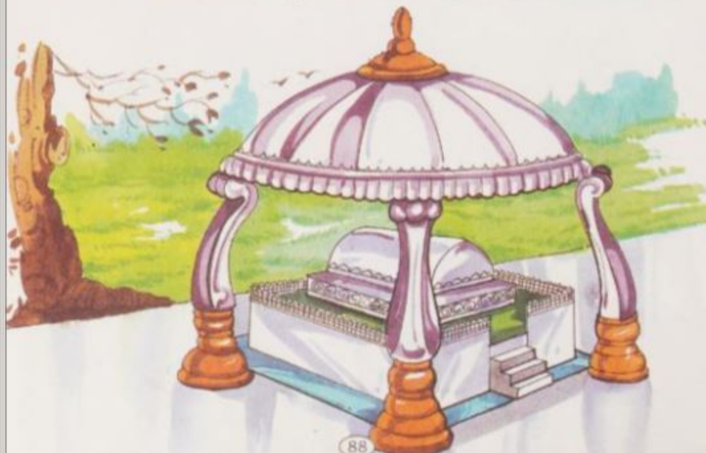
फिरोज़ा को देखा तो वे उसे पहचान गए और उसे, राजकुमारी और वैद्य तीनों को महल ले आए।

कुछ देर बाद फिरोज़ा को होश आया तो उसने सुल्तान को खुदादाद के बारे में बताया। जब सुल्तान को मालूम हुआ कि उसके पुत्र पापी एवं गुनहगार हैं तो उसने अपने सैनिकों को आदेश देते हुए कहा, ''जाओ और सभी राजकुमारों को बंदी बना लो। उन पर खुदादाद की मृत्यु का आरोप है। उन्हें उनके गुनाहों का दंड अवश्य मिलेगा।''

सुल्तान ने राजकुमारी को अपनी बहू के रूप में स्वीकार कर लिया और उसके सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया। वैद्य राजकुमारी से किया गया अपना वादा पूरा करने के बाद अपने घर लौट गया।

सुल्तान ने राजकुमारी से कहा, ''बेटी! हमें भारी दुख है कि तुम्हें राजकुमारों के कारण विधवा का जीवन जीना पड़ रहा है। परंतु मैं उन्हें नहीं छोड़ूँगा। शाही नियम कानून के मुताबिक उन्हें सजा अवश्य मिलेगी।''

सुल्तान ने फिर कहा, ''बेटी, मुझे भी खुदादाद से बहुत लगाव था। अब मैं उसे वापस तो नहीं ला सकता, परंतु उसकी याद में एक शानदार मकबरा अवश्य





बनाऊँगा, ताकि लोग उसे हमेशा याद रखें।''

सुल्तान ने खुदादाद की याद में मकबरा बनवाने की जिम्मेदारी अपने वज़ीर को सौंपी। वज़ीर ने कुशल कारीगरों के हाथों मकबरे का निर्माण करवाया। ये मकबरा शहर के बीचों बीचे बनाया गया था। ये सफेद संगमरमर से बना अद्‌भुत मकबरा था। देखनेवाले इसे देखकर दाँतों तले अंगुली दबा लेते थे। खुदादाद का मकबरा वहाँ के लोगों के लिए पवित्र स्थान था। सैनिक, फकीर, भिखारी व आम लोग वहाँ आकर खुदादाद को याद करते और उसकी शान में गीत गाते।

फिर एक दिन सुल्तान ने अपने बेटों को मृत्युदंड देने का आदेश दिया। तभी दरबार में एक दूत आया और बोला, ''जहाँपनाह! पड़ोसी शत्रु राजा ने हम पर आक्रमण कर दिया है। शत्रु राजा स्वयं अपनी विशाल सेना का नेतृत्व करते हुए हमारे राज्य की तरफ बढ़ा चला आ रहा है।''

ये खबर सुनकर सुल्तान भौंचक्का रह गया। उसे इस मुसीबत की घड़ी में खुदादाद की याद हो आई। वह बोला, ''काश! मेरा बेटा खुदादाद जीवित होता तो वह शत्रु को मुँहतोड़ जवाब देता। परंतु उसे तो अपने ही भाईयों.....।'' कहते-कहते सुल्तान की आँखें भर आईं।

फिर सुल्तान ने स्वयं को संभालते हुए अपने सेनानायकों को युद्ध की तैयारी करने का आदेश दिया। सुल्तान स्वयं सेना का नेतृत्व करते हुए युद्ध के मैदान में आ डटे। दोनों ओर से घमासान युद्ध छिड़ गया। परंतु सुल्तान की सेना कमजोर पड़ने लगी। इससे शत्रु सेना का मनोबल और बढ गया। तभी अचानक अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित एक सैन्य टुकड़ी युद्ध के मैदान में आई और सुल्तान की ओर से लड़ने लगी। यह सैन्य टुकड़ी बहुत ही वीरता से लड़ रही थी। यह देखकर सुल्तान के शेष सैनिक भी जोश से भर गए और वे दुश्मन को कड़ी टक्कर देने लगे। देखते ही देखते उन्होंने शत्रुओं के छक्के छुड़ा दिए। दुश्मन सेना भाग खड़ी हुई। इस सैन्य टुकड़ी का सेनानायक सुल्तान के सामने आ खड़ा हुआ। सुल्तान उसे देखकर चकित रह गया। इस टुकड़ी का नेतृत्व और कोई नहीं बल्कि स्वयं खुदादाद कर रहा था। खुदादाद को जीवित देखकर सुल्तान की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। फिर वे दोनों अपनी विजय पताका फहराते हुए महल लौट आए।

फिरोज़ा खुदादाद को जीवित देखकर बहुत खुश हुई। उसने खुदादाद का माथा चूमकर उसे गले से लगा लिया। उसकी आँखों से खुशी के आँसू बह निकले। राजकुमारी भी अपने पति को देखकर खुश थी। वह बोली, ''जब आप घायल थे तो मैं आपको छोड़कर वैद्य को बुलाने गई। परंतु जब मैं वैद्य को साथ लेकर वापस आयी तो आप गायब थे। मेरे जाने के बाद आपके साथ क्या हुआ?''

यह सुनकर खुदादाद ने कहा, ''तुम्हारे जाने के बाद वहाँ एक किसान आया। मेरी हालत देखकर वह मुझे अपने घर ले गया। वह वैद्य का काम भी जानता था। उसने जड़ी-बूटियों का मलहम बनाकर मेरे घावों पर लगाया। धीरे-धीरे मेरे घाव ठीक होने लगे और कुछ दिनों में मैं बिल्कुल ठीक हो गया। मैं उसी के घर पर रहने लगा। उसने एक बेटे की तरह मेरी देखभाल की। परंतु जब मैंने अपने राज्य पर आक्रमण का समाचार सुना तो मुझसे नहीं रहा गया। मैंने तुरंत एक सेना तैयार की और यहाँ चला आया।''

खुदादाद की कहानी सुनकर सुल्तान ने कहा, ''तुम्हें अपने भाइयों के कारण भारी





कष्ट सहना पड़ा। उन्हें उनके किए की सजा अवश्य मिलेगी।'' ये कहकर उन्होंने सैनिकों को तुरंत राजकुमारों का वध करने का आदेश दिया।

खुदादान ने सुल्तान से कहा, ''अब्बाजान! वे मेरे भाई हैं। मेरा उनसे खून का रिश्ता है। मैंने उन्हें माफ कर दिया है। आप भी उन्हें माफ कर दीजिए।''

सुल्तान ने कहा, ''खुदादाद! मुझे तुम पर गर्व है। तुमने उन्हें माफ कर दिया, जिन्होंने तुम्हारी जान लेने की कोशिश की।''

सुल्तान ने भी उन्हें क्षमा कर दिया। राजकुमारों ने खुदादाद के पैरों पर गिरकर उससे अपनी गलती की क्षमा माँगी। उन्होंने कहा, ''आपने हमारा जीवन एक नहीं बल्कि दो-दो बार बचाया है। आज से हमारा जीवन आपका हुआ। आप जो कहेंगे, वो हमारे लिए पत्थर की लकीर होगी।'' खुदादाद ने अपने सभी भाइयों को गले से लगा लिया। सुल्तान ने खुदादाद की जिंदगी बचाने वाले किसान को बुलाकर उसे सम्मान व ढेर सारा ईनाम दिया।

अली ख्वाजा



बहुत समय पहले हारून-उल-रशीद के शासन काल में बगदाद में अली ख्वाजा नाम का एक व्यापारी रहता था। वह बहुत धनी तो नहीं था, परंतु अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसके पास पर्याप्त धन था।

वह कभी अपने माता-पिता के ऊपर निर्भर नहीं रहा। उनकी मृत्यु के पश्चात् वह अकेला हो गया पर उसने शादी नहीं की। उसके खर्च सीमित थे। वह अपने जीवन से पूरी तरह संतुष्ट था। उसने अपनी कमाई से लगभग दस हजार सोने की मोहरें बचाई थीं। यही उसकी जीवन भर की जमा-पूँजी थी।

एक रात सपने में उसे एक आवाज सुनाई दी, ''अली ख्वाजा! अब तुम्हारी उम्र हो चली है। जीवन का चिराग कभी भी बुझ सकता है। इसलिए अब तुम्हें कुछ धर्म-कर्म के कार्य भी कर लेने चाहिए। तुम्हें हज यात्रा पर जाना चाहिए।''

सुबह जब अली ख्वाजा उठा तो उसके कानों में बार-बार रात के स्वप्न की ध्वनि गूँज रही थी। उसे वह खुदा का फरमान लग रहा था।

उसे जब स्वप्न में वही आवाज दो बार और सुनाई दी तो उसने इसे खुदा का फरमान मानकर स्वीकार कर लिया। उसने हज पर जाने का निर्णय लिया। उसने सोचा, 'हज जाने के लिए पाँच हजार सोने की मोहरें बहुत हैं। शेष पाँच हजार मोहरों को छुपाकर रख देता हूँ। ये निकट भविष्य में मेरे काम आएंगी। परंतु इन मोहरों को छुपाकर कहाँ रखूँ?'

बहुत सोचने पर भी उसे कोई विश्वसनीय व्यक्ति दिखाई नहीं दिया जिसके पास वह अपनी जमा-पूँजी रख सके। उसे एक उपाय सूझा। उसने एक मर्तबान में तेल भरा और पाँच हजार सोने की मोहरें उसमें डाल दीं। फिर उसने मर्तबान को अच्छी तरह से सीलबंद किया और मर्तबान को लेकर अपने दोस्त अब्दुल के घर गया।

उसने अब्दुल से कहा, "दोस्त! मैं हज करने के लिए मक्का जा रहा हूँ। मेरे पास ये तेल का एक मर्तबान है। तुम इसे अपने पास रख लो। मैं जब हज से लौटूँगा तो इसे तुमसे वापस ले लूँगा।"

अब्दुल ने कहा, "दोस्त! ये तो बहुत अच्छी बात है कि तुम हज करने जा रहे हो। हज करने का अवसर भी खुशनसीबों को ही मिलता है। तुम तेल का मर्तबान मेरा भंडार गृह में स्वयं ही संभालकर रख दो। ये वहाँ पर सुरक्षित रहेगा। जब तुम लौटकर आओगे तो इसे वापस ले लेना।" ये कहकर अब्दुल ने अली ख्वाजा को अपने भंडार गृह की चाबी दी और उसके साथ नौकर को भेजा।



अली ख्वाजा ने तेल से भरे मर्तबान को भंडार गृह के एक कोने में संभालकर रख दिया और भंडार गृह को बंद करके चाबी अब्दुल को देते हुए कहा, "अब्दुल! तुमने मेरी बात मानकर मुझ पर बड़ा एहसान किया। अब मैं निश्चिंत होकर हज करने जा सकूँगा।"

इसके बाद अली ख्वाजा ने अब्दुल से गले लगकर उससे



विदा ली।

अली ख्वाजा एक काफिले के साथ मक्का के लिए चल पड़ा। मक्का पहुँचकर पहले उसने हज किया और फिर अन्य पवित्र धार्मिक स्थानों पर भी गया। उसे धार्मिक स्थानों की यात्रा करते हुए लगभग सात महीने हो गए थे।

उधर अली ख्वाजा के जाते ही अब्दुल तेल के मर्तबान वाली बात एकदम भूल गया। अली ख्वाजा के जाने के लगभग पाँच महीने बाद एक रात व्यापार के सिलसिले में कुछ व्यापारी अब्दुल के घर आए। जब वे व्यापारी पहुँचे, तब तक काफी रात हो चुकी थी। अब्दुल ने अपने नौकर से उन व्यापारियों के लिए खाना बनाने को कहा।

नौकर ने अब्दुल को बताया कि घर में खाद्य तेल खत्म हो चुका है। ये सुनकर अब्दुल परेशान हो गया। उसने सोचा, 'इतनी रात गए तेल कहाँ से लाऊँ। सभी दुकानें बंद हो चुकी होंगी। व्यापारियों को भोजन कैसे कराया जाए?'

तभी उसे याद हो आया कि अली ख्वाजा का तेल से भरा मर्तबान उसके भंडार गृह में रखा हुआ है। उसके चेहरे पर प्रसन्नता झलक आई। उसने अपने नौकर से कहा, "जाओ, एक बर्तन ले आओ। मैं अभी अली ख्वाजा के तेल के मर्तबान में से कुछ तेल निकाल लेता हूँ। कल उतना ही तेल नापकर उसमें वापस डाल देंगे। अभी का काम तो हो जाएगा।"



नौकर तुरंत एक बर्तन ले आया। अब्दुल भंडार गृह की चाबियाँ लेकर तुरंत भंडार गृह जा पहुँचा। ताला खोलकर वह अंदर गया और तेल के



मर्तबान की सील तोड़कर बरतन में तेल उलटने लगा। तेल के साथ-साथ सोने की मोहरें भी बर्तन में आ गिरीं। सोने की मोहरें देखकर पहले तो अब्दुल चौंक गया फिर कुछ सोचकर उसका चेहरा चमक उठा। उसके मन में लालच आ गया था। उसने अपने नौकर से एक बड़ा बर्तन मँगवाया और सारा तेल उसमें उलट दिया। तेल के साथ ही सारी मोहरें भी बर्तन में आ गईं। अब्दुल ने सारी मोहरें निकाल लीं और अगले दिन बाजार से तेल लाकर पूरा मर्तबान फिर से पहले जैसा भर दिया। उसने उसे सीलबंद करके यथास्थान रख दिया।

अली ख्वाजा सात महीनों के बाद जब यात्रा करके घर लौटा तो वह सीधे अब्दुल के घर गया। अब्दुल ने उससे पूछा, ''कहो अली, तुम्हारी यात्रा कैसी रही? बहुत दिन लगा दिए तुमने!''

अली ख्वाजा बोला, ''दोस्त! मैंने सोचा जब हज के लिए निकला ही हूँ तो बाकी धर्मस्थलों की यात्रा भी करता चलूँ। दोस्त, ऊपर वाले की रहमत से मक्का के अलावा दूसरे धर्म स्थलों के भी दर्शन कर आया। इस यात्रा से मन को बड़ी शांति मिली। मैं अपना मर्तबान लेने आया था।''

''हाँ-हाँ, अरे! हम तो तुम्हारे जाने के बाद भूल ही गए थे। हमने तो उसे देखा भी नहीं। तुमने मर्तबान जहाँ रखा होगा, वहीं पड़ा होगा। जाओ, जाकर अपना मर्तबान ले लो।'' ये कहकर अब्दुल ने अली ख्वाजा की तरफ चाबी बढ़ा दी।

अली ख्वाजा ने भंडार गृह से अपना मर्तबान लिया और अपने घर चला गया।

घर आकर अली ख्वाजा ने मर्तबान की सील खोली और उससे सोने की मोहरें निकालनी चाहीं, परंतु मर्तबान में तेल के अलावा और कुछ नहीं था। वह सोने की मोहरें न पाकर दंग रह गया। उसकी जीवन भर की जमा पूँजी चोरी हो गई थी। वह समझ गया कि अवश्य ही अब्दुल ने सोने की मुहरें चुरा ली हैं।

वह तुरंत अब्दुल के घर गया और उससे अपनी सोने की मोहरें वापस करने को कहा। इस पर अब्दुल बोला, ''अली भाई, तुम कौन-सी मोहरें माँग रहे हो? तुमने मुझे कभी सोने की मोहरें दी ही नहीं।''

अली ख्वाजा बोला, ''अब्दुल! ज्यादा बनने की कोशिश मत करो। मैं उन मोहरों की बात कर रहा हूँ, जो तुमने मेरे तेल के मर्तबान से निकाली हैं।''

इस पर अब्दुल साफ मुकरते हुए बोला, ''तुमने मेरे घर पर तेल का मर्तबान रखा था न कि मोहरें। अब तुम कह रहे हो कि तुमने मर्तबान में मोहरें रखीं थी। तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया। तुम मुझे फँसाने की कोशिश कर रहे हो। भलाई का तो जमाना ही नहीं रहा। मैंने तुम्हारा तेल का मर्तबान अपने घर पर संभालकर रखा और तुम मुझ पर चोरी का आरोप लगा रहे हो। जाओ, चले जाओ यहाँ से।''

अली ख्वाजा उसके आगे मिन्नतें करते हुए बोला, ''दोस्त! वे पाँच हजार सोने



की मोहरें मैंने बहुत परिश्रम से कमाई हैं। उन्हें वापस कर दो। मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगा।''

परंतु अली ख्वाजा की मिन्नतों का अब्दुल पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अली ख्वाजा भारी मन से अपने घर वापस चला आया। उसे भारी नुकसान हुआ था। उसने अपने नुकसान के बारे में जब अपने कुछ अन्य दोस्तों को बताया तो उन्होंने उसे काज़ी के पास जाने की सलाह दी।

अली ख्वाजा काज़ी के पास जा पहुँचा और उनके सामने न्याय की गुहार लगाई। काज़ी ने अब्दुल को बुलाया और उससे कहा, ''तुम पर आरोप है कि तुमने अली ख्वाजा की पाँच हजार सोने की मोहरें चुराई हैं। तुम उसका धन वापस कर दो।''

अब्दुल बोला, ''काज़ी साहब! अली ख्वाजा मेरे घर पर तेल का मर्तबान रखकर गया था। उसने स्वयं मुझसे कहा था कि उसे मेरे घर पर अपना तेल का मर्तबान रखना है। तेल के मर्तबान में सोने की मोहरों का इसने कोई जिक्र नहीं किया था। तब इसने तेल कहा था और अब ये मुझ पर सोने की मोहरें चोरी करने का झूठा आरोप लगा रहा है। आप चाहें तो इससे पूछ लीजिए कि इसने मुझे क्या रखने के लिए दिया था और उस वक्त क्या कहा था?''

काज़ी ने अली ख्वाजा से पूछा, ''क्या अब्दुल सच कह रहा है?''

अली ख्वाजा ने हाँ में सिर हिलाते हुए कहा, ''अब्दुल सच कह रहा है, परंतु मेरा



विश्वास कीजिए, मैंने तेल के मर्तबान के अंदर सोने की मोहरें छुपाई थीं। ये बात मैंने इसे नहीं बताई थी, क्योंकि मुझे इसके ऊपर विश्वास नहीं था।''

काज़ी ने कहा, ''अली ख्वाजा! हो सकता है कि तुम सच कह रहे हो, परंतु तुम्हारे पास ऐसा कोई ठोस सबूत नहीं है, जिससे ये साबित हो सके कि अब्दुल ने तुम्हारी सोने की मोहरें चुराई हैं।''

काज़ी के इस निर्णय से अली ख्वाजा को बहुत दुख हुआ। जल्दी ही ये बात चारों तरफ फैल गई। अधिकतर लोगों को विश्वास था कि अब्दुल ने अवश्य ही अली ख्वाजा के साथ चालबाजी की है। अली ख्वाजा एक नेक इंसान था और उसकी अच्छाई व ईमानदारी से सभी वाकिफ थे। लोगों ने उसे खलीफा के पास जाने की सलाह दी।

अली ख्वाजा खलीफा के पास गया और उन्हें पूरी बात बताते हुए न्याय की गुहार लगाई। खलीफा ने अली ख्वाजा की पूरी बात ध्यान से सुनी। खलीफा ने सोचा, 'ये वाकई एक पेचीदा मामला है। अली ख्वाजा ये साबित करने में नाकाम है कि उसने तेल के मर्तबान के अंदर सोने की मोहरें रखीं थीं। परंतु कोई भी निर्णय देने से पहले खलीफा इस मामले के बारे में अच्छी तरह सोच-विचार कर लेना चाहते थे। इसलिए उन्होंने अली ख्वाजा को दो दिन बाद आने के लिए कहा।

खलीफा प्रत्येक रात अपने वज़ीर ज़फर और सेवक मसरूर के साथ वेश





बदलकर नगर भ्रमण करते थे। इससे उन्हें जनता का हाल-समाचार मिल जाता था। उस रात जब खलीफा अपने वज़ीर और सेवक के साथ घूमने गए तो उन्हें एक गली में कुछ बच्चे खेलते हुए दिखाई दिए। उन्हें देखकर खलीफा रुक गए। वहाँ खेल रहे बच्चों में से एक बच्चा बोला, ''आज हम लोग अली ख्वाजा और काज़ी का नाटक करेंगे। मैं काज़ी बनूँगा।'' फिर उसने दो बच्चों को अब्दुल और अली ख्वाजा बनाते हुए कहा, ''तुम दोनों अपनी फरियाद लेकर मेरे पास आना।'' इसके बाद नाटक शुरू हुआ।

वह लड़का काज़ी बनकर एक पत्थर पर बैठ गया और दोनों लड़के सामने खड़े हो गए। उनमें से एक बोला, ''मेरा नाम अली ख्वाजा है। मैं एक व्यापारी हूँ। सभी मेरी ईमानदारी से भली-भाँति परिचित हैं। मैंने हज यात्रा पर जाने से पहले एक मर्तबान में पाँच हजार सोने की मोहरें डालीं और फिर उसे तेल से भर दिया। मैं उस मर्तबान को अब्दुल के पास सुरक्षित रखकर हज करने चला गया। परंतु लौटकर जब अब्दुल से मर्तबान वापस लेकर मैं घर लौटा तो मर्तबान से सोने की मोहरें गायब थीं।''

काजी बने लड़के ने दूसरे लड़के से पूछा, ''अब्दुल, तुम्हें इस मामले में कुछ

कहना है?''

अब्दुल बना लड़का बोला, ''मैं सोने की मोहरों के बारे में कुछ नहीं जानता। इसने तेल का मर्तबान जहाँ रखा, इसे वहीं पर वापस मिला। मैंने इसके मर्तबान को हाथ भी नहीं लगाया। ये इसकी कोई चाल है। मैंने इसकी सहायता की थी। परंतु मुझे क्या मिला! चोरी का झूठा आरोप। मैं अपने ऊपर लगे चोरी के आरोप से इंकार करता हूँ। मैंने कोई चोरी नहीं की।''

काज़ी बना लड़का थोड़ी देर सोचने के बाद बोला, ''मैं मर्तबान को देखना चाहता हूँ।''

मर्तबान लाया गया। जब काज़ी बना लड़का बोला, ''क्या यहाँ पर कोई तेल का व्यापारी है?''

लड़कों की भीड़ में से एक लड़का आगे आकर बोला,''मैं तेल व्यापारी हूँ। मैं न सिर्फ बगदाद में बल्कि अन्य स्थानों पर भी तेल की खरीद-बिक्री करता हूँ।''

काज़ी बने लड़के ने कहा, ''क्या तुम इस तेल को चखकर और सूँघकर बता सकते हो कि ये तेल कितना पुराना है?''

तेल व्यापारी बना लड़का मर्तबान के समीप गया और तेल को सूँघकर व चखकर बोला, ''ये तेल दो महीने से अधिक पुराना नहीं है।'' ये सुनकर काज़ी बना



लड़का बोला, "तेल व्यापारी, तुम अच्छी तरह सोच-समझकर बोल रहे हो न! तुम्हारी बात इस मामले में बहुत अहम है। अरे! ये तेल दो नहीं सात महीने पुराना है, क्योंकि अली ख्वाजा इस तेल के मर्तबान को अब्दुल के पास सात महीने पहले रखकर गया था।"

तेल व्यापारी बना लड़का बोला, "काज़ी साहब! मैं एक ऐसे व्यापारी को जानता हूँ, जिसे तेल की अच्छी परख है। मैं अभी उसे बुलाता हूँ।"

एक दूसरा लड़का तेल व्यापारी बनकर आया। उसने तेल को सूँघकर कहा, "ये तेल वाकई दो महीने पुराना है। मैं ये बात दावे के साथ कह सकता हूँ। मुझे तेल का व्यापार करते हुए कई वर्ष बीत गए हैं। मैं तेल पहचानने में धोखा नहीं खा सकता।"

काज़ी बने लड़के ने कहा, "इन तेल व्यापारियों की बात से ये पक्का हो गया है कि मर्तबान की सील तोड़ी गई है। इससे मोहरें निकालकर मर्तबान को दोबारा तेल से भरा गया है। अब्दुल, क्या तुम अपना गुनाह कबूल करते हो?"

अब्दुल ने अपना गुनाह कबूल कर लिया और काज़ी के समक्ष पूरी घटना कह सुनाई। काज़ी ने अब्दुल से अली ख्वाजा को उसकी मोहरें वापस करने को कहा और उसे कारागार में डलवा दिया। इसके साथ ही नाटक खत्म हो गया। खलीफा बच्चे की बुद्धिमानी और चातुर्य देकर चकित रह गए। बच्चे ने बहुत ही सूझबूझ के साथ मामले का निपटारा किया था। खलीफा वापस महल चले आए।



अगले दिन खलीफा ने नाटक में काज़ी बने लड़के को दरबार में बुलवा भेजा। उन्होंने अली ख्वाजा और अब्दुल को भी दरबार में उपस्थित होने का आदेश दिया। तीनों के दरबार में आ जाने के बाद खलीफा ने कहा, "अली ख्वाजा और



अब्दुल, तुम दोनों के मामले का निपटारा ये बालक करेगा।"

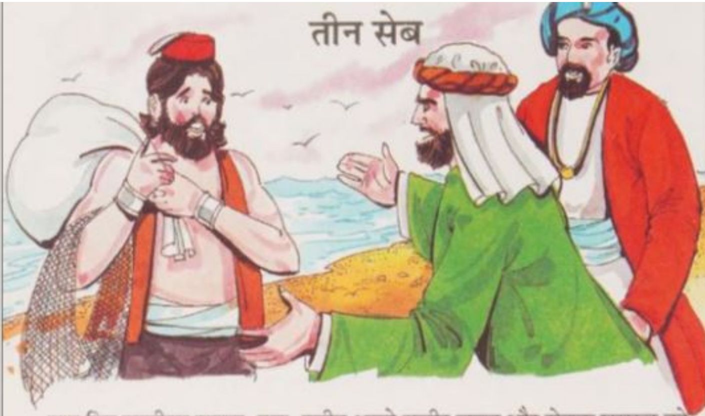
फिर बच्चे की तरफ मुड़ते हुए खलीफा ने कहा, "बेटा, तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैंने तुम्हें अली ख्वाजा और अब्दुल के पेचीदा मामले का निपटारा करने के लिए यहाँ बुलाया है। पिछली रात मैंने देखा कि तुमने नाटक में बहुत ही बुद्धिमानी से अली ख्वाजा और अब्दुल के मामले को सुलझाया। मैं चाहता हूँ कि आज तुम सबके सामने न्याय करो।"

खलीफा ने अली ख्वाजा और अब्दुल से काज़ी बने लड़के समक्ष अपना-अपना पक्ष रखने को कहा। दोनों ने अपना पक्ष रखा। अब्दुल के चोरी के आरोप से मना करने पर काज़ी बने लड़के ने दो तेल व्यापारियों को बुलाने का लिए कहा। तेल व्यापारियों ने नाटक की तरह ही अपने विचार दिए। उन्होंने कहा, "तेल दो महीने पुराना है।"

अब्दुल ने अपना गुनाह कबूल कर लिया। वह खलीफा के पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "मुझे माफ कर दीजिए। मुझसे भारी भूल हो गई। मैं लालच में अंधा हो गया था।"

खलीफा ने अब्दुल से अली ख्वाजा की सोने की मोहरें वापस करने को कहा और उसे कारावास की सजा सुनाई। खलीफा ने उस बालक की बुद्धिमानी की प्रशंसा की और उसकी उचित शिक्षा के लिए एक शिक्षक नियुक्त किया।

तीन सेब



एक दिन खलीफा हारून-उल-रशीद अपने वज़ीर ज़फर और सेवक मसरूर को साथ लेकर शहर भ्रमण पर निकले। भ्रमण के दौरान उन्हें एक मछुआरा दिखाई दिया। वह अपने कंधे पर जाल व सिर पर टोकरी रखे हुए था। वह धीरे-धीरे चलते हुए एक गीत गुनगुना रहा था। वह गीत दुख से भरा था। जब खलीफा ने मछुआरे का दर्द भरा गीत सुना तो उन्हें जरा भी अच्छा नहीं लगा। खलीफा ने अपने वज़ीर ज़फर से कहा, ''ज़फर, मैं इस मछुआरे के बारे में जानना चाहता हूँ। जरा पता लगाओ कि आखिर इसे क्या कष्ट है?''

ज़फर मछुआरे के पास गया और उससे पूछा, ''मछुआरे, तुम दुखी क्यों हो? क्या तुम्हें कोई कष्ट है?''

मछुआरे ने कहा, ''मालिक, मुझे बस एक ही कष्ट है, और वह है-गरीबी। मुझसे गरीबी की मार नहीं झेली जाती। मैं इतना गरीब हूँ कि मेरे परिवार को कभी-कभी दो-तीन दिन तक फ़ाके करने पड़ते हैं। मेरे जैसा आदमी भला खुशी के गीत कैसे गा सकता है? मेरे जीवन में कोई खुशी नहीं बची है और न ही इसकी कोई आस है।''

जब मछुआरा वज़ीर को अपनी कहानी सुना रहा था, तब खलीफा भी वहाँ पर आ गए। उन्होंने मछुआरे से कहा, ''मैंने तुम्हारी पूरी कहानी सुन ली है। मैं तुम्हारी

मदद करना चाहता हूँ। मेरे साथ नदी के किनारे चलो। वहाँ पहुँचकर तुम नदी में जाल फेंकना। जाल में जो भी फँसेगा, मैं उसके लिए तुम्हें सौ सोने की मोहरें दूँगा।'' मछुआरा खलीफा का मुँह ताकने लगा।

तब खलीफा ने कहा, ''मैं झूठ नहीं बोल रहा। यदि तुम्हारे जाल में छोटी-सी मछली भी फँसेगी तो भी मैं तुम्हें सौ सोने की मोहरें दूँगा।''

ये सुनकर मछुआरा खुश हो गया। उसके बाद खलीफा, वज़ीर, सेवक और मछुआरा चारों नदी के किनारे पहुँचे। मछुआरे ने जाल फेंका। उसके जाल में मछली तो नहीं फँसी, परंतु एक संदूक जरूर फँसा। खलीफा ने मछुआरे को सौ सोने की मोहरें दीं और मसरूर को संदूक महल ले जाने के लिए कहा। मछुआरा सौ सोने की मोहरें पाकर बहुत खुश था। उसने खलीफा का शुक्रिया अदा किया और अपने घर लौट गया।



महल में जब खलीफा ने संदूक खोला तो उसके अंदर एक युवती की लाश देखकर वे चकित रह गए। खलीफा चिल्लाते हुए बोले,

''ज़फर, तुम देख रहे हो! मेरे शासन में कैसे-कैसे अपराध हो रहे हैं। किसी ने इस युवती की हत्या करके इसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और किसी को पता न चले, इसलिए इन टुकड़ों को संदूक में भरकर संदूक नदी में फेंक दिया। परंतु मैं हत्यारे को छोड़ूँगा नहीं। ये घिनौना अपराध जिसने भी किया है, उसे कड़ा से कड़ा दण्ड मिलेगा। ज़फर, तुम जाकर अपराधी की तलाश करो और यदि तुम अपराधी का पता न लगा सके तो मैं तुम्हें फाँसी पर चढ़ा दूँगा।''

ज़फर ने कोई अपराध नहीं किया था, परंतु खलीफा के फरमान के आगे वह अपनी जुबान नहीं खोल सकता था। वह बिना कुछ कहे चुपचाप महल से वापस चला गया।

लगभग एक सप्ताह बाद खलीफा ने ज़फर को बुलवा भेजा और उससे पूछा, ''ज़फर, क्या हत्यारे का कुछ पता चला?''

ज़फर ने 'ना' में गर्दन हिला दी और अपना सिर झुका लिया। खलीफा ने कहा, ''जब तुम हत्यारे का पता लगाने में असफल रहे तो तुम्हें ही फाँसी पर चढ़ना होगा।''

ज़फर ने कहा, ''खलीफा! मुझे किसी और के अपराध की सजा मिल रही है। मैंने जो अपराध किया ही नहीं, उसकी सजा मैं क्यों भुगतूँ?''

खलीफा ने कहा, ''तुम्हारी मुझसे अशिष्टता से बात करने की हिम्मत कैसे हुई? तुम्हें आज



ही महल के द्वार पर फाँसी पर लटकाया जाएगा।''

खलीफा के क्रोध की खबर शीघ्र ही चारों तरफ फैल गई। सभी लोग चकित थे कि निर्दोष वज़ीर को फाँसी पर चढ़ाया जा रहा है। परंतु खलीफा के निर्णय पर अँगुली उठाना उनके वश में नहीं था। लोग वज़ीर को फाँसी पर चढ़ता हुआ देखने के लिए महल के पास जमा होने लगे।

वज़ीर को फाँसी पर चढ़ाने की सारी तैयारियाँ पूरी हो गई थीं। जल्लाद उसे फाँसी पर चढ़ाने ही वाला था कि भीड़ में से एक सुंदर, आकर्षक युवक आगे आया और खलीफा का अभिवादन करने के बाद बोला, ''हे न्यायप्रिय खलीफा! आप तो हमेशा न्याय करते हैं, फिर आज आप इस निर्दोष को फाँसी पर क्यों चढ़ा रहे हैं? असली गुनाहगार तो मैं हूँ। फाँसी मुझे लगनी चाहिए।''

तभी एक वृद्ध व्यक्ति भीड़ को चीरता हुआ आगे आया और बोला, ''हे अन्नदाता! मेरा विश्वास कीजिए, असली गुनाहगार मैं हूँ। ये युवक निर्दोष है और झूठ कह रहा है।''

खलीफा ने कहा, ''ये सब क्या है? मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा कि असली गुनाहगार कौन है?''

वृद्ध बोला, ''खलीफा! मैंने ही उस युवती की हत्या की थी। यह युवक मेरी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डाल रहा है। आप मुझे सजा दीजिए।''

युवक चिल्लाते हुए बोला, ''खलीफा! ये वृद्ध व्यक्ति सरासर झूठ बोल रहा है। ये तो हत्या के बारे में कुछ



भी नहीं जानता। ये वृद्ध भी वज़ीर की भांति निर्दोष है।''

खलीफा, वृद्ध और युवक की बात सुनकर दुविधा में पड़ गए। वे समझ नहीं पा रहे थे कि कौन सच कह रहा है और कौन झूठ? खलीफा ने तंग आकर ज़फर से कहा, ''ज़फर! इन दोनों को ही फाँसी पर चढ़ा दो।''

इस पर ज़फर बोला, ''खलीफा! इन दोनों में से कोई एक गुनाहगार है। फिर दोनों को फाँसी पर चढ़ाना न्यायसंगत नहीं है।''

खलीफा कुछ कहते, इससे पहले ही युवक ने चिल्लाकर कहा, ''खलीफा! मेरी बात का विश्वास किजिए। मैंने ही उस युवती की हत्या की है। मैं आपको हत्या की वजह बताता हूँ।''

यह कहकर युवक ने अपनी कहानी सुनानी शुरू की, ''वह युवती मेरी पत्नी थी। मैं उससे बहुत प्रेम करता था। एक दिन उसने मुझे बाज़ार से सेब लाने के लिए कहा। मैं उसकी इच्छा पूरी करने के लिए बाज़ार गया। मैंने पूरा बाज़ार छान मारा, परंतु सेब कहीं नहीं मिले। मैं वापस चला आया। मैंने उसे बताया कि बाज़ार में सेब कहीं नहीं मिल रहे हैं। ये सुनकर वह दुखी हो गई। उसने मेरी बात मन से लगा ली। उसकी सेब खाने की इच्छा और प्रबल हो उठी। मैं एक बार फिर सेबों की तलाश में घर से बाहर निकला और जोर-शोर से सेबों की तलाश शुरू कर दी। मैं इस बार खाली हाथ लौटकर अपनी पत्नी को फिर से दुखी व निराश नहीं देखना चाहता था। मैं पूरे दिन सेब ढूँढ़ता रहा।

इसी दौरान मुझे बाज़ार में एक वृद्ध व्यक्ति मिला। उसने मुझे बताया कि बसरा में खलीफा के बगीचे में सेब मिलेंगे। मैंने निश्चय किया कि मैं अपनी पत्नी की इच्छा पूरी करने के लिए बसरा जाऊँगा। अगले दिन सुबह मैं बसरा के लिए निकल पड़ा। बसरा पहुँचकर मैंने शाही माली को तीन सोने के सिक्के देकर तीन सेब खरीदे। लगभग एक महीने बाद मैं घर लौट आया। मैंने जब तीन सेब अपनी पत्नी को दिए तो उसने उनमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। उसने सेबों को एक किनारे रख दिया। उस समय वह ज्वर से पीड़ित थी। इस घटना के दो दिन बाद जब मैं अपनी दुकान पर बैठा हुआ था तो मेरी दुकान के पास से गुज़र रहे एक





गुलाम के पास मुझे मेरे लाए हुए तीन सेबों में से एक सेब दिखाई पड़ा। मैं वह सेब देखकर चकित रह गया। मैंने उसे आवाज़ देकर बुलाया और उससे पूछा, ''गुलाम! तुम्हें ये सेब कहाँ से मिला? इस मौसम में शहर में सेब मिलना मुश्किल है, तुम ये सेब कहाँ से लाए?''

वह बोला, ''ये सेब मुझे मेरी प्रेमिका ने दिया है। वह बहुत सुंदर है। हम दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं, परंतु उसकी शादी कहीं और हो गई है। आज कुछ महीनों बाद जब मैं उसके घर गया तो उसने मुझे तीन सेब दिखाते हुए बताया कि मेरे बेवकूफ पति ने इन सेबों को लाने के लिए एक महीने लंबी यात्रा की। परंतु मुझे इन्हें खाने में कोई दिलचस्पी नहीं है। फिर उसने एक सेब मुझे दे दिया।'' ये कहकर गुलाम हँसता हुआ आगे बढ़ गया।

गुलाम की बात सुनकर मुझे अपनी पत्नी के चरित्र पर संदेह हुआ। मैंने तुरंत अपनी दुकान बंद की और गुस्से में घर चला आया।

मैंने घर आकर अपनी पत्नी से पूछा, ''क्या तुमने सेब खा लिए हैं?''

उसने 'ना' में सिर हिलाया। मैंने उससे सेब दिखाने को कहा। वह दो सेब लेकर आ गई और बोली, ''मुझे दो ही सेब दिखाई दिए। तीसरा सेब गायब है। पता नहीं तीसरा सेब कहाँ गिर गया।''

अपनी पत्नी की बात सुनकर मुझे विश्वास हो गया कि वह गुलाम सही कह रहा था। बस, फिर क्या था। मैं अपना आपा खो बैठा।





मैंने अपनी पत्नी के पेट में चाकू घोंप दिया। इससे उसकी तुरंत मौत हो गई। फिर मैंने उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े किए और उन्हें एक संदूक में रखकर, संदूक को नदी में फेंक दिया। संदूक को नदी में फेंककर जब मैं घर लौटा तो वहाँ पर मेरा बेटा जोर-जोर से रो रहा था। मैंने उससे पूछा, ''बेटा! तुम रो क्यों रहे हो?''

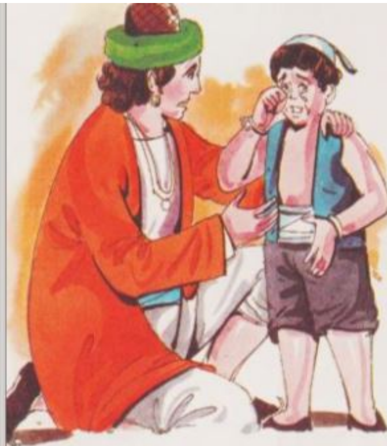
वह बोला, ''पिताजी, मुझसे एक सेब खो गया।''

''बेटा, तुम कौन-से सेब की बात कर रहे हो?'' मैंने उससे पूछा।

उसने जवाब दिया, ''आप बसरा से जो तीन सेब लाए थे, उनमें से एक फल मैंने खो दिया।''

मैंने चौंकते हुए पूछा, ''क्या?''

वह बोला, ''हाँ पिताजी, मैंने तीन सेबों में से एक सेब लिया और अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया। तभी वहाँ से होकर एक गुलाम गुज़रा। उसने मेरे हाथ में सेब देखा तो पूछा कि मैं ये सेब कहाँ से लाया। मैंने उसे सारी कहानी सुना दी। फिर उसने मेरे हाथ से सेब छीन लिया। जब मैंने उसे रोकना चाहा तो उसने मुझे



मारा। मैं वापस घर चला आया। उसके बाद मैं तब से माँ को ढूँढ़ रहा हूँ, परंतु पता नहीं माँ कहाँ है? मैं पूरे घर में उसे ढूँढ़ चुका हूँ।''

अपने बेटे के मुँह से सच सुनकर मैं हताश होकर जमीन पर बैठ गया और रो-रोकर पश्चाताप करने लगा। मैं अपनी जान लेना चाहता था, परंतु इस वृद्ध व्यक्ति ने मेरी जान बचा ली।

''खलीफा! मैं जीना नहीं चाहता। मैंने अपनी निर्दोष पत्नी की हत्या कर डाली। मैं बहुत बड़ा पापी हूँ। आप जल्लाद से कहकर मुझे फाँसी पर चढ़ा दीजिए।''

खलीफा ने पूरी कहानी सुनने के बाद कहा, ''युवक! मैं तुम्हें फाँसी नहीं देना चाहता, क्योंकि तुम गुनाहगार नहीं हो। असली गुनाहगार तो वह गुलाम है, जिसने तुम्हारे मन में संदेह का बीज बोया।''

खलीफा ज़फर से बोले, ''ज़फर, जाओ और तुम उस गुलाम को ढूँढ़कर लाओ। मैं तुम्हें तीन दिन का वक्त देता हूँ। यदि तुम उसे तीन दिन में ढूँढ़कर नहीं ला सके तो मैं चौथे दिन तुम्हें फाँसी पर चढ़ा दूँगा।''

ज़फर की समझ में कुछ नहीं आया। उसने सोचा, 'मैं उस दास को कहाँ ढूँढू? उसे ढूँढ़ना कोई आसान काम नहीं है। सब कुछ अल्लाह के हाथ में है। फिर चाहे वह मुझे जिंदगी दे या मौत।'

ये सोचकर ज़फर ने स्वयं को घर की चारदीवारी में बंद कर लिया। वह गुलाम को ढूँढ़ने के लिए कहीं नहीं गया। तीन दिन इसी तरह बीत गए। चौथे दिन वह खलीफा के फरमान की प्रतीक्षा करने लगा। वह दुखी व उदास बैठा हुआ था। तभी उसकी नज़र अपने घर में काम करनेवाली नौकरानी पर पड़ी। उसने अपनी



जेब में कुछ रखा हुआ था।

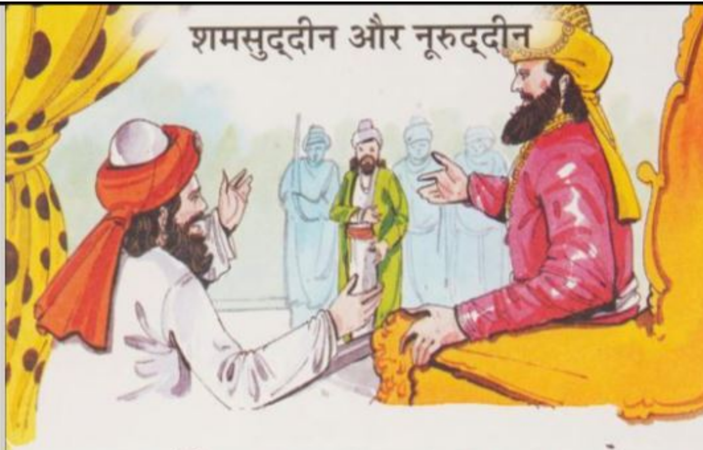
ज़फर ने उससे पूछा, ''तुम्हारी जेब में क्या है?''

वह बोली, ''जी, सेब।'' ये कहकर उसने अपनी जेब से सेब बाहर निकाल लिया। यह वही सेब था, जिसे गुलाम ने चुराया था। ज़फर सेब को पहचान गया। वह खुशी के मारे उछल पड़ा। फ़िर ज़फर ने नौकरानी से गुलाम के घर का पता पूछा। नौकरानी ने पता बता दिया। ज़फर एक सिपाही को लेकर गुलाम के घर गया और उसे पकड़कर खलीफा के सम्मुख पेश किया।

गुलाम ने खलीफा को सेब प्राप्त करने की पूरी घटना बता दी। खलीफा ने कहा, ''बेवकूफ गुलाम! तुम नहीं जानते कि तुम्हारी बेवकूफी के कारण इस युवक को कितनी बड़ी सजा भुगतनी पड़ी है। इसका सब कुछ बर्बाद हो गया। तुमने बिना विचारे जो काम किया है, तुम्हें इसकी सजा अवश्य मिलेगी। जिससे फिर कभी कोई इस तरह की भूल करने का साहस नहीं करेगा।''

ये कहकर राजा ने उसे फाँसी की सजा सुनाई।

शमसुद्दीन और नूरुद्दीन



बहुत समय पहले मिस्र पर एक सुल्तान शासन करता था। वह एक प्रजापालक सुल्तान था। वह विद्वानों का बहुत सम्मान करता था। उसने राज-काज को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक बुद्धिमान वज़ीर नियुक्त किया हुआ था। वज़ीर की गिनती देश के प्रमुख विद्वानों में होती थी। वज़ीर के दो पुत्र थे। वे दोनों बहुत सुंदर एवं आकर्षक थे। उनकी सुंदरता का कोई जोड़ नहीं था। उनका नाम शमसुद्दीन और नूरुद्दीन था। शमसुद्दीन बड़ा और नूरुद्दीन छोटा था। नूरुद्दीन अपने बड़े भाई शमसुद्दीन से भी अधिक सुंदर था। उसकी खूबसूरती को देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे। उसकी खूबसूरती रचनाकारों को नई-नई रचनाओं को रचने की प्रेरणा देती थी।

एक दिन अचानक वज़ीर की मौत हो गई। सुल्तान ने वज़ीर की मौत के बाद शमसुद्दीन और नूरुद्दीन को अपना वज़ीर नियुक्त किया और कहा, ''मुझे पूरा विश्वास है कि तुम दोनों अपने पिता की तरह ही अच्छे वज़ीर साबित होगे। तुम दोनों बारी-बारी से एक-एक हफ्ते वज़ीर के पद पर अपने दायित्व का निर्वहन करोगे।''

दोनों भाइयों ने वज़ीर के पद पर अपना कार्य करना शुरू किया। दोनों को समान

अधिकार प्राप्त थे और रहने के लिए एक भव्य महल।

सुल्तान जब कोई यात्रा करते तो दोनों भाइयों में से एक भाई हमेशा उनके साथ होता। दोनों सुल्तान की छत्रछाया में जीवन का आनंद ले रहे थे। एक दिन सुल्तान ने शमसुद्दीन से कहा, ''मैं एक लंबी यात्रा के लिए जाना चाहता हूँ। तुम्हें मेरे साथ यात्रा पर चलना है। जाओ और घर जाकर यात्रा की तैयारियाँ करो।''

शमसुद्दीन घर गया और नूरुद्दीन से कहा, ''नूरुद्दीन! मैं सुल्तान के साथ लंबी यात्रा पर जा रहा हूँ। मेरी इच्छा है कि हम दोनों सगी बहनों से शादी करें।''

शमसुद्दीन बोला, ''नूरुद्दीन! मैं ये बात इसलिए कह रहा हूँ, क्योंकि मैंने बहुत आगे की सोच रखी है। पर शायद तुम्हें सुनकर थोड़ा अजीब लगे।''

''भाईजान! आप संकोच क्यों कर रहे हैं? आपके मन में जो है, आप बेझिझक कहिए। आपकी इच्छा मानना मेरा धर्म है।'' नूरुद्दीन ने कहा।

शमसुद्दीन बोला, ''नूरुद्दीन! शादी के बाद यदि तुम्हारी पत्नी ने बेटे को और मेरी पत्नी ने बेटी को जन्म दिया तो हम दोनों अपने बेटे-बेटी की शादी एक-दूसरे से कर देंगे। मेरी हार्दिक इच्छा है कि मेरी बेटी तुम्हारे घर की बहू बने।''



नूरुद्दीन बोला, ''वाह भाईजान! आपने तो दिल खुश कर दिया। आपने बहुत अच्छा सोचा हुआ है। मुझे आपकी बेटी को अपनी बहू बनाने में बहुत खुशी होगी। अच्छा, आप अपनी बेटी की शादी में मेरे बेटे से मेहर में क्या लेंगे?''

शमसुद्दीन बोला, ''सिर्फ तीन हजार सोने की मोहरें और तीन बगीचे।''

नूरुद्दीन ने कहा, ''भाईजान! आप बहुत अधिक मेहर की माँग रहे हैं।

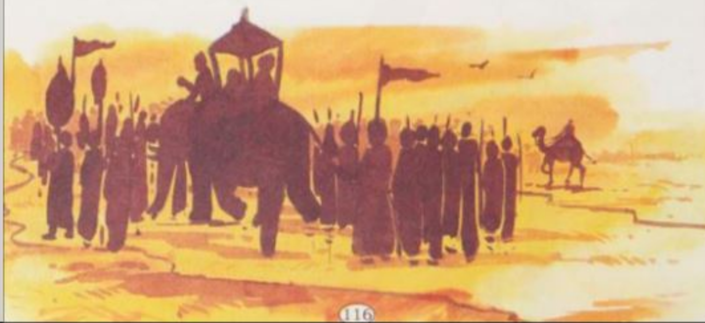
हम दोनों भाइयों की हैसियत समान है, फिर आप इतनी मेहर क्यों माँग रहे हैं?'' आप ये क्यों भूल रहे हैं कि मेरा पुत्र वंश का चिराग होने के कारण आपकी पुत्री से अधिक श्रेष्ठ है। लड़कियाँ कभी भी लड़कों का मुकाबला नहीं कर सकतीं।''

नरुद्दीन की बात सुनकर शमसुद्दीन के मन को भारी ठेस पहुँची। वह बोला, ''ये बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि तुम अपने भाई की बेटी को अपने बेटे के समक्ष तुच्छ मानते हो। तुम बहुत ही स्वार्थी और अशिष्ट हो। मुझे तुम्हें अपना भाई कहते हुए भी शर्म आती है। मैं अपनी बेटी की शादी तुम्हारे बेटे के साथ कभी नहीं करूँगा। फिर चाहे तुम मेरी बेटी के वज़न के बराबर सोना ही क्यों न दो। मेरी नज़रों के सामने से दूर हो जाओ। मैं तुमसे नफरत करता हूँ, सिर्फ नफरत।''

नूरुद्दीन को अपने भाई की फटकार सुनकर अपनी बेइज़्ज़ती महसूस हुई। वह अपमान की आग में जलता हुआ चिल्लाकर बोला, ''तुम्हारी बेटी को अपनी बहू बनाने से अच्छा है कि मेरा बेटा कुँआरा ही रहे। जितनी तुम मुझसे नफरत करते हो, उससे कई गुना अधिक नफरत मैं तुमसे और तुम्हारी बेटी से करता हूँ।''

शमसुद्दीन बोला, ''मैं तुमसे यात्रा से लौटकर निपटूँगा।'' ये कहकर वह अपने कमरे में चला गया। दोनों भाई गुस्से से तमतमाए हुए थे। उस दिन दोनों ने पहली बार साथ में खाना नहीं खाया और दोनों अलग-अलग कमरों में सोए। अगले दिन सुबह शमसुद्दीन के सुल्तान साथ यात्रा पर निकल पड़ा।

नूरुद्दीन सारी रात सो नहीं पाया। वह अपमान की आग में जल रहा था। सुबह





भी उसके कानों में अपने भाई के धमकी भरे शब्द गूँज रहे थे। इसके बाद उसने कुछ सोचा और फिर उसने शहर छोड़ने का निर्णय लिया। उसने कुछ सोने की मोहरें लीं और अपने नौकरों व गुलामों से कहा, ''मैं तीन रातों के लिए शहर से बाहर जा रहा हूँ। मेरा आदेश है कि तुम लोग न तो मेरे साथ आओगे और न ही मेरा पीछा करोगे।''

ये कहकर वह अपने घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा। पूरे दिन यात्रा करने के बाद वह एक नगर में पहुँचा। उसने नगर में ही एक स्थान पर रात बिताने का निर्णय लिया। यहाँ उसने घोड़े को चरने के लिए खुला छोड़ दिया और खुद ज़मीन पर लेटकर आराम करने लगा। जल्दी ही उसे नींद आ गई। अगले दिन सुबह तड़के ही वह फिर यात्रा पर निकल पड़ा। वह बढ़ते-बढ़ते एलियो नगर में पहुँचा। उसने वहाँ पर एक सराय में शरण ली और तीन दिन तक वहीं पर रहा।

तीन दिन बाद वह फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। यात्रा करते हुए वह बसरा शहर पहुँचा। उसे बसरा पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी। वह वहाँ एक सराय में ठहरा और सराय के द्वारपाल को अपना घोड़ा बाँधने के लिए सौंप दिया। द्वारपाल ने घोड़े को सराय के अस्तबल में बाँध दिया। उस समय सराय का मालिक बसरा का वज़ीर था। जब वज़ीर ने अस्तबल में नूरुद्दीन का घोड़ा देखा तो उसने सोचा, 'घोड़ा उत्तम नस्ल का लगता है। ये घोड़ा राजकुमार की सवारी के लिए ठीक रहेगा।'



वज़ीर ने अपने एक नौकर को बुलाकर

पूछा, "ये सुंदर घोड़ा किसका है?"

नौकर ने कहा, "मालिक, ये घोड़ा एक सुंदर व आकर्षक दिखने वाले युवक का है। वह देखने में किसी धनी व्यापारी का बेटा लगता है।"

वज़ीर अपने नौकर की बात सुनकर घोड़े के मालिक से मिलने लिए व्याकुल हो उठा। वज़ीर तुरंत नूरुद्दीन से मिलने गया। नूरुद्दीन ने वज़ीर का स्वागत करते हुए कहा, "आप मुझसे मिलने आए, मैं तो धन्य हो गया।"

वज़ीर ने कहा, "हे सुंदर युवक! तुम यहाँ कैसे पँहुचे? तुम्हें देखकर तो लगता है कि तुम बहुत दूर से यहाँ आए हो?"

नूरुद्दीन बोला, "मेरे पिता भी आपकी तरह ही वज़ीर थे। वे काहिरा के वज़ीर थे। अब उनकी मृत्यु हो चुकी है। हम दो भाई हैं। मेरे बड़े भाई का नाम शमसुद्दीन है और मैं नूरुद्दीन हूँ।" ये कहकर उसने वज़ीर को अपनी पूरी कहानी सुना दी। वह बोला, "मैं सभी देशों का भ्रमण करना चाहता हूँ और जब तक मैं ये काम पूरा नहीं कर लूँगा, तब तक वापस नहीं लौटूँगा।"



वज़ीर बोला, "बेटा, इस तरह तो तुम पूरी जिंदगी घूमते ही रह जाओगे। देश-विदेश की यात्रा करने में जीवन का खतरा भी बना रहता है। तुम चाहो तो मेरे साथ रह सकते हो। यदि तुम मेरे मेहमान बनकर रहोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।"

नूरुद्दीन ने वज़ीर का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और अपने घोड़े पर सवार होकर वज़ीर के साथ उसके महल चला आया। वज़ीर ने नूरुद्दीन को मेहमानखाने में ठहराया और उसकी सभी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखा। धीरे-धीरे वज़ीर को नूरुद्दीन से गहरा लगाव हो गया।

एक दिन वज़ीर ने नूरुद्दीन से कहा, "बेटा! मैं खलीफा के बाद बसरा का सबसे धनी व्यक्ति हूँ। अल्लाह की रहमत से मेरे पास सब कुछ है। मेरी एक बेटी है। वह सुदंरता में तुम्हारे मुकाबले कमतर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि तुम उससे शादी कर लो। मैं तुम दोनों की शादी के बाद खलीफा से तुम्हें वज़ीर बनाने की दरख्वास्त करूँगा और स्वयं अल्लाह की इबादत में अपना जीवन व्यतीत करूँगा।"

नूरुद्दीन ने वज़ीर की बात मान ली। नूरुद्दीन के शादी के लिए तैयार हो जाने पर वज़ीर की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। वज़ीर ने शहर के धनी व्यापारियों और कुलीनों के सामने घोषणा करते हुए कहा, "मैं अपनी बेटी की शादी नूरुद्दीन के साथ करने जा रहा हूँ। नूरुद्दीन के पिता और मेरे बीच भाई का रिश्ता है। वे काहिरा के वज़ीर हैं। उन्होंने और मैंने तय किया था कि हम अपने बच्चों की शादी एक दूसरे के साथ कर देंगे। इसलिए मैं अपनी बेटी की शादी अपने भतीजे नूरुद्दीन के साथ करने जा रहा हूँ।"





वज़ीर ने ये बात इसलिए कही थी, ताकि कोई भी एक अजनबी के साथ अपनी बेटी की शादी करने पर उसके ऊपर अँगुली न उठा सके। सभी ने वज़ीर को बधाई दी। वज़ीर ने घर लौटकर काज़ी से शादी का शुभ दिन निकलवाया।

उधर जब शमसुद्दीन यात्रा से वापस आया तो महल में अपने छोटे भाई को न पाकर उसने नौकरों से उसके बारे में पूछताछ की। नौकरों ने उसे बताया कि उसके जाने के बाद नूरुद्दीन भी कहीं चला गया और उसने नौकरों को अपना पीछा न करने की हिदायत भी दी थी।

शमसुद्दीन को नूरुद्दीन के घर छोड़कर चले जाने पर बहुत दुख हुआ। उसने सोचा, 'मेरा भाई मेरे कारण ही घर छोड़कर चला गया है। मुझे उसे कटु शब्द नहीं बोलने चाहिए थे। अब मुझे उसे ढूँढ़कर वापस लाना होगा।'

ये सोचकर वह सीधे सुल्तान के पास गया। उसने सुल्तान को अपने और नूरुद्दीन के बीच हुई पूरी घटना से अवगत कराया। सुल्तान को पूरी बात जानकर बहुत दुख हुआ। सुल्तान ने तुरंत अपने सिपाहियों को नूरुद्दीन को ढूँढ़ने के लिए भेजा। परंतु नूरुद्दीन तो दूर देश के बसरा शहर में पहुँच चुका था। शमसुद्दीन को अपने भाई के मिल पाने की आस दूर-दूर तक नहीं दिख रही थी। इसी बीच शमसुद्दीन की शादी भी तय हो गई। संयोगवश, उसकी शादी की तिथि भी वही थी जो नूरुद्दीन की शादी की थी।

निश्चित दिन पर दोनों भाइयों का विवाह अलग-अलग स्थानों पर धूमधाम से



संपन्न हो गया। दोनों भाई एक-दूसरे के जीवन से बेखबर अपनी नई जिंदगियों में खुश थे।

कुछ समय बाद शमसुद्दीन के घर लड़की और नूरुद्दीन के घर लड़के का जन्म हुआ। संयोगवश, दोनों भाइयों के घर एक साथ ही बच्चों का जन्म हुआ था। नूरुद्दीन का बेटा चाँद की तरह बेहद सुंदर था।

नूरुद्दीन के ससुर ने बच्चे का नाम बदरूद्दीन रखा। 'बदर' का अर्थ होता है, 'पूरा चाँद।' बदरूद्दीन छह महीने का हुआ तो वज़ीर उसे और नूरुद्दीन को लेकर खलीफा के पास पहुँचा। खलीफा ने बदरूद्दीन के साथ-साथ उसके पिता नूरुद्दीन को भी ढेर सारा आशीर्वाद दिया और कहा, "मैं बहुत खुश हूँ। तुम्हें जो माँगना हो, माँग लो।"

वज़ीर बोला, "खलीफा! जैसा कि मैंने आपसे पहले कहा था कि नूरुद्दीन मेरे भाई का बेटा है। मेरा भाई काहिरा का वज़ीर है। हम दोनों भाइयों ने अपने बच्चों की शादी एक-दूसरे से करने का निश्चय किया था। इसलिए नूरुद्दीन मेरी बेटी से शादी करने के लिए यहाँ आया था। मैं चाहता हूँ कि आप मेरे दामाद नूरुद्दीन को मेरे स्थान पर वज़ीर नियुक्त कर लें। अब मेरी उम्र भी हो चली है।"

खलीफा ने वज़ीर की बात से सहमत होकर नूरुद्दीन को अपना वज़ीर नियुक्त



कर लिया। इसके बाद नूरुद्दीन और वज़ीर खलीफा का शुक्रिया अदा कर बदरूद्दीन को लेकर घर आ गए। वे दोनों बहुत खुश थे और इस बच्चे के जन्म को बहुत शुभ मान रहे थे।

नूरुद्दीन बसरा का वज़ीर हो गया था। खलीफा ने नूरुद्दीन को सम्मान देते हुए अपने सिंहासन के बाईं ओर बैठाया। नूरुद्दीन किसी भी समस्या का समाधान चुटकी बजाते कर देता था। खलीफा उसकी बुद्धिमानी और चातुर्य से बहुत प्रसन्न थे। वे कोई निर्णय नूरुद्दीन से पूछे बिना नहीं लेते थे। नूरुद्दीन थोड़े ही समय में बहुत अधिक धनवान हो गया। उसके पास नावों का एक पूरा जखीरा था, जिन्हें वह समुद्री यात्राओं पर जाने वाले व्यक्तियों को किराये पर देता था। इधर उसके वृद्ध ससुर का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया।

नूरुद्दीन ने अपने बेटे की शिक्षा पर ध्यान देना शुरू किया। वह चाहता था कि उसका बेटा सभी कलाओं में पारंगत हो और वह विद्वान व्यक्ति बने। इसलिए उसने अपने बेटे को शिक्षा देने के लिए बसरा के सबसे योग्य शिक्षक को नियुक्त किया। धीरे-धीरे बदरूद्दीन बड़ा होने लगा। जब वह युवास्था में पहुँचा तो उसकी सुंदरता और भी निखर आई थी। एक दिन उसके पिता उसे अपने साथ खलीफा के पास ले गए। जब वह रास्ते से गुज़र रहा था तो लोग उसकी मनोहारी छवि पर मुग्ध होकर उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

महल पहुँचकर दोनों ने झुककर खलीफा का अभिवादन किया। बदरूद्दीन को देखकर खलीफा बहुत खुश हुए और बोले, ''नूरुद्दीन! तुमने अपने बेटे को महल लाकर बहुत अच्छा किया। मुझे इसे देखकर बहुत खुशी हुई। मैं चाहता हूँ कि तुम उसे प्रतिदिन महल लेकर आओ। मैं प्रतिदिन इसे देखना चाहता हूँ।''

नूरुद्दीन ने कहा, ''जैसी आपकी आज्ञा।'' नूरुद्दीन खलीफा की आज्ञानुसार अपने बेटे बदरूद्दीन को रोज खलीफा के पास ले जाने लगा। इसी प्रकार समय व्यतीत होता गया। बदरूद्दीन बीस वर्ष का युवा हो गया। उधर शमसुद्दीन की बेटी भी फूल-सी खिलकर एक सुंदर युवती हो चुकी थी।

एक दिन अचानक बदरूद्दीन के पिता नूरुद्दीन की तबीयत खराब हो गई। कई वैद्य, हकीमों ने इलाज किया, परंतु नूरुद्दीन के स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ। उसका अंत समय निकट आ गया था। उसने अपने बेटे बदरूद्दीन को अपने पास बुलाया और कहा, ''बेटा, मेरा अंत निकट आ गया है, इसलिए मैं तुम्हें कुछ बताना चाहता हूँ। मेरा एक बड़ा भाई है, उसका नाम शमसुद्दीन है। वह काहिरा का वज़ीर है। हम दोनों भाइयों में बहुत प्रेम था। बस हम दोनों भाइयों में थोड़ी-सी तू-तू, मैं-मैं हो गई और मैंने घर छोड़ दिया।'' ये कहकर नरुद्दीन ने एक पत्र बदरूद्दीन की तरफ बढ़ा दिया।



फिर वह बोला, ''बेटा, ये पत्र मेरे भाई शमसुद्दीन तक पहुँचा देना। मैंने पत्र में सब कुछ लिख दिया है। बेटा, मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम हमेशा सोच-समझकर बोलना। अपशब्द बोलने से बेहतर चुप रहना होता है। बुरी आदतों से दूर

रहना। ये बुरी आदतें व्यक्ति के पतन का कारण बनती हैं। हमेशा दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना। कभी भी किसी को परेशान मत करना।''

ये कहते-कहते नूरुद्दीन की सांस थम गई और उसने सदा के लिए आँखें मूँद लीं। नूरुद्दीन की मौत से सभी बसरावासी दुखी थे। खलीफा भी बदरूद्दीन को सांत्वना देने पहुँचे और कहा, ''हमें नूरुद्दीन के इतंकाल का भारी दुख है। उसके इंतकाल से हमने एक बुद्धिमान वज़ीर खो दिया। परंतु होनी को कौन टाल सकता है। तुम धैर्य रखो और स्वयं को संभालो।''

बदरूद्दीन इस दुखद घटना के बाद स्वयं को खलीफा के समक्ष प्रस्तुत नहीं कर सका। वह शोकाकुल होकर अपने कर्तव्य भी भूल गया।

बदरूद्दीन के दरबार में उपस्थित न होने पर खलीफा को बहुत क्रोध आया और उन्होंने किसी दूसरे व्यक्ति को वज़ीर नियुक्त कर दिया। उन्होंने वज़ीर को आदेश दिया, ''बदरूद्दीन की सारी जमीन-जायदाद, धन-दौलत जब्त कर लो। उसने हमारी आज्ञा का उल्लंघन किया है। वह हमारे समक्ष उपस्थित नहीं हुआ।''

नए वज़ीर ने खलीफा के आदेश का पालन करते हुए तुरंत बदरूद्दीन के घर की ओर रूख किया। जब वज़ीर रास्ते में ही था कि उसके एक गुलाम ने इस बात की सूचना चुपके से बदरूद्दीन को जाकर दे दी। उसने बदरूद्दीन का अभिवादन करते हुए कहा, ''मेरे आका! आप ये शहर छोड़कर चले जाइए। यहाँ आपकी



जान को खतरा है।''

बदरूद्दीन ने चौंकते हुए पूछा, ''तुम क्या कह रहे हो, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। आखिर बात क्या है?''

गुलाम बोला, ''आपके बहुत दिनों तक दरबार में खलीफा के सम्मुख उपस्थित न होने पर खलीफा ने गुस्से में आकर एक नया वज़ीर नियुक्त कर लिया और उसे आपकी सारी धन-संपत्ति जब्त करने का आदेश दिया है। नया वज़ीर बहुत ही क्रूर है। उससे आपकी जान को भी ख़तरा है। कृपा करके आप यहाँ से चले जाइए।''

गुलाम की बात सुनकर बदरूद्दीन चकित रह गया। उसने तुरंत अपने चेहरे को एक कपड़े से ढंका और शहर से बाहर निकल गया। वह चलते-चलते शहर की सीमा पर बने अपने पिता के मकबरे पर पहुँचा और बहुत देर तक वहाँ बैठा रहा। बदरूद्दीन अपने पुराने दिन याद करके रोने लगा। वह रोते-रोते अपने पिता की कब्र के ऊपर ही सो गया।

रात घिर आई थी। चाँद की रोशनी में उसके मुख से अद्भुत सौंदर्य बिखर रहा था। परंतु उसकी सुंदरता को देखकर प्रशंसा करने वाला वहाँ कोई नहीं था, सिवाय जिन्न और जिनिया



के।

वे दोनों बदरूद्दीन की सुंदरता को एकटक निहार रहे थे। जिनिया को जिन्न रास्ते में मिला था। जिन्न मिस्र और काहिरा से होता हुआ आ रहा था। जिनिया ही जिन्न को बदरूद्दीन की मनोहारी छवि दिखाने के लिए लेकर आई थी। जिनिया जिन्न से बोली, ''क्या तुमने कभी इतना सुंदर युवक देखा है। सच-सच बताना।''



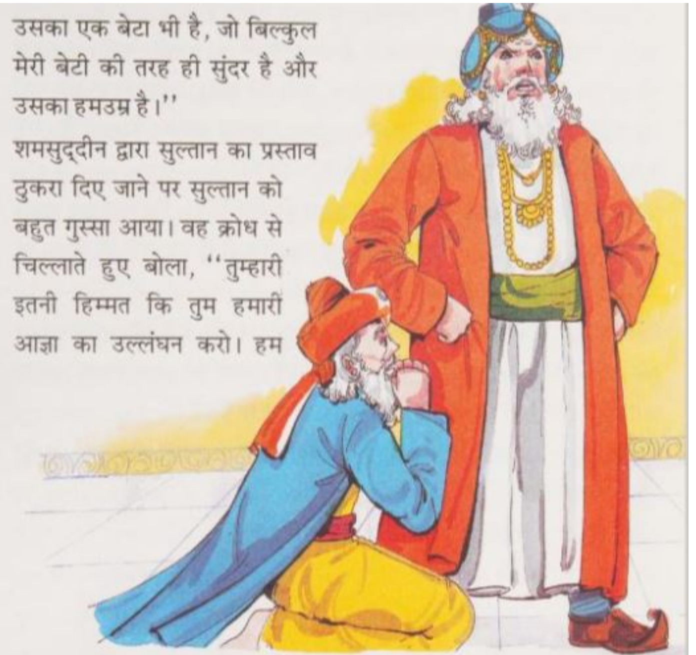
जिन्न बोला, ''बहन, मैंने आज सुबह ही इस युवक की तरह सुंदर एक युवती देखी है। उसकी सुंदरता अनुपम है। मैं सच कह रहा हूँ। सुलेमान की कसम।''

जिनिया बोली, ''तुमने ऐसी सुंदर युवती कहाँ देखी?''

जिन्न बोला, ''मैंने मिस्र की धरती पर काहिरा शहर में उसे देखा। वह वज़ीर शमसुद्दीन की बेटी है। उसकी सुंदरता अद्वितीय है। जब सुल्तान के कानों तक उसकी सुंदरता की बात पहुँची तो उन्होंने शमसुद्दीन को अपने महल बुलवा भेजा और कहा, ''वज़ीर, मैं तुम्हारी बेटी से शादी करना चाहता हूँ।'' ये सुनकर वज़ीर ने सुल्तान के पैरों पर गिरते हुए कहा, ''सुल्तान! मैं आपकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस नहीं करता, परंतु मैं अपने वचन से बँधा हुआ हूँ। मैंने अपने छोटे भाई से वादा किया था कि मैं उसके बेटे से अपनी बेटी की शादी करूँगा। इसलिए मैं अपना वचन नहीं तोड़ सकता। आप तो जानते ही हैं कि मेरा भाई एक छोटे से झगड़े के कारण घर छोड़कर चला गया था। मुझे मालूम हुआ है कि वह बसरा में वज़ीर था और अभी कुछ समय पहले उसका इंतकाल हो गया।

उसका एक बेटा भी है, जो बिल्कुल मेरी बेटी की तरह ही सुंदर है और उसका हमउम्र है।''

शमसुद्दीन द्वारा सुल्तान का प्रस्ताव ठुकरा दिए जाने पर सुल्तान को बहुत गुस्सा आया। वह क्रोध से चिल्लाते हुए बोला, ''तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम हमारी आज्ञा का उल्लंघन करो। हम



तुम्हारी बेटी से शादी करके तुम्हें सम्मान दे रहे थे। परंतु तुम और तुम्हारी बेटी इस सम्मान के काबिल ही नहीं हो। तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है, इसलिए तुम्हें इसका दंड भुगतना ही पड़ेगा। मैं तुम्हारी बेटी की शादी अपने एक नौकर से करवाऊँगा और तुम्हें मिट्टी में मिला दूँगा।'' ये सुनकर शमसुद्दीन स्तब्ध रह गया। वह सुल्तान के पैरों पर गिरकर गिड़गिड़ाते हुए बोला, ''सुल्तान! मुझे इतनी भयानक सजा मत दीजिए। मेरी बेटी पर रहम कीजिए।'' परंतु सुल्तान पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

सुल्तान ने अपने अस्तबल में काम करने वाले एक गुलाम से शमसुद्दीन की बेटी की शादी तय कर दी। वह गुलाम कुबड़ा और बहुत ही भद्दा था। उसे देखकर

अच्छा खासा व्यक्ति डर जाता। सुल्तान ने अपने गुलाम से कह दिया कि आज ही उसकी शादी वज़ीर की खूबसूरत बेटी से होगी। शादी का समारोह वज़ीर के घर में होगा। जब शादी की तैयारियाँ चल रही थीं, तभी मैंने काहिरा छोड़ दिया और यहाँ आ पहुँचा। तुम्हें क्या बताऊँ कि वह कुबड़ा कितना भयंकर दिखता है। वह शमसुद्दीन की बेटी के योग्य नहीं है। बेचारी लड़की!''

ये सुनकर जिनिया बोली, ''मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि कोई इस युवक जितना सुंदर भी हो सकता है। परंतु जब तुम कह रहे हो तो यह सही ही होगा। पर ये बताओ कि अब उस लड़की का क्या होगा?''

जिन्न बोला, ''मुझे तो इस युवक और शमसुद्दीन की बेटी को देखकर ऐसा लगता है, जैसे ये दोनों एक-दूसरे के लिए बने हैं। चलो हम इस युवक को लेकर काहिरा चलते हैं और वहीं पर दोनों का मिलाप करवा देते हैं।''

जिनिया जिन्न की बात सुनकर बोली, ''मैं भी यही सोच रही थी। तुमने तो मेरे मुँह की बात छीन ली।''

फिर दोनों बदरूद्दीन को उठाकर वायुमार्ग से काहिरा ले गए। वहाँ पहुँचकर उन्होंने बदरूद्दीन को जगाया। बदरूद्दीन ने जब अपनी आँखें खोलीं तो स्वयं को एक नए स्थान पर पाया। वह चकित होकर इधर-उधर देखने लगा। उसके मुँह से निकला, ''मैं कहाँ हूँ? मेरे अब्बा का मकबरा कहाँ गया?''

वह परेशान हो गया था। तब



उसके सामने जिन्न और जिनिया प्रकट हुए और बोले, ''ये काहिरा शहर है। हम तुम्हें बसरा से उठाकर यहाँ लाए हैं।''

फिर उन्होंने बदरूद्दीन को सुंदर-सुंदर वस्त्राभूषण देते हुए कहा, ''ये कपड़े पहन लो। तुम्हें एक शादी के समारोह में सम्मिलित होना है। तुम समारोह में भद्दे दूल्हे के साथ खड़े होना और नृत्यांगनाओ वे सेविकाओं पर पैसे लुटाना। बस तुम्हें अपनी जेब में हाथ डालना है। पैसे तुम्हारी जेब में अपने आप आ जाएंगे।''

बदरूद्दीन की समझ में कुछ नहीं आया। इसी बीच जिन्न ने उसे समारोह में पहुँचा दिया। समारोह में उपस्थित सभी लोग सिर्फ उसे ही देख रहे थे। सभी उसकी मनोहारी सुंदरता की प्रशंसा कर रहे थे। जब उसने सोने के सिक्कों की बरसात की तो लोग देखते ही रह गए। वे उसका सौंदर्य और धन-संपन्नता देखकर चकित थे।

विवाह कक्ष में सभी की नज़रें उसी पर ही टिकी थीं। कोई भी भद्दे व कुबड़े दूल्हे की तरफ ध्यान नहीं दे रहा था। सभी यही सोच रहे थे कि इस सुंदर दुल्हन की शादी भद्दे कुबड़े से न होकर इस सुंदर युवक के साथ ही होनी चाहिए।

जब विवाह स्थल पर दुल्हन आई तो बदरूद्दीन उसे देखकर उस पर मोहित हो गया। वह दुल्हन की पोशाक में अद्वितीय सुंदरी लग रही थी।

जब दुल्हन की नज़र बदरूद्दीन पर पड़ी तो वह मन-ही-मन



इबादत करने लगी, ''ऐ अल्लाह! मेरा पति ये सुंदर, आकर्षक युवक ही बने।''

तभी जिन्न ने अपने प्रभाव से वहाँ मौजूद सभी लोगों को बाहर निकलने के लिए प्रेरित किया। सभी लोग बाहर निकल आए। अब विवाह कक्ष में सिर्फ दुल्हा-दुल्हन और बदरूद्दीन रह गए।

कुबड़े ने बदरूद्दीन को कक्ष से बाहर जाने के लिए कहा परंतु बदरूद्दीन ने साफ मना कर दिया। कुबड़े ने अपने सेवकों को बुलाकर बदरूद्दीन को कक्ष से बाहर निकालने को कहा। तभी जिन्न प्रकट हुआ और बदरूद्दीन को कक्ष में ही रुकने के लिए बोला। जिन्न ने तरह-तरह की भयंकर आकृतियाँ बनाकर कुबड़े को भयभीत कर दिया। जिन्न भयानक स्वर में बोला, ''तुम यहाँ से चले जाओ, वरना मैं तुम्हें मार डालूँगा। तुमने इस लड़की से शादी करने की हिम्मत कैसे की?''

कुबड़ा डर के मारे बोला, ''मुझे सुल्तान ने कहा था। मैं शादी नहीं करना चाहता। मुझे छोड़ दो। मेरा जीवन बख्श दो।''

जिन्न बोला, ''मैं तुझे एक ही शर्त पर छोड़ूँगा। यदि तू ये स्थान छोड़कर जाने का वादा करे। और हाँ, अगर यह सब किसी को पता चला तो मैं तुझे मार डालूँगा। यहाँ से निकलकर अपना मुँह मत खोलना।''

कुबड़े ने वादा किया और वहाँ से भाग निकला। कुबड़े के जाने के बाद बदरूद्दीन ने दुल्हन को विश्वास दिलाते हुए कहा, ''मैं ही तुम्हारा असली दूल्हा हूँ। दुष्ट कुबड़ा दूल्हा बना बैठा था। वह तो हमें रास्ते में मिला था।''

दुल्हन को बदरूद्दीन की बातों पर विश्वास हो गया। वह भद्दे कुबड़े के स्थान पर सुंदर और आकर्षक युवक को अपने पति के रूप में पाकर बहुत खुश हो गई।

रात के समय जब वे दोनों सोये हुए थे तो जिन्न और जिनिया ने आपस में विचार-विमर्श करते हुए कहा, ''हमें इस युवक को फिर से बसरा छोड़ आना चाहिए। इसे इन भव्य कपड़ों में न ले जाकर साधारण कपड़ों में वहाँ ले जाना चाहिए।''

फिर उन्होंने उसके कपड़े बदले और वे दोनों बदरूद्दीन को लेकर बसरा की ओर चल पड़े। परंतु सितारों की रोशनी समाप्त होते ही जिन्न अदृश्य हो गया और





जिनिया अकेले बदरूद्दीन को बसरा तक ले जाने में असमर्थ थी। उसकी शक्ति भी धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही थी। उसने बदरूद्दीन को सीरिया की राजधानी दमिश्क के प्रवेश द्वार पर छोड़ दिया और स्वयं अनजाने गंतव्य की ओर चली गई। सुबह जब दमिश्क के चौकीदार ने शहर का मुख्य प्रवेश द्वारा खोला तो वह एक अनजान सुंदर युवक को वहाँ पर बेसुध सोया देखकर चकित रह गया। धीरे-धीरे वहाँ पर काफी भीड़ इकट्ठी हो गई।

जब बदरूद्दीन नींद से जागा तो अपने चारों तरफ भीड़ इकट्ठी देखकर उसे बड़ी हैरानी हुई। उसने अपने आस-पास देखा। फिर उसने पूछा, "मैं कहाँ हूँ? आप सभी लोग मुझे घेरकर क्यों खड़े हैं? कृपा करके मुझे बताइए।"

इस पर चौकीदार बोला, "जब मैंने सुबह शहर का मुख्य प्रवेश द्वार खोला तो तुम्हें यहाँ पर सोते हुए पाया। तुम इस समय सीरिया की राजधानी दमिश्क में हो।"

बदरूद्दीन बोला, "दमिश्क? मैं तो रात को काहिरा में सोया था, फिर दमिश्क कैसे पहुँच गया?"

जब लोगों ने उसकी बात सुनी तो उन्होंने सोचा कि वह कोई पागल है। धीरे-धीरे वहाँ से भीड़ हटने लगी। बदरूद्दीन लोगों को अपनी बात पर विश्वास नहीं दिला पा रहा था। वह दमिष्क में घूमते-घूमते एक हलवाई की दुकान पर पहुँचा।



उसने हलवाई से कुछ खाने को माँगा। हलवाई उसका सौन्दर्य देखकर उस पर मुग्ध हो गया। उसे लगा जैसे वह उस युवक को वर्षों से जानता हो।

हलवाई ने उससे पूछा, "तुम कौन हो और यहाँ कैसे पहुँचे?"

इस पर बदरूद्दीन ने हलवाई को अपनी पूरी कहानी सुना दी। हलवाई ने उसे अपनी कहानी संभालकर रखने को कहा। वह बोला, "तुम्हारी कहानी है ही ऐसी, जिस पर कोई भी व्यक्ति सरलतापूर्वक विश्वास नहीं करेगा। इसमें लोगों की कोई गलती नहीं है।"

बदरूद्दीन ने हलवाई को विश्वास दिलाने की बहुत कोशिश की, परंतु हलवाई उसकी बात को मजाक ही समझता रहा। फिर हलवाई बदरूद्दीन से बोला, "मेरी कोई संतान नहीं है। अगर तुम चाहो तो मेरे साथ रह सकते हो। मैं तुम्हें अपने पुत्र के रूप में अपनाना चाहता हूँ।" बदरूद्दीन हलवाई के साथ उसके घर आ गया। सभी लोग उसे हलवाई के दत्तक पुत्र के रूप में जानने लगे। उसकी सुंदरता के चर्चे पूरे शहर में थे। लोग उसे देखने के लिए दूर-दूर से आते थे। हलवाई उससे बहुत प्रेम करता था और उसे बिल्कुल अपने बेटे की तरह रखता था। उधर सुबह होने पर जब शमसुद्दीन की पुत्री उठी तो अपने पति को न पाकर चकित रह गई। उसने सोचा कि उसका पति किसी आवश्यक काम से बाहर गया होगा और थोड़ी देर में लौट आएगा। ये सोचकर वह अपने पति का इंतजार करने लगी। परंतु जब बहुत देर



हो गई और उसका पति नहीं लौटा तो वह चिंतित हो गई। वह अपने पिता के पास जाकर बोली, ''पिताजी! हमें सुल्तान का शुक्रिया अदा करना चाहिए कि उन्होंने मेरे लिए एक सुंदर एवं आकर्षक युवक का चुनाव किया। मैं इतना सुंदर पति पाकर बहुत खुश हूँ। परंतु सुबह से मेरे पति गायब हैं। मुझे उनकी बहुत चिंता हो रही है।''

शमसुद्दीन अपनी बेटी की ओर देखकर बोला, ''तुम क्या कह रही हो? लगता है, सदमें से तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। तुम्हारा दूल्हा तो एक भद्दा कुबड़ा है और तुम उसे सुंदर बता रही हो। तुम्हें क्या हो गया है? मैं तुम्हारी तकलीफ समझता हूँ बेटी, परंतु.....।''

अपने पि.ा की बातें सुनकर वह खिल-खिलाकर हँस पड़ी। वह बोली, ''पिताजी, आप दुखी मत होइए। मेरा दूल्हा कुबड़ा नहीं, बल्कि एक सुंदर, आकर्षक युवक है। कुबड़ा तो मेरा दूल्हा होने का नाटक कर रहा था। ये सिर्फ मजाक था और कुछ नहीं।''

शमसुद्दीन आश्चर्यपूर्वक अपनी बेटी को देखे जा रहा था। वह बोली, ''लगता है आपको अभी भी मेरी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा है। ठहरिए, मैं अभी आपको उनकी पगड़ी लाकर दिखाती हूँ।''



ये कहकर वह अपने कमरे से पगड़ी ले आई। पगड़ी देखकर शमसुद्दीन बोला, ''बेटी, तू सच कह रही है। ये पगड़ी शाही लगती है। इसका कपड़ा देखकर लगता है कि बसरा की बनी हुई है।''

पगड़ी की परख करते हुए

शमसुद्दीन को पगड़ी के अंदर से एक पत्र मिला। यह वही पत्र था जो नूरुद्दीन ने उसके नाम लिखा था। शमसुद्दीन ने वह पत्र खोला और पढ़ा। पत्र पढ़ते हुए उसकी आँखों से आँसू छलक आए। पूरा पत्र पढ़ लेने के बाद वह बोला, ''बेटी, ऊपरवाले का करिश्मा है कि तेरा पति कोई और नहीं, बल्कि मेरे भाई नरुद्दीन का बेटा है। उस ऊपरे वाले ने मेरे वचन की लाज रख ली। अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है।''

ये कहकर उसने पत्र को चूम लिया और पुरानी यादों को याद कर बहुत देर तक रोता रहा। उसके बाद वह सुल्तान के पास गया और उन्हें पूरी घटना कह सुनाई। सुल्तान ने इस घटना को शाही इतिहास में संजोने का निर्णय लिया।

अब शमसुद्दीन अपने भतीजे के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। परंतु वह नहीं लौटा। शादी के नौ महीने बाद उसकी बेटी ने एक लड़के को जन्म दिया। वह लड़का अपने माँ-बाप की तरह ही बहुत सुंदर था। शमसुद्दीन ने उसका नाम 'अजब' रखा। धीरे-धीरे अजब बड़ा होने लगा। शमसुद्दीन उसे बेहतर तालीम देना चाहता था। इसलिए उसने अजब को पढ़ने के लिए एक प्रसिद्ध शिक्षक के पास भेजना शुरू किया। वह चाहता था कि अजब सभी विद्याओं का ज्ञाता बने। अजब पढ़नें में तो अच्छा था, परंतु उसका अपने सहपाठियों के साथ व्यवहार अच्छा नहीं था। उसे वज़ीर का पुत्र होने पर बहुत घमंड था। वह आए दिन अपने सहपाठियों के साथ लड़ाई-झगड़ा करता रहता था।



एक बार उसके सहपाठियों ने



उसे सबक सिखाने का निर्णय लिया। उन्होंने योजना बनाई कि कल जब अजब पढ़ने के लिए आएगा तो वे कहेंगे कि वही बच्चा खेल खेलेगा जो अपने माता-पिता का नाम जानता होगा। जिसे अपने माता-पिता का नाम नहीं मालूम होगा, उसे खेल में सम्मिलित नहीं किया जाएगा। अजब ने तो अपने पिता को देखा भी नहीं है, वह उनका नाम भला कहाँ से जानेगा? और पिता का नाम न बता पाने की दशा में हम उसे अपने साथ नहीं खिलाएंगे।

अगले दिन जब अजब पढ़ने आया तो एक लड़के ने सारे बच्चों से कहा, ''आज हम एक खेल खेलेंगे। परंतु इस खेल में वही शामिल होगा जो अपने माता-पिता का नाम बता देगा।''

एक-एक कर सारे लड़कों ने अपने माता-पिता के नाम बताए। अजब की बारी आई तो उसने अपनी माँ का नाम बताने के बाद जब अपने पिता का नाम शमसुद्दीन बताया तो उसके दोस्तों ने इस पर आपत्ति जताते हुए कहा, ''शमसुद्दीन तुम्हारे पिता नहीं, बल्कि तुम्हारे नाना हैं। वे तुम्हारी माँ के पिता हैं। क्या तुम अपने पिता का नाम नहीं जानते? यदि तुम अपने पिता का नाम नहीं जानते तो तुम हमारे साथ नहीं खेल सकते।'' ये सुनकर अजब रोने लगा और रोते-रोते घर आ गया। वह सीधे अपने नाना के पास गया और उनसे शिकायत



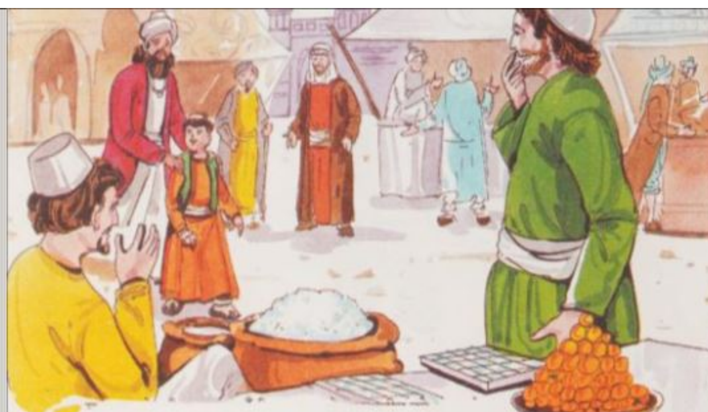
करते हुए बोला, ''मेरे दोस्तों ने मुझे अपने साथ खेलने से मना कर दिया क्योंकि मैं अपने पिता का नाम नहीं जानता हूँ। वे कहते हैं कि आप मेरे पिता नहीं नाना हैं। मेरी माँ के पिता।''

शमसुद्दीन ने सिर झुका लिया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह अजब के प्रश्न का क्या उत्तर दे। अपने नाना को खामोश देखकर अजब सीधे अपनी माँ के पास गया और बोला, ''माँ, मेरे दोस्तों ने आज मेरा अपमान किया। उन्होंने कहा कि वज़ीर मेरे पिता नहीं हैं। अब तुम ही बताओ कि मेरे पिता कौन हैं? मैंने ये सवाल वज़ीर से भी पूछा था, परंतु उन्होंने चुप्पी साध ली। मुझे सच जानना है।''

अजब का प्रश्न सुनकर वह पुरानी यादों में खो गई। उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। तभी शमसुद्दीन भी वहाँ आ गया। शमसुद्दीन की उपस्थिति में उसने अजब को पूरी घटना सुनाते हुए कहा, ''बेटा! तुम्हारे पिता मेरे लिए आज भी एक पहेली बने हुए हैं।''

उसके बाद शमसुद्दीन सुल्तान के पास गया और अपने दामाद को ढूँढ़ने के लिए बसरा जाने की इजाज़त माँगी। सुल्तान ने शमसुद्दीन को आज्ञा दे दी।

शमसुद्दीन कुछ सेवकों के साथ अपनी बेटी व नाती को लेकर बसरा के लिए निकल पड़ा। एक लंबी यात्रा के बाद वे दमिश्क पहुँचे। उन्होंने कुछ दिन दमिश्क में ही ठहरने का निर्णय लिया। वे लोग दमिश्क में विभिन्न जगहों पर घूमे। शमसुद्दीन जब भी दमिश्क भ्रमण पर निकलता, अजब भी उसके साथ होता।



अबज की सुंदरता से सभी दमिश्कवासी चकित थे। उन्होंने इतना अद्भुत सुंदर बच्चा पहले कभी नहीं देखा था। एक दिन अजब शमसुद्दीन को छोड़कर अकेले ही दमिश्क भ्रमण पर निकल पड़ा। उसके पीछे-पीछे एक सेवक भी हो चला।

संयोगवश, वह अपने पिता बदरूद्दीन की दुकान के बाहर खड़ा हो गया। हलवाई की मृत्यु के बाद बदरूद्दीन ही दुकान संभालता था। बदरूद्दीन ने जब अजब को देखा तो उसे अजब के प्रति एक अजीब-सा खिंचाव महसूस हुआ। वह अपनी दुकान से निकलकर बाहर आया और अजब के सामने खड़े होकर बोला, ''बेटा! पता नहीं मैं कौन से रिश्ते से तुम्हारी तरफ खिंचा चला आया। मैंने तुम्हें देखा और मेरे कदम खुद-ब-खुद तुम्हारी ओर बढ़ गए। यदि तुम मेरी दुकान में चलकर मेरी मेहमाननवाज़ी स्वीकार करोगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।''

अजब बदरूद्दीन के साथ उसकी दुकान में चला गया। बदरूद्दीन ने अजब को पीने के लिए शरबत और खाने के लिए मेवे दिए। बदरूद्दीन ने उससे पूछा, ''बेटा! तुम इस शहर में अजनबी जान पड़ते हो। तुम्हारा यहाँ कैसे आना हुआ?''

अजब ने कहा, ''मैं यहाँ अपने नाना और माँ के साथ आया हूँ। मैं अपने पिता को



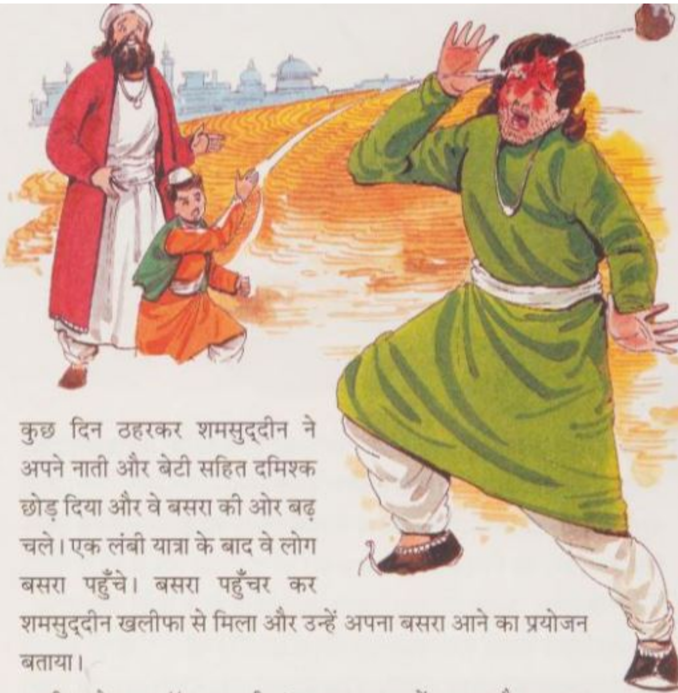
ढूँढ़ने के लिए निकला हूँ।'' ये कहकर वह उदास हो गया। फिर वह चुपचाप उठा और अपने सेवक के साथ दुकान से बाहर निकल आया।

अजब के जाते ही बदरूद्दीन को ऐसा महसूस हुआ, जैसे उसके शरीर से आत्मा निकल गई हो। वह स्वयं को नहीं रोक सका। वह तुरंत उठा और अजब के पीछे-पीछे चलने लगा। अजब जहाँ-जहाँ जाता, बदरूद्दीन उसके पीछे-पीछे चलता।

बदरूद्दीन को अपना पीछा करते देख सेवक अजब से बोला, ''आपने हलवाई की दुकान में जाकर अच्छा नहीं किया। अब देखिए, वह दुकानदार हमारे पीछे-पीछे आ रहा है। मुझे लगता है, ये अवश्य ही कोई दुष्ट व्यक्ति है जो आपको हानि पहुँचाना चाहता है।''

अजब गुस्से में पीछे मुड़ा और चिल्लाते हुए बोला, ''ऐ हलवाई, तुम हमारा पीछा क्यों कर रहे हो? जाओ, लौट जाओ। हमारे पीछे मत आओ।''

बदरूद्दीन ने कोई जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप अपना सिर झुकाकर खड़ा हो गया। बदरूद्दीन का अनोखा व्यवहार देखकर अजब को बहुत गुस्सा आया और उसने जमीन से पत्थर उठाकर बदरूद्दीन के सिर पर दे मारा। बदरूद्दीन के सिर से खून की धार बह निकली। बदरूद्दीन उसे बिना कुछ कहे चुपचाप वापस लौट गया। उसने अजब को दोषी न ठहराकर स्वयं को ही इस बात का दोषी माना।



कुछ दिन ठहरकर शमसुद्दीन ने अपने नाती और बेटी सहित दमिश्क छोड़ दिया और वे बसरा की ओर बढ़ चले। एक लंबी यात्रा के बाद वे लोग बसरा पहुँचे। बसरा पहुँचर कर शमसुद्दीन खलीफा से मिला और उन्हें अपना बसरा आने का प्रयोजन बताया।

खलीफा ने कहा, "शमसुद्दीन! तुम्हारा बसरा में स्वागत है। तुम्हारा भाई नूरुद्दीन हमारा वज़ीर था। परंतु कुछ साल पहले उसकी मृत्यु हो गई। उसका एक बेटा था। परंतु एक दिन अचानक न जाने वह कहाँ चला गया। उसके बारे में हमें कोई जानकारी नहीं है। हाँ, तुम्हारे भाई नूरुद्दीन की पत्नी अभी भी यहीं बसरा में रह रही है। यदि तुम चाहो तो मेरा एक आदमी तुम्हें उसके घर तक पहुँचा देगा।"

शमसुद्दीन ने कहा, "खलीफा! अगर आप मुझे मेरे भाई की पत्नी तक पहुँचा देंगे तो मैं आपका बड़ा एहसानमंद रहूँगा।"

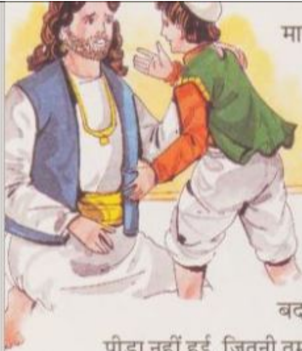
खलीफा ने अपने एक आदमी को शमसुद्दीन के साथ भेज दिया। शमसुद्दीन



अपनी बेटी और नाती के साथ नूरुद्दीन की पत्नी के घर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने नूरुद्दीन की पत्नी को पूरी घटना विस्तारपूर्वक बता दी। नूरुद्दीन की पत्नी अपनी बहू और पोते को देखकर बहुत खुश हुई और उन्हें गले लगा लिया।

शमसुद्दीन ने उसे अपने साथ काहिरा चलने के लिए कहा तो वह तैयार हो गई और उनके साथ काहिरा के लिए चल पड़ी। वापसी में वे लोग एक बार फिर दमिश्क में ठहरे। अजब के लिए दमिश्क अब नई जगह नहीं थी। वह पहले भी वहाँ आने के कारण उस स्थान से भलीभाँति परिचित था।

अजब अकेले ही घूमने के लिए निकल पड़ा। वह घूमते-घूमते फिर बदरूद्दीन की दुकान के पास जा पहुँचा। बदरूद्दीन दुकान के बाहर ही खड़ा था। उसने देखा कि बदरूद्दीन के माथे पर चोट का निशान है। ये निशान देखकर उसे अपनी करनी पर बहुत शर्मिंदगी महसूस हुई। वह कुछ कहता, इससे पहले ही बदरूद्दीन बोला, "बेटा! मैं तुमसे माफी माँगना चाहता हूँ। मैंने तुम्हारा पीछा कर तुम्हारी भावनाओं को आहत किया। परंतु न जाने उस दिन मुझे क्या हो गया था। मैं तुम्हारी ओर खिंचा चला गया। मैं तुम्हें हानि नहीं पहुँचाना चाहता था। मुझे



माफ कर दो।''

''आप माफी क्यों माँग रहे हैं? माफी तो मुझे आपसे माँगनी चाहिए। मैंने पत्थर मारकर आपको गहरी चोट पहुँचाई। उसका निशान अभी तक आपके माथे पर है। कृपा करके मुझे माफ कर दीजिए।'' अजब ने कहा।

बदरूद्दीन बोला, ''बेटा, मुझे इस चोट से इतनी पीड़ा नहीं हुई, जितनी तुम्हारी जुदाई से। यदि तुम मेरी दुकान पर चलकर मेरे साथ भोजन करोगे तो मैं समझूँगा कि तुमने मुझे माफ कर दिया।''

अजब खुशी-खुशी बदरूद्दीन के साथ उसकी दुकान पर गया। बदरूद्दीन ने अजब को खाने के लिए अनार के दानों से बनी मिठाई और पीने के लिए शरबत दिया। अजब ने बहुत ही चाव से वह मिठाई खाई। फिर वह बदरूद्दीन से विदा लेकर वापस चला गया।

अजब ने वापस लौटकर अपनी दादी से कहा, ''दादी, आज मैंने अनार के दानों से बनी स्वादिष्ट मिठाई खाई। वह मिठाई तुम्हारी बनाई मिठाई से अधिक स्वादिष्ट थी।''

दादी बोली, ''बेटा, सिर्फ तुम्हारे पिता ही मुझसे अधिक स्वादिष्ट मिठाई बना सकते हैं। मैं सोच नहीं सकती कि उसके अलावा भी कोई इतनी स्वादिष्ट मिठाई बना सकता है।''



यह सुनकर अजब बोला, ''दादी! मैं आपसे शर्त लगा सकता हूँ। मैं अभी हलवाई से मिठाई लेकर आता हूँ। आप स्वयं ही चखकर देख लेना।''

ये कहकर वह हलवाई की दुकान पर गया

और उससे बोला, ''मेरे लिए एक किलो स्वादिष्ट मिठाई बना दो। मैंने अपनी दादी से शर्त लगाई है कि तुम अनार के दानों से बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई बनाते हो। वे मेरी बात पर विश्वास ही नहीं कर रही हैं।''

बदरूद्दीन मुस्कुराते हुए बोला, ''मेरे नन्हें दोस्त, शर्त तुम ही जीतोगे। मैं अभी तुम्हारे लिए मिठाई बनाता हूँ।'' ये कहकर बदरूद्दीन ने जल्दी से मिठाई बनाकर अजब को दे दिया। अजब खुशी-खुशी मिठाई लेकर अपनी दादी के पास गया और बोला, ''दादी, ये लो मिठाई। इसे चखकर बताओ कि ये स्वादिष्ट है या नहीं।''

दादी ने मिठाई चखी तो वह तुरंत समझ गई कि मिठाई किसने बनाई है। वह खुशी के मारे चिल्लाते हुए बोली, ''ये मिठाई बनाने वाला और कोई नहीं, बल्कि तुम्हारे पिता हैं।''

तभी शमसुद्दीन और उसकी बेटी भी वहाँ आ गए। उसने उन दोनों को भी बताया, ''मेरा बेटा जिंदा है! वह यहीं इसी शहर में है। अजब को मिठाई खिलाने वाला और कोई नहीं बल्कि उसके पिता हैं।''

ये सुनकर शमसुद्दीन अजब को साथ लेकर तुरंत हलवाई की दुकान पर गया और बदरूद्दीन को पूरी घटना सुनाते हुए कहा, ''ये अजब तुम्हारा बेटा है।





तुम्हारी पत्नी और माँ भी इसी शहर में हैं। वे दोनों बेसब्री से तुम्हारा इंतजार कर रही हैं।''

बदरूद्दीन ने अजब का माथा चूमा और उसे अपनी गोद में उठाकर सीने से लगा लिया। इसके बाद वह अपनी माँ और पत्नी से मिलने गया। उसकी माँ और पत्नी उसे देखकर फूली नहीं समा रही थीं। उसकी माँ ने अपने बेटे का माथा चूमकर उसे गले से लगा लिया। फिर बदरूद्दीन ने भी अपनी पत्नी को गले से लगा लिया।

उसके बाद वे सभी खुशी-खुशी काहिरा लौट आए। मिस्र की राजधानी काहिरा लौटने के बाद शमसुद्दीन बदरूद्दीन को सुल्तान से मिलवाने ले गया। सुल्तान ने उन दोनों का स्वागत किया। सुल्तान ने बदरूद्दीन की बुद्धिमानी की परीक्षा ली। बदरूद्दीन सुल्तान की परीक्षा में खरा उतरा। सुल्तान ने उसे अपने दरबार में मुख्य अधिकारी नियुक्त कर दिया।

सुल्तान प्रत्येक मामले में उससे सलाह-मशविरा अवश्य करते थे। शीघ्र ही अपनी बुद्धिमानी व कार्य कुशलता के बल पर बदरूद्दीन ने उच्च स्थान हासिल कर लिया। वह अपने परिवार के साथ सम्मान व सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।